रा।जा।ब।द।ल



राजकमल प्रकाशन

दिल्ली ६ पटना ६

রাজাবদল — বিমল

©	विमल मित्र
प्रथम हिन्दी संस्करण	१९७०
प्रकाशक	राजकमल प्रकाशन प्रा० लि० ८ फ़ैज़ बाज़ार दिल्ली ६
मूल्य	७ ००
मुद्रक	शाहदरा प्रिंटिंग प्रेस के १८ नवीन शाहदरा दिल्ली ३२
आवरण	हरिप्रकाश त्यागी

महात्मा गाधी जन्मशतवार्षिकी

के उपलक्ष्य मे

श्रद्धाजलि



राजाबदल

राजाबदल

तुम अगर कभी भी बलरामपुर जाओ तो मैं रास्ता बतला सकता हूँ। श्यामबाजार के इस पचरास्ते से तुम्हें बस पकड़नी होगी। सब बसें बलरामपुर नहीं जातीं। लेकिन देखोगे कि बस कंडक्टर चिल्ला रहे हैं—इटिनडा घाट, इटिन्डा घाट

तो कोई चिल्ला रहा है, बारासात, बशीरघाट, टाकी—'

लेकिन जरा और आगे जाकर पाओगे एक जगह सड़क किनारे फुटपाथ के पास और भी बहुत सी बसों की भीड़ है। वहां भी लोगबाग, औरत मर्द, फेरीवाले और झाकवालों की भीड़ है। बसों के सिर पर गलत अंग्रेजी में लिखा है—बलरामपुर। बस की सूरत देखकर ही पता लग जाएगा कि यह बलरामपुर जाएगी। एक टिकट का बारह आना। हाँ तो बारह आने का टिकट लेने पर तुम्हें ठेठ बलरामपुर की गंज पहुँचा दिया जाएगा। गंज पहुंचकर देखोगे सामने ही मथुरा साहू की बड़ी दूकान है। दूकान पर आज भी वही पुराना साईन बोर्ड लगा है। साईन बोर्ड पर बड़े बड़े रंग बिरंग हरफों में लिखा है 'बलरामपुर वेराइटी स्टोर्स, प्रो० मथुरा साहू। बलरामपुर।' उस दूकान पर साबुन, तेल और दाल से लेकर पान सुपाड़ी, कत्था सब कुछ मिल जाएगा। और तो और हरिकेन लालटेन, टार्च बत्ती, बील कांटे और स्क्रू तक मिल जायेंगे।

और इसके ऊपर ही है इच्छामती नदी। इच्छामती नदी यहाँ काफी चौड़ी हो गयी है। इस पार से उस पार जाने के लिए नावें है। नाव में

बैठाकर उस पार जाते समय हो सकता है तुम्हें डर लगे। डूब जाने का डर लगेगा। साठ सत्तर यात्री भरकर मल्लाह लोग पतवार खेते इस पार उस पार आते जाते हैं। सिर्फ यात्री ही नहीं साथ में उन लोगों का सामान भी होता है। इस पार मथुरा साहू व करान्टी म्नोस से माल खरीदकर उस पार की दूकानों पर खुदरा भाव में बिकते हैं।

हाँ तो अगर साढ़े दस बजे की बस से वहाँ पहुँचोगे तो देखोगे बलरामपुर हाई स्कूल का घंटा ठीक वक्त पर टन्-टन् करके बज रहा है। एक मिनट इधर उधर होने की गुंजाइश नहीं है। उस ओर गौर भट्टा चार्य की नजर बड़ी कड़ी है। उसके बाद गंज के ठीक सामने से पूरब की ओर चलते जाओ। पक्की ईंटों से बंधी चौड़ी सड़क है। सड़क के दोनों ओर बगीचे लगे कई मकान हैं। पांच मकान पार करने के बाद बायां ओर देखना। देखोगे सामने ऊंची चहारदीवारी से घिरा एक मैदान है। और सड़क की ओर कोने पर लोहे की सलाख लगा एक बड़ा भारी फाटक है। उस फाटक के ऊपर एक बड़ा सा बोर्ड लगा है। बोर्ड पर बड़े बड़े हरफों में लिखा है बलरामपुर हाई स्कूल।

फाटक के पास ही बूढ़ा माली जनार्दन खड़ा रहता है। तुम्हें देखते ही जनार्दन फाटक खोल देगा। पूछेगा आप कहाँ से आ रहे हैं?

तुम कहोगे मैं पब्लिशर की दूकान से आ रहा हूँ—

स्कूल में किताब लगवानी है न?

तुम्हारे हाथ में किताबों का बंडल देखते ही जनार्दन तुम्हारा मत लब समझ जाएगा। जमाने से वह स्कूल में माली का काम करता आ रहा है। हर साल वह पब्लिशर्स के इन कनवेसरों को देखता आया है। स्कूल में लगवाने के लिए किताबों के बंडल लिए ये लोग आते हैं। इसके बाद जब नए साल की बुक लिस्ट छप जाती है तो ये लोग दिखलाई नहीं देते।

फिर साल भर तक ये लोग इस इलाके में नहीं आते।

हाँ तो तुम हैरान होकर पूछोगे, 'तुम्हें कैसे मालूम हुआ?'

जनार्दन जरा मुस्कराएगा। फिर कहेगा, 'आप हेडमास्टर साहब से जो मिलना चाहते हैं। हेडमास्टर साहब तो भवरजन बाबू हैं। भवरजन बाबू तो यह सब नही देखते। यह सब तो अपने गौर पडितजी देखते हैं।'

'गौर पडितजी ? ये कौन हैं ?'

जनार्दन कहेगा, 'ओह, तब लगता है आप नए आदमी है यही तो इस स्कूल में सब-कुछ हैं साहब ! आपने गौर मास्टर साहब का नाम नही सुना ? अरे तब आपको किताब नही लगन की। यह स्कूल असल में उन्हा का तो है—'

हाँ तो जनार्दन ने झूठ नही कहा। बलरामपुर में जब इस स्कूल की नींव पडी थी जनार्दन तब का आदमी है। तब बलरामपुर में स्कूल पाठशाला, टोल कुछ भी नही था। गौर पण्डितजी ने एक रोज जनार्दन को बुलाकर नौकरी दी थी।

जनार्दन को सारी बातें याद हैं। एक दिन रास्ते से गुजरते वक्त गौर पडितजी का जाते देखा। जनार्दन ने पैर छूकर प्रणाम किया था।

'कौन ? तुम कौन हो भाई ?'

'जी, मैं हूँ जनार्दन !'

'आह ! अच्छा अच्छा। तो भाई तुम कैसे हो ?'

जनार्दन ने कहा था 'जी अच्छा नही हूँ !'

'क्यों, अच्छे क्यो नही हो ? क्या हुआ तुम्हें ?'

जनार्दन ने कहा था, 'जी, साहजी की आढ़तवाली मेरी नौकरी छूट गयी है।'

सुनकर गौर मास्टर जस चौंक उठे। पूछा, नौकरी छूट गयी ?

क्यो छूट गयी ? तुमने क्या कसूर किया था ?

जी कसूर क्या करते ! दिन खराब आ गए, धंधे-पानी म मंदी आ गयी है इसीलिए नौकरी चली गयी।

ये सब बलरामपुर के आदियुग की बातें हैं। उन दिनो का बलराम-पुर ऐसा नही था। सडको पर बस नही चलती थी। अब की तरह बिजली की बत्तियाँ नही जलती थी। सदर की ओर इस तरह की पक्की सडक भी नही थी। बलरामपुर आज भी देहात है। लेकिन तब का बलरामपुर और भी देहात था। एक भी स्कूल था न पाठशाला। कोई सस्कृत नही जानता। कोई सस्कृत पढना ही नही चाहता। लोग अग्रेजी पढना चाहते हैं भूगोल पढना चाहते है इतिहास पढना चाहते है। सिर्फ सस्कृत कोई भी पढना नही चाहता।

गौर पडितजी ने कहा हा तो तुम्हे नौकरी करनी है जनादन ?'

सुनकर जनादन उछल पडा था। वह उठा कोई नौकरी है क्या हाथ म ? पडितजी लगवा दो न मरा बडा उपकार होगा। कोई भी काम हो चाहे जितनी तनख्वाह हो। सर छुपाने भर की जगह हो, मुझे और कुछ भी नही चाहिए—

हा तो जनादन का तभी से बलरामपुर हाई स्कूल म नौकरी मिल गयी। अभी तक पडितजी का स्कूल नही खुला था। मन ही मन तिकडम भिडा रहे थे। इतना बडा गाँव इतनी दूकानें इतनी बडी गज इतने लोगो का आना जाना है यहाँ एक प्राइमरी स्कूल या पाठशाला खुल जाए तो कितना अच्छा रहे।

जनादन ने पूछा स्कूल कब से खुलेगा पडितजी ?

गौर पडितजी ने कहा खुलेगा खुलेगा, जल्दी ही खुलेगा मौके की कोई जगह पाने ही पाठशाला शुरू कर दूगा।

मौके की जमीन मिलते मिलते दो साल निकल गए। जमीन कौन देने लगा। जमीन रहने पर देनी ही होगी ऐसी तो कोई बात नही है। पुरखो से फोकट म मिली जमीन, जिस पर इतने दिन का दखल है, ऐसे

ही दान-पण्य के लिए छोड दें ।

मथुरा साह ने गज की आढत से काफी पसा कमाया । नगद रुपए का कारोबार है । रुपया पसा गिनते गिनते दाहिने हाथ की पाच उगलियो मे ठेक पड गयी थी ।

उसने कहा, 'आप कौन हैं ?'

उन दिना गौर भट्टाचाय जी की उम्र कम थी । किसी भी तरह हार मानने को तैयार नही थे । सुबह से शाम तक भाग दौड करके रुपया इकटठा करते । एक तरह से उन्होने सबके आगे भिक्षा ही की उन दिनो ।

उन्होंने कहा, मेरा नाम गौरपद भट्टाचाय, काश्यनीय है, मैं इस बलरामपुर म ही रहता हूँ । दक्षिण पाडे मे '

'बलरामपुर में आप कितने दिनो से हैं ?'

लगभग एक साल हुए यहा आया हू ।'

'आजकल कर क्या रहे हैं ?'

लडका को पढाता हूँ ।'

'रह कहाँ रहे हैं ?

मथुरा साह ने तरह-तरह से पूछताछ की । मथुरा साह बूढे हो चले थे । आय कितनी है, कौन कौन है, बाल-बच्चे कितने हैं यह भी जान लिया ।

फिर कहा, 'आप पाठशाला तो खोलेंगे लेकिन आपका गुजारा कैसे होगा ?'

गौर पडितजी ने कहा 'मेरी पाठशाला म विद्यार्थियों का अभाव नही होगा साहजी । आप सब जाने-माने लोग हैं । आप लोगो की दया होने पर पाठशाला अवश्य जम जाएगी ।'

जरा रुककर फिर बोले मैं स्वय ब्राह्मण सतान हूँ । उपवास करने का मुझे अभ्यास है । न हुआ एक समय ही आहार करूँगा—

मथुरा साह जरा मुस्कराए । उन्होंने कहा, 'आप पडित आदमी

ठहर आप न हुआ उपवास कर लगे। लेकिन आपकी ब्राह्मणी ? य किस दु ख म उपवास करन लगी ? आपको उनकी ओर भी तो देखना पडेगा।

गौर पन्डितजी न कहा साहजी शास्त्रो म कहा है—मत्कर्मकृन्मत परमो मदभक्त सगवर्जित अर्थात जो परमात्मा का कम करत हैं अथवा ईश्वर क लिए कम करत है जो समस्त विषय और आसक्तियो स शून्य हैं किसी स जिनकी शत्रुता नही है केवल व ही मर दशन क अधिकारी हैं—

साहजी की समझ म य बातें नहा आनी। बातें बडी नयी नयी-सी लगी।

गद्दी पर अपन पास बठन का आग्रह किया। फिर बोले, आप यहा ठीक स विराजिए, मैं ठहरा गवार आदमी पसा पाकर खुश होता हू तिजारती का काम है सस्कृत वस्कृत नही समझता। आप जरा मान समझाकर कहिए—

गौर पडितजी को एक अच्छा श्रोता मिल गया। उन्होने कहा दखिए साहजी आप और मैं हम सभी माया मुग्ध जीव है हम कहते हैं मरा घर मेरा कम मेरा स्वामी यही सब तो कहते हैं ? असल म हम लोग जानते नही हैं कि हम लोग तो निमित्त मात्र है। हर कम के कारक कारयिता सब परमश्वर ही है—

मथुरा साहू की समझ मे फिर भी कुछ नही आया। उसने कहा इसके माने ? जरा अच्छी तरह से समझाइए—

गौर पडितजी ने कहा मुझ तो कहने म आनद ही होता है साहजी लेकिन लेकिन सुननवाला कहाँ मिलता है कोई मरा दुख यही है कोई सस्कृत नहा जानता। हा तो सुनिए—

कहकर गौर पडितजी ने श्रीमदभगवदगीता की व्याख्या आरम्भ कर दी। उधर खरीददार आए थे तेल नमक, मसाला और चावल दाल खरीदने। उन लोगो ने देखा एक अधेड सा आदमी धडाधड सस्कृत

बोले जा रहा है और उसकी व्याख्या कर रहा है। उसके आगे दुकान के मालिक मथुरा साहू भक्तिभाव में गद्गद हुए बैठे हैं।

एक जने ने दुकान के आदमी से पूछा, 'गौरचद, यह कौन है रे ?'

गौरचद ने तराजू पर सौदा तौलते तौलते कहा 'कोई पंडित है—'

'नाम क्या है ? लगता है बलरामपुर में नया आया है।

उधर गौर पंडितजी धड़ाधड़ संस्कृत श्लोक बोलते जा रहे थे और फिर व्याख्या कर रहे थे निर्वेश सर्वभूतेषु य स मामेति पाडव। अर्थात मनुष्य निमित्त मात्र है जो वैदिक लौकिक समस्त कर्म ईश्वर को अर्पण करके उसके भृत्य की तरह उसी के कर्म उसी की प्रीति के लिए सम्पन्न करते हैं वे 'मत्कर्मकृत' हैं। समझे साहजी, शास्त्रों में कहा है सगवर्जित' रहना पड़ेगा, अर्थात आसक्ति का त्याग करना पड़ेगा, समझ लीजिए अगर मैं यह पाठशाला प्रारम्भ करता हू तो मुझे आसक्ति-शून्य होकर पाठशाला चलानी पड़ेगी। यदि मैं सोचू कि इस पाठशाला के खुलने पर इसी के पैसे से जीवन निर्वाह करूँ तब तो '

गौर पंडितजी को स्नान भोजन के लिए देर हो रही थी। जनार्दन पास ही खड़ा था।

उसने कहा, पंडितजी बहुत देर हो गयी, अब चलिए '

पंडितजी शास्त्र व्याख्या में मग्न थे। अचानक बाधा पाकर झुंझला उठे। कहने लगे, 'तू चुप रह ! तू मूर्ख आदमी ठहरा तू यह सब क्या समझेगा !'

कहकर पंडितजी फिर व्याख्या करने में तल्लीन हो गए, 'सर्वभूतेषु य स मामेति पाण्डव अर्थात '

मथुरा साहजी ने बहुत से लोग देखे हैं, लेकिन जिन्दगी में ऐसा कोई और आदमी नही देखा। उनका कारोबार काफी पुराना है। बलरामपुर बगपटी स्टोर्स खुलने से लेकर आज तक बहुत से लोग आए गए। बहुतेरे लोगों ने उन्हें ठगा साथ ही बहुत से लोगों को उन्होंने ठगा। लेकिन कौन जाने इस नए आदमी को उन्होंने किस नजर से देखा।

अचानक बातो के बीच बोले पंडितजी, दिन काफी ढल गया, आपने भोजन कर लिया ?

भोजन ? आहार ?

बात में रुकावट देख गौर पंडितजी को अच्छा नही लगा। बोले नहा-नहीं आहार आदि की बात इस समय छोडिए जहाँ आप जसा ज्ञानी आदमी मिल गया है देखिए न, शास्त्र म कहा है सर्वभूतात्मा

तभी साहूजी की दूकान पर कोई आ गया। उसे देखते ही मथुरा-साह ने कहा क्या हाल है गोविन्दबाबू आइए आइए

गोविन्दबाबू आकर बैठ गए। फिर बोले, नही मैं इस वक्त बैठूगा नही, सरसों का तेल चाहिए एक टीन घर भिजवा देना

कहकर चले जा रहे थे।

लेकिन पीछे से मथुरासाहजी ने आवाज दी। बोले खैर इनसे आप का परिचय नही है गोविन्दबाबू आप हैं '

गौर पंडित उठकर खडे हो गए। नमस्कार करके अपना परिचय दिया। मथुरा साह ने ही कह दिया, आप हैं यहाँ के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमन गोविन्दचन्द्र चक्रवर्ती

मथुरासाह ने ही गौर पंडित का उद्देश्य बतला दिया। कहा 'बल रामपुर म एक पाठशाला खोलना चाहते है। मुझे जमीन देने के लिए मेरे पीछे पडे है

गोविन्द चक्रवर्ती कामकाजी आदमी हैं। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयर मन हैं। बोले ठीक ही तो है आप किसी दिन समय निकालकर मेरे यहा आइए

हां तो इसी तरह गौर पंडित ने उन दिनों सब लोगों से मेलजोल बढ़ाया। ये सब बहुत पुरानी बातें हैं। उस समय यह बलरामपुर आज जैसा नहीं था। गौर पंडित की उम्र भी तब कम थी। यह जमीन मथुरसाह ने ही दी थी। गौर पंडित उन्हें बड़े भले लगे। यह जो इतना बड़ा स्कूल देख रहे हो, यह सात बीघे जमीन तब झाड़ियों और अरबी के जंगलों से भरी थी। आम, जामुन और नारियल के पेड़ों का जंगल सांप-बिच्छुओं से भरा था। यह तालाब भी इसी के साथ था। पूरी जमीन उन्होंने एक दिन स्कूल के नाम लिख दी। तुम जब अंदर जाओगे तो देखोगे सामने एक बड़ा मैदान है बच्चों के खेलने के लिए। उसको पार करने के बाद देखोगे एक बूढ़ा आदमी गेट की ओर चला आ रहा है। आधी बांह का कुर्ता मोटी धोती और पैरों में विद्यासागरी चप्पल। कंधे पर चादर। गले में झूलती एक घड़ी।

'जनार्दन, जनार्दन गेट बंद करो, गेट बंद करो '

जनार्दन भी अब बूढ़ा हो गया है। पंडितजी की बात सुनते ही जनार्दन ने लोहे का गेट बंद कर दिया और साथ ही लड़कों का एक झुंड स्कूल में घुसते घुसते रुक गया।

'क्यों रे, तुझे देर क्यों हुई ? मालूम नहीं है साढ़े दस बजे स्कूल लगता है ?'

'और तू ? तू ?'

सबके सब सिटपिटाए खड़े थे।

'बोल देर क्या हुई ? तू बोल ? तू ?'

एक लड़के ने डरते डरते कहा सर मेरी मां बीमार है, खाना नहीं बना पायी।

'अच्छा ठीक है तू अंदर आजा।'

जनार्दन के गेट जरा सा खोलते ही लड़का अंदर घुस आया।

और तू ?'

'मैं सर, बाबा का खाना पहुंचाने खेत गया था।'

आखिर मे पडितजी ने सभी का अन्दर कर लिया। लेकिन साथ ही धमका भी दिया कि देखो फिर कभी देर न करना।

लेकिन अनिलेश बेचारे की मुश्किल हो गयी। अनिलेश चटर्जी।

अनिलेश, तुम भी लेट ?'

फिर जानदन स बोले, 'खोल जनादन गेट खाल'— अनिलेश शम से सिमटता सीधा अदर बिल्डिंग की ओर जाने लगा। पडितजी की नजरो से बाहर जाकर जसे वह बच जाता।

पीछे पीछे गौर पडित आ रहे थे। पास पहुँचते ही बोले 'अगर तुम लोग ही लेट आओगे अनिलेश तो विद्यार्थी किसके आदर्श का अनुसरण करेंगे तुम्ही बोलो ? वे लोग किससे सीखेंगे ? कौन उन्ह रास्ता दिखलाएगा ?

अनिलेश सचमुच शम स सिमटा जा रहा था।

पडितजी की बात सुनकर वह रुक गया।

उसने कहा पडितजी आप हम लोगो की समस्या ठीक से नही समझ पायेंगे।

समझ नही पायेंगे ? तुम कह क्या रह हो ?

नही पडितजी, आपसे कहना बकार है। आप पुराने जमाने के आदमी हैं। आपने एक जमाने म इस स्कूल को बनाया हमने सब सुना है। लेकिन हम इस जमाने म पदा हुए है आज हमारी समस्याएँ बहुत सी हैं। आप को मालूम है आज पत्नी स मेरा झगडा हो गया आपस अपने घर की बात कह रहा हू गुस्स के मारे आज उसन खाना तक नही बनाया—

कहते कहते जरा रुककर अनिलेश ने फिर कहा, आप मुझसे तो कह रहे हैं और उधर देखिए कौन जा रहा है

गौर पडितजी न मुडकर देखा। गणित मास्टर शशधरबाबू छपकर सीढी के नीचे होकर आफिस की ओर जा रहे थे।

आप मुझ पर ही नाराज होत हैं आप शशधरबाबू स तो कुछ भी नही कहत ? उनस कुछ कहिए न, देखू क्या कहते है '

शशधर सरकार के कानों में ये बातें गयी लेकिन वह अनसुनी करके अपने रास्ते जा रहा था।

लेकिन गौर पण्डितजी छोड़नेवाले आदमी नहीं थे। फौरन पास जाकर बोले, 'शशधर अब तुम्हारे साढ़े दस बज रहे हैं? अरे भाई तुम तो स्कूल के पुराने टीचर हो!'

शशधर भी दबने वाला नहीं था। उसने कहा, तुम चुप भी रहो आया हूँ यही बहुत है।'

'इसके माने?'

'माने यही कि इसकी कैफियत क्या तुम्हें देनी पड़ेगी पण्डित?'

'तुम कह क्या रहे हो शशधर? स्कूल क्या मेरे अकेले का है? मैंने क्या अपने लिए इस स्कूल को बनाया है? तुम कह क्या रहे हो?

शशधर सरकार ने कहा, 'जब स्कूल बनाया तब बनाया अब तुम कौन हो? अगर कैफियत देनी होगी तो हेडमास्टर साहब को दूंगा, सेक्रेटरी को दूंगा, कमिटी को दूंगा। तुम क्या बीच में टेंटें लगाए हो? अरे बाबा तुम अपनी संस्कृत लिए रहो न '

पण्डितजी के सर पर जैसे बिजली गिरी। उनके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। मिनट भर में जैसे सब कुछ गड़बड़ा गया। कब घंटा बजा, कब क्लास लगी, कब प्रार्थना हुई, उनके कानों में जैसे कुछ भी नहीं गया।

लेकिन वह भी जरा देर के लिए। उसके बाद ध्यान आया, जाने भी दो शशधर की बातों पर बेकार क्यों मन छोटा कर रहे हैं। शशधर तो उसी दिन का आदमी है। वह कैसे समझ सकता है कि कितनी मुश्किल के बाद मथुरासाहा से यह सात बीघे जमीन निकलवायी। कितनी मुश्किल से डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन गोविन्द चक्रवर्ती का मन फिरवाया। उन गोविन्द चक्रवर्ती की चिट्ठी लेकर बलरामपुर में घर घर जाकर उन्होंने भीख मांगकर चंदा इकट्ठा किया। चंदा करके टीन छवाकर उन्होंने अपनी पाठशाला की नींव डाली। ये बातें न शशधर

सरकार ही जान सकता है न आजकल का यह अनिर्देश हो। किसकी बात पर व दिल छोटा कर रहे हैं! जाने भी दो।

अपने कमरे में आकर टेबुल पर से महाभारत उठा ली। मन खराब होने पर पंडितजी इसी को बार बार पलटे पढ़कर मन साफ हो जाता। फिर किसी के ऊपर गुस्सा नहीं आता।

वनपर्व में युधिष्ठिर कहते हैं—

नाहम कर्मफलान्वेषी राजपुत्रि चराम्युत।

ददामि देयमित्येव यजे यष्टव्यमित्युत

राजपुत्री मैं कर्मफलान्वेषी होकर कोई कर्म नहीं करता, दान करना पड़ता है इसलिए दान करता हूँ, यज्ञ करना पड़ता है इसलिए यज्ञ करता हूँ। धर्माचरण में विनिमय में जो फल की आकांक्षा रखता है वह धर्म वणिक है, धर्म उसके लिए परायी वस्तु है। वह हीन है, वह जघन्य है।

हाँ तो उन दिनों बलरामपुर में इतनी बड़ी पक्की सड़क भी नहीं थी इतने बड़े बड़े मकान भी नहीं थे। आजकल जहाँ पर आकर बस खड़ी होती है वहाँ पहले गंज थी। गंज आज भी है लेकिन यह गंज वह गंज नहीं है। तब मथुरा में भरा पर से मथुरासाह की आढ़त के बम्ब इच्छामती नदी के किनारे लगी नावों पर लादे जाते थे।

दिन भर आढ़त में तौल-तौलकर धान बस्ता में भरना और सड़क पर अलग गिर पड़ना बस्ते गिनना। मजूर उन बस्तों को ले जाकर नावों में चढ़ाते। गिनू मन्नो की लाठियाँ और कौड़ियों का ढेर पड़ा रहता। कभी में एक-एक कौड़ी उठाकर बायीं ओर रखता। 'रामा राम दो के दो तीन के तीन तीन तीन तीन, चार चार चार '

इसी तरह मन में गिनती बोलता और एक कौड़ा दाहिनी ओर से

उठाकर बायी ओर रखता। हिसाब बही खराब चीज है। जरा सा मन इधर-उधर हुआ कि सब गडबडा जाता है।

गज के पीछे से सीधे दक्षिण की ओर चले जाओ। पगडडी बनी है। गढो मे भरी ऊँची नीचा जमीन पारकर आध मील चलकर ही है दक्षिण पाडा। बलरामपुर म यह दक्षिण पाडा ही सबम खराब जगह है। दूर और गदगी, दक्षिण पाडा के बीचो बीच एक बडी पोखर है।

शिवानी पहले तो समझ हा नही पायी। पति के साथ शहर जा रही है या और कही। शहर के बारे म शिवानी की एक मोटी सी धारणा थी।

मुबारकपुर मे ससुर के घर स जब बलगाडी म बठी थी तब अपन इष्टदेव को यादकर उसन दोनो हाथ जोडकर प्रणाम भी किया था।

काका ने बलगाडी के सामन आकर पूछा था 'तो गौर, गाँव छोडकर चल ही दिए ?'

गौर पडित ने काका व पाका की धूल लेकर अपन माथे से लगायी फिर बाले हाँ काका बाबू और कितन दिन इस देहात म रहूँ ! यहा न एक पाठशाला है न टोल किसे सस्कृत पढाऊँ ?

लेकिन जाओगे कहा, कुछ ठीक किया ?

गौर भटटाचाय न कहा था 'बलरामपुर '

'बलरामपुर ? यह कहाँ पर है ? किस जिले मे है ? शहर है ?'

'जी हा पूरा शहर है।'

'ब्राह्मण-कायस्थो क कितने घर हैं ?'

'तीस घर ब्राह्मण और डेढ सौ के करीब कायस्थ बस है। इसके अतिरिक्त बलरामपुर शिक्षित लोगा की जगह है। वहा के लोग गुण की कद्र जानते हैं। मुबारकपुर के लोग सस्कृत की कद्र कस जान सकते है !

'सो तो है ही।' काकाबाबू ने भी फिर और कुछ नही कहा। और कहते भी क्या ! उनके भतीजे न बात झूठ तो कही नहीं थी। मुबारकपुर की अब वह हालत नही रह गयी थी। जमीन-जायदाद खूब थी लेकिन

सरकार ही जान सकता है न आजकल वा यह अनिश्चेश ही। किमकी बात पर व दिल छोटा कर रहे हैं! जाने भी दो।

अपने कमरे म आकर टेबुन पर से महाभारत उठा ली। मन खराब होने पर पंडितजी इसी को वार बार पढने पकर मन साफ हो जाता। फिर किमी के ऊपर गुस्सा नही आता।

वनपव म युधिष्ठिर कहते हैं—

नाहम कमफलान्वेषी राजपुत्रि चराम्युत।

ददामि देयमित्येव यज यष्टव्यमित्युन '

राजपुत्री मैं कमफलान्वेषी होकर कोई कम नही करता, दान करना पडता है इसीलिए दान करता हूँ यज्ञ करना पडता है इसलिए यज्ञ करता हूँ धर्माचरण म विनिमय मे जो फल की आकाक्षा रखता है वह धम वणिक है धम उसके लिए परायी वस्तु है। वह हीन है वह जघन्य है।

हा तो उन दिनो बलरामपुर म इतनी बडी पक्की सडक भी नही थी इतने बडे बडे मकान भी नही थे। आजकल जहाँ पर आकर बस खडी होती है वहाँ पहले गज थी। गज आज भी है लेकिन यह गज वह गज नही है। तब मजूरो के सरो पर से मथुरासाह की आढत के बस्ते इच्छामती नदी के किनारे लगी नावो पर लादे जाते थे।

विधू कायाल आढत स तौल तौलकर धान बस्तो म भरता और सडक पर वठा शिबू महतो बस्ते गिनता। मजूर उन बस्तो को ले जाकर नावो म चढाते। शिबू महतो की दाहिनी ओर कौडिया का ढेर पडा रहता। वहाँ स एक-एक कौडी उठाकर बायी ओर रखता। रामा राम दो के दो तीन के तीन तीन तीन तीन चार चार चार '

इसी तरह मुह से गिनती बोलता और एक कौडी दाहिनी ओर से

उठाकर बायी ओर रखता। हिसाब वही खराब चीज है। जरा सा मन इधर उधर हुआ कि सब गडबडा जाता है।

गज के पीछे से सीधे दक्षिण की ओर चले जाओ। पगडडी बनी है। गढ़ो मे भरी ऊँची-नीची जमीन पारकर आध मील चलकर ही है दक्षिण पाडा। बलरामपुर मे यह दक्षिण पाडा ही सबसे खराब जगह है। हर ओर गदगी, दक्षिण पाडा के बीचो बीच एक बडी पोखर है।

शिवानी पहले तो समझ ही नही पायी। पति के साथ शहर जा रही है या और कही। शहर के बारे म शिवानी की एक मोटी सी धारणा थी।

मुबारकपुर मे ससुर के घर से जब बैलगाडी में बैठी थी तब अपने इष्टदेव को यादकर उसने दोनो हाथ जोडकर प्रणाम भी किया था।

काका ने बैलगाडी के सामने आकर पूछा था, 'तो गौर गाँव छोडकर चल ही दिए ?

गौर पडित न काका के पावो की धूल लेकर अपन माथे से लगायी, फिर बोले 'हा काका बाबू और कितने दिन इस देहात मे रहूँ। यहाँ न एक पाठशाला है न टोल किसे सस्कृत पढाऊँ ?'

लेकिन जाओगे कहा कुछ ठीक किया ?

गौर भट्टाचार्य ने कहा था 'बलरामपुर '

'बलरामपुर ? यह कहाँ पर है ? किस जिले मे है ? शहर है ?

'जी हाँ पूरा शहर है।'

ब्राह्मण-कायस्थो के कितने घर हैं ?'

'तीस घर ब्राह्मण और डेढ सौ के करीब कायस्थ वहा हैं। इसके अतिरिक्त बलरामपुर शिक्षित लोगो की जगह है। वहाँ के लोग गुण की कद्र जानते हैं। मुबारकपुर के लोग सस्कृत की कद्र कसे जान सकते है।'

'सो तो है ही।' काकाबाबू ने भी फिर और कुछ नही कहा। और कहते भी क्या। उनके भतीजे न बात झूठ तो कही नही थी। मुबारकपुर की अब वह हालत नही रह गयी थी। जमीन जायदाद खूब थी लेकिन

बस्ती नहीं थी। भले आदमी कहलाने वाले सब लोग एक-एक करके नौकरी धंधे की खातिर बाहर चले गए थे। सिर्फ आम कटहल और जमीन से तो पेट नहीं भरेगा। तब इतनी मुसीबत उठाकर दूर दक्षिण जाकर काव्यतीर्थ होने का क्या लाभ हुआ ?

'इसके माने फिर इस जगह नहीं आओगे ?

लौटने का अवकाश मिलने पर आऊंगा क्यों नहीं ? लेकिन वे लोग क्या छोड़ेंगे ?'

बलरामपुर में तो काव्यतीर्थों का अभाव है। एक टोल या पाठशाला कुछ भी नहीं है वहाँ। वे लोग मुझे हाथों हाथ लेंगे काकाबाबू

खैर छोड़ो मैं और कितने दिन हूँ। अगर कभी आए भी तो शायद ही मुझसे मिल पाओगे। जहाँ भी रहो प्रार्थना करता हूं सुखी रहो '

बस।

मुबारकपुर के साथ गौर पंडित का नाता उसी दिन पूरा हो गया। लेकिन तब क्या गौर पंडित को पता था कि इस बलरामपुर में आकर वे मुसीबत में पड़ेंगे। असल में उन्हीं के टोल का एक सहपाठी था कार्तिक। कार्तिक चक्रवर्ती का घर बलरामपुर में था। इस बलरामपुर से ही कार्तिक चक्रवर्ती नवद्वीप में टोल में काव्यतीर्थ होने गया था।

कार्तिक ने पूछा था तुम्हारा घर कहाँ है भाई ?

गौर भट्टाचार्य ने कहा था मुबारकपुर।

यह कहाँ पर है ?'

गौर भट्टाचार्य ने कहा था कीर्ति काव्यालंकार की जन्मभूमि। नदिया जिला थाना हसरवली हम लोग उन्हीं के गुरुवंशी हैं।

कार्तिक ने कहा था तब तो तुम्हें प्रणाम करना चाहिए। इतने बड़े न्यायशास्त्री भारत में कितने थे ?

गौर भट्टाचार्य ने दुखी होकर कहा था होने से क्या होता है भाई, वह बात अब नहीं रही। न्यायालंकार कीर्ति पंडित का वंश निर्वंश हो गया है। मैं रह गया हूँ और हैं मेरे काकाबाबू काकाबाबू के लड़कों में

से कोई पद लिख नहीं पाया। गाव की चारदीवारी म बैठकर पोथी पढ़ते हैं और मौज आने पर पोखर जाकर मछली पकड़ते हैं। व लोग यही करके अपना जीवन धन्य मानते हैं

ऐसी बात है तो तुम हमारी ओर चले आओ न!'

'तुम्हारी ओर? कहा?'

'बलरामपुर। चौबीस परगने म '

कार्तिक चक्रवर्ती ने यह बात बहुत पहले कही थी। शायद भलमनसाहत दिखलाने को ही कही थी। लेकिन नवद्वीप स मुबारकपुर लौटने के बाद भी पंडितजी उस बात को भूल नहीं पाए। गौर पण्डित ने बातों ही बातों म कई बार काकाबाबू से भी जिक्र किया था। गाव के पाँच अगुवा लोगों से भी जिक्र किया। लेकिन किसी न ध्यान नहीं दिया। मन्तुन? काव्यतीर्थ? यह पढ़कर क्या होगा? उससे क्या हमारा पेट भरेगा?

अरे राम राम! कीर्ति काव्यालंकार की जन्मभूमि के लोग अगर ऐसा कहें तो उसी जगह से किसका लगाव रह सकता है?

एक दिन सभी ने बात सुनी। सुनकर सब हैरान थे। कहने लगे 'बलरामपुर, वह कहां है?'

'मेरे गुरु भाई कार्तिक चक्रवर्ती का गाव। वह जगह सोने की है। हम लोगों ने नवद्वीप म एक साथ काव्यतीर्थ का अध्ययन किया है, वहां के लोग गुणी लोगों की कद्र करना जानते हैं, मालूम है '

इसी बात के आधार पर गौर पण्डित एक दिन बहू को लेकर मुबारकपुर से बैलगाड़ी म रवाना हो गए। मा दुर्गा का नाम लेकर यात्रा शुरू हुई। रेल के स्टेशन तक करीब आठ मील कच्चा रास्ता था। वहां स ट्रेन म चढ़कर सीधे बलरामपुर।

लेकिन कार्तिक कहां है? कार्तिक चक्रवर्ती? नवद्वीप की काव्यतीर्थ उपाधि से विभूषित ब्राह्मण-पुत्र।

बहू को लिए गौर पंडित बलरामपुर म ट्रेन से उतरे ही थे।

रास्ते म एक आदमी ने कहा, 'कार्तिक चक्रवर्ती? अरे वे तो अब

यहाँ नहीं रहते । गाँव छोड़कर वे तो अब काशी में रहते हैं ।

तब क्या होगा ?'

बड़ी अजीब हालत हो गयी। गौर पंडित अपनी बरखूनी पर गर खुजलाने लगे। रूस ! पहले से एक पत्र लिख देना चाहिए था। इस तरह अनजान जगह गृहस्थी के साथ फर म चले आना ठीक नहीं हुआ।

इसके अलावा साथ में घरवाली भी है।

लेकिन बलरामपुर के लोग अच्छे हैं यह मानना पड़ेगा। कामचलाऊ ठिकाने का बन्दोबस्त उन लोगों ने कर लिया। दक्षिणपाड़ा के बीचो बीच दो कमरों वाला एक छोटा सा घर। सामने आँगन। आँगन के कोने में छोटी सी कोठरी वहाँ रसोई बन जाएगी और बाहर सामने ही पोखर।

शिवानी ने घूँघट के अन्दर से एक बार घर को देखा।

फिर बोली, यहाँ रहेंगे कैसे ?

गौर पंडित नाराज हो गए। बोले, क्यों, यह तुम्हारे मुबारकपुर से कहीं अच्छा है।

शिवानी ने कहा पानी पीने के पानी का क्या इन्तजाम है ?

क्यों सामने वह पोखर है न। जितना चाहिए उतना पानी है। उसी पोखर से कलसी में भरकर पानी लाना और काम चलाना। थोड़ी कीचड़ है लेकिन उससे क्या हुआ ? मुबारकपुर में घर के आगे ऐसी पोखर थी ? यहाँ पर जितना चाहो उतना पानी पियो कोई मना नहीं कर रहा

लेकिन इन बातों को तो कितने ही दिन बीत गए। उसके बाद मथुरासाह ने जमीन दी। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन गोविन्द चक्रवर्ती ने नगद रुपया दिया। उन दिनों की बातें सिर्फ गौर पंडित जानते हैं और जानता है यह जनार्दन।

जनादा शुरू से ही पाठसाला के साथ है।

शिवानी की उम्र तब कम थी। इतना सब नही समझती थी। एक दिन गौर पंडित ने अचानक आकर कहा जरा अपने गले का हार तो देना '

'मेरे गले का हार ? हार का क्या होगा ?'

पंडितजी ने कहा रुपया कम पड रहा है, हार बेचना पडेगा—

'काहे का रुपया कम पड रहा है ?'

'पाठशाला के मकान का। दीवार चिन गयी है ऊपर टीन छवानी है, इस समय टीन खरीदने के लिए पैसा पास म नही है।

शिवानी न बात और नहीं बढाई। टूक खोलकर दस भरी का हार पण्डितजी के हाथो मे सौंप दिया।

सिर्फ हार ही नही। इसी तरह विवाह के समय शिवानी को जो भी दो एक चीजें मिली थी सभी पाठशाला के पेट म चली गयी। एक जोडी बाले थे और थी टाप्सों की जोडी। य चीजें पहले ही जा चुकी थी। इसके बाद शिवानी के पास कुछ भी नही रहा। सिर्फ शख की दो चूडियां हाथों म रह गयीं उन्ही दो चूडियों को पहने जिन्दगी कट गयी।

पण्डितजी कहते, 'तुम्हारे गहने क्या सदा हमेशा के लिए हैं ? बाद मे बनवा दूगा '

शिवानी कहती तुमने बनवाए '

पण्डितजी कहते, बनवा नही सकता मानें ? यही देखो न, इस बार पाठशाला म तीस लडके हो गए हैं—इसके बाद दो साल और सबर करो तबतक डेढ सौ लडके करके छोडूंगा—इसके बाद पाठशाला को स्कूल कराके तब दम लूगा '

डेढ सौ लडको के लिए तब पण्डितजी ने गाव म घर घर जाकर खुशामद की। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन गोविन्द चक्रवर्ती अब बूढे हो गए थ। मथुरासाह की उम्र भी काफी ढल गयी था। वे लोग अब स्कूल की खातिर पहले जितनी मेहनत नही कर पाते थे। लेकिन गोविन्द

चक्रवर्ती ने अपने लडके को स्कूल म भर्ती करा लिया था। मधुरासाह का लडका निमाईसाह भी गौर पंडित के स्कूल म भर्ती हो गया था।

शिवानी को अभी तक उन दिनो की बातें अच्छी तरह याद थी। गौर पंडित सुबह होते ही तहाई चादर कंधे पर डाले स्कूल जाने के लिए घर से निकल जाते। इसके बाद घर म रहने वाले क्या बनाएगा क्या खाएगा आटा दाल चावल का इन्तजाम है या नही इन सबकी कोई परवाह उन्हें नही रहती। शिवानी चुपचाप घर की देहरी पर बैठी मन ही मन बडबडाती और सडक की ओर देखती पंडितजी का इन्तजार करती।

काम करने आयी शम्भू की मा देखकर हैरान रह जाती।

पूछती आज क्या खाना नही बनेगा काकीमा ?

इसके बाद जब सुनती तो जमे आसमान स गिरती।

वाह रे वाह ! पंडित महाराज की भी बलिहारी है। पाठशाला के लिए क्या खाना पीना भी बन्द कर देंगे '

इसके बाद शभू की मा कही स दो मुट्ठी दाल चावल ला देती तब जाकर खाने का इन्तजाम होता। शाम के वक्त जब भले आदमी वापस लौटते तब उन्हें किसी बात का ख्याल भी नही होता। हाथ मुह धोकर खाने के लिए बैठते बैठते कहते मालूम है, दस लडके और भर्ती किए हैं। भर्ती क्या ऐसे ही हो गए ? बहुत समझा-बुझाकर बाप-अभिभावको को राजी कर पाया। अब देख लेना अपने स्कूल को ग्रांट मिल जाएगी '

शिवानी यह सुनकर चुप न रह पाती। कहती, तुम्हारे स्कूल के लडको को ग्रांट मिलने स क्या मेरा पेट भरेगा ?

गौर पंडितजी कहते तुम समझ नहीं रही हो लडको को ठीक स कुछ बना पाने पर उनका कितना बडा उपकार होगा ? एक बार उन लोगो के बारे म भी तो सोचो। सबके सब निपट गवार ये अबतक वर्णज्ञान तक नही था

ये बातें पुरान जमाने की हैं। तुम तब पदा नहीं हुए थे, मैं भी तब तब पदा नहीं हुआ था इन बातों को अगर तुम जान नहीं पाते तो कोई नुक्सान नहीं है। तुम सीधे जाकर जनादन से पूछो—गौर पडितजी हैं ?

यह वही जनादन है।

शुरू से पाठशाला की नींव पडने वाले दिन से लेकर वह दरवानी का काम कर रहा है। असल म जनादन दरवान नहा है। वह पिउन है। माने हेड पिऊन। हड पिउन जरूर है लेकिन उस काम सदर दरवाजे पर करना पडता है। पडितजी ने सदर दरवाजे के पास ही उसके लिए कोठरी बनवा दी है।

उन्होंने कह दिया था 'जनादन तुम्हें यहीं बठकर पहरा देना है। लडके अगर देर से आयें तो उन्हें अ दर नहीं आने दोगे। घटा बजने के साथ ही साथ तुम्हें गेट ब द करना होगा।'

बल्लरामपुर गज म जहाँ पर बसें आकर रुकती हैं, वहाँ मथुरा साह की वह पुरानी दूकान आज भी मौजूद है। लेकिन मथुरा साह खुद आज जि दा नहीं हैं। निमाई साह है। निमाई साह भी अपन बाप की जगह अब कमिटी का प्रेसीडेंट है। और गोवि द चक्रवर्ती का लडका नरन चक्रवर्ती कमिटी का सेक्रटरी है दोनों ही गौर पण्डितजी क छात्र ह। एक दिन उन दोनों ने पडितजी के हाथों मार खायी है।

और है भवरजन। भवरजन मुखर्जी।

यह भवरजन बचपन म बुरी तरह शर्मीला था।

गौर पडितजी ने इस भवरजन का एक दिन गेट के बाहर रोक दिया था। भवरजन साढे दस बजने के बाद आया था।

'क्यों रे, तुझे इतनी देर हुई आज मे ?'

रोनी सूरत बनाए भवरजन ने कहा था, 'जी पडितजी, अब कभी भी देर नहीं होगी '

गौर पडितजी ने कहा था, 'यह कहने से काम नहीं चलेगा, कभी

कभार कहने से नहीं मानूगा। पहले बतला देर हुई क्यो ?

आज कपड नही सूख।

कपडे नही सूरा माने ?

माने कल रात को कपड गम पानी म डाल दिए थ, रात को सूख नहीं पाए

सूख नही तो इस समय आया कसे। देखू गीले हैं क्या ?''

गेट क बाहर एक हाथ निकालकर गौर पडितजी न भवरजन क कपडे छूकर देखे। पूरी तरह भीगे थे।

जा जा जाकर कपड बदल। भीग कपड पहनने से बुखार आ जाएगा। भीगे कपड बदल आ जा

भवरजन की आँखें और भी डबडबाने लगी। उसने कहा मेरे पास और सूख कपड नही ह पण्डितजी।

तो घर जा। आज तेरी छुट्टी है। आज तुझे स्कूल आने की जरूरत नही है। पहले शरीर है फिर पढाई जा भाग

भवरजन की छुट्टी हो गयी। रोनी सूरत बनाए भवरजन घर चला गया। आज के इस बलरामपुर हाइ स्कूल के हेडमास्टर भवरजन मुखर्जी ने एम० ए० पास किया बी० टी० पास की। लेकिन आज भी पडितजी की बात काटने की हिम्मत उसम नही ह। आज भी पडितजी के हुक्म को टालने की हिम्मत उसमे नही ह।

याद है भवरजन बचपन म उस रोज स्कूल स सीधा घर चला गया था। शाम के वक्त मा तब तुलसी के पास दीया बाल रही थी। अचानक बाहर से गौर पडितजी के गले की आवाज सुनाई दी भव, भव है

हडबडाकर देहली स उठकर घर क दरवाजे पर जाकर देखा खुद पडितजी खड़े हैं।

पडितजी आप ?

गौर पडितजी की भौंहें सिकुड गयी पडितजी, आप ! हरामजादा कहीं का। तू भीग कपड पहने स्कूल जाएगा और एक बार तुझे देखने

भी नहीं आऊगा ? तूने समझ क्या रखा है ?'

भव की मां विधवा औरत थी । जल्दी से मर ढककर आगे आयी ।

आइए पंडितजी आइए '

गौर पंडितजी बगल म पैर सा कापिया दबाए अंदर आगन म आ गए । तब तक भव की मां न मिट्टी के चबूतरे पर एक पीढ़ा लाकर रख दिया था । फिर बोली बैठिए, पंडितजी बैठिए '

नहीं, मुझे बैठना नहीं है मैं किसी भी तरह नहीं बैठूगा बहू । मैं अब तुम्हारे घर नहीं बैठूंगा कहकर धम से पीढ़े पर बैठ गए।

इसके बाद दोनों घुटन सिकोड़कर बोले, 'तुम्हारी क्या अक्ल मारी गयी है बहू तुम्हारे पाच नही सात नहीं, एक लड़का है, तुमन क्या सोचकर भीगे कपड़ा म लड़के को स्कूल भेजा बोलो ? अगर बुखार सुखार हो जाता, तब क्या होता ! बोलो तो, तब तो मुझ ही सब-कुछ सम्भालना पड़ता । वैसे ही अकेला आदमी हूं इतन सारे लड़के है, मैं कितने लड़को की देखभाल करू, किस किसको सम्भालू ?

हां तो वही भव भवरजन अब स्कूल का हडमास्टर हो गया है । गौर पंडितजी की वजह स बी०ए० पास किया बी०टी० पास की । शादी की, बाल-बच्चे भी है । एक दिन वह बूढ़ी विधवा मा भी मर गयी । बाद म तनख्वाह म से रुपये बचा बचाकर उत्तरपाड की आर एक मकान भी बनवाया है । गृह प्रवेश वाले दिन भवरजन न सबको न्योता भी खिलाया।

पंडितजी भी गए थे उस दिन ।

दूर से ही पुकारने लगे, अरे भव, किधर हो भाई ?'

हेडमास्टर होन पर भी एक जमान म तो विद्यार्थी था । पंडितजी की आवाज सुनते ही दौड़कर आकर पांव छुए ।

'बस बस ।

भव ने कहा, नहीं पंडितजी, आज क दिन अपन पैरो की धूल लेन से न रोकिए '

गौर पंडितजी ने कहा 'अच्छा भाई ले लो पैर की धूल लेने

अगर तुम्हारा मन हो तो ।

निमाई साह भी हाजिर था। मथुरासाह का लड़का निमाई साह। चुन्नट किया कुर्ता धोती पाजामे में पफ्फू। कमिटी का प्रेसीडेंट है। पक्का प्रेसीडेंट। जब तक स्कूल रहेगा तब तक निमाई साह मेम्बर रहेगा। बलरामपुर गंज में 'बलरामपुर वेराइटी स्टोर्स' का इकलौता मालिक। इसके अलावा था डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन गोविन्द चक्रवर्ती का लड़का नरेन चक्रवर्ती एडवोकेट। नरेन स्कूल का सेक्रेटरी है। इसके अलावा थे शशधर अनिलेश बलाईचन्द और कालीधन। इनमें का हर कोई एक जमाने में पंडितजी से पढ़ चुका है। निमाई साह मुट्ठी में उंगलियों के बीच सिगरेट दबाए फूंक रहा था। पंडितजी को देखते ही जूते के नीचे फेंककर मसल दी।

पंडितजी को देखकर सबके सब एक साथ सकपकाकर उठ खड़े हो गए।

अरे दीखता है तुम सबके सब आ पहुंचे हो। बैठो बैठो।

पंडितजी के बैठने पर सब बैठे।

पंडितजी ने कहा वाह मकान तो बढ़िया बनवाया है भव। मुझे बड़ी खुशी हुई। अपना भव वाकई कर्मठ आदमी है क्यों नरेन

भवरंजन ने विनीत होकर कहा 'यह क्या कह रहे हैं पंडितजी! यह सब तो आपकी ही बदौलत है। आप न होते तो क्या बलरामपुर में स्कूल खुल पाता, तब हम लोग पढ़ लिख भी नहीं पाते।

पंडितजी ने भव को रोक दिया। बोले अच्छा तुम चुप रहो। कोई किसी को आदमी बना पाता है? तुमने कर्मयोग किया उसी का फल मिला है तुम्हें।

सेक्रेटरी नरेन चक्रवर्ती ने कहा, नहीं पंडितजी यह सब आप ही की कृपा है। पिताजी से सब सुना है मैंने

गौर भट्टाचार्य ने कहा, नहीं रे सब कर्मयोग से ही होता है।

निष्काम भाव से कम करने पर फल मिलता है—कम क्या कभी भी व्यर्थ होता है ?'

हाँ तो ये सब शुरू की बातें हैं। तब तुम भी पैदा नहीं हुए थे और तुम्हारे पब्लिशर का भी जन्म नहीं हुआ था। बलरामपुर की वह छोटी सी पाठशाला कब धीरे धीरे हाइ स्कूल में बदल गयी यह कोइ नहीं जानता। कोई नहीं जानता माने किसी का ध्यान नहीं है।

तुम जाकर जनार्दन से पूछोगे, 'पंडितजी का कमरा किस ओर है ?'

जनार्दन कहेगा, उधर सीढी के नीचे जो पहला कमरा है पंडितजी वहीं बैठते हैं।

लेकिन वहाँ पहुँचकर क्या तुम भट्टाचार्यजी को पाओगे ? और पंडितजी तब सीधे हेड मास्टर के कमरे में होंगे।

'सब !'

भवरंजन काम करते करते पंडितजी को देखकर सीधा होकर बैठ गया।

यह सब क्या हो रहा है भव तुम कुछ भी नहीं देख रहे हो आज कल ! सब देर से स्कूल आते हैं जिसका जो जी चाहता है कर रहा है। मेरे जमाने में तो यह सब नहीं होता था। उन दिनों तो सब ठीक समय पर स्कूल आते थे। आज अखिलेश को पकडा और शशधर को पकडा।

भवरंजन ने कहा अखिलेश ने मुझसे कह रखा था उसकी पत्नी बीमार है

'उसने कह रखा था ? इसके माने उसने तुम्हें पहले ही कह रखा था ?

यह तो पूरा स्टेशन है वहाँ क्या मन लगता ?

उसके बाद ही नानीअम्मा बोला, इसके अलावा यहाँ रही हो कितने दिन हूँ मेरा जब ब्याह हुआ तब मेरी उम्र आठ साल की थी '

ओमी कहती क्या हो नानीअम्मा आठ साल ?

हँसी के मारे रानी का बुरा हाल हो जाता। सिर्फ आठ साल की उम्र में शिवानी की शादी हो गयी थी। नयी जगह नए लोग ननदिया ससुर और सास। ज्यादा समझने बूझने लायक उम्र भी नहीं था उनकी। उसके कुछ साल बाद ही पण्डितजी के साथ यहाँ चली आई। उन दिनों क्या यह बलरामपुर हो आज जैसा था ? शाम के वक्त तालाब के किनारे जाते डर लगता था मालूम है ? अब तो तू ही जब जी चाहा चली आती है रात बिरात जब जी चाहा मेरे पास आकर गप्प लगाती है। पहले का जमाना होने पर आ पाती ?

उन दिनों के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमन गोविन्द चक्रवर्ती अपने आखिरी दिनों में घर-अंदर तक चले आते थे। पण्डितजी से स्कूल के बारे में सलाह मशविरा करते। वह जो चबूतरा है न वहीं जहाँ बैठकर आजकल पण्डितजी लड़कों को पढ़ाते हैं वहीं बैठकर दोनों में बातें होतीं।

और पण्डितजी कहते कम से कम दो सौ रुपया का इंतजाम और करा दीजिए चक्रवर्तीबाबू, बिना उसके नहीं चल रहा--

गोविन्द चक्रवर्ती कहते क्यों ? अचानक दो सौ रुपया की क्या जरूरत आ पड़ी ?

जी पचास बेंचें और बनवानी है—

लेकिन मेरे बटहल के पेड़ है ही—कुछ पेड़ तो काफी बूढ़े हो गए है फल्ना भी बन्द कर दिया है, उन्ही से फिलहाल काम चला लो। और बढ़ई के लिए जो मजूरी देनी होगी उसका इंतजाम हो जाएगा।

शिवानी उन दिनों छोटी थी। बेचारी को भूख लग आती थी। सारे दिन काम काज करने के बाद बदन टूटने लगता था। शाम होते न होते

उसकी आँखें झपकने लगती थी। लेकिन पडितजी की बातें जसे खत्म होने का नाम ही नही लेती थी।

'अरे तू यहा बठी है ? मैं उधर घरभर म ढूढ रही हू।'

शिवानी हँसने लगती। कहती, बहू, उस बचारी से और कुछ नही कहना। मेरे पास बठी-बठी कहानी सुन रही थी। कहानी।'

सक्रेटरी नरेन चक्रवर्ती की बीवी वासन्ती शहर की लडकी थी। लडकी को ढूढते-ढूढत पडितजी के घर चली आयी थी। उसने कहा, 'डाटने क्या लगी बासी मा, लेकिन यहाँ बठी है तो कम से कम मुझे बताकर तो आना चाहिए।

शिवानी पास से रानी के कधे पर हाथ रखकर कहती रानी तो इसी घर की लडकी है बहू सिफ तुम्हारे यहा पदा हुई है—बस सिफ इतना सा है '

बहू कहती तब रह यहीं पर यहीं पर सोए हम खा पीकर सोते हैं इस राक्षसी आकर पकड ले जाएगी।'

'रहने भी दो बहू बेकार गुस्सा न करो रानी को ले जाओ। जाओ बटी, अब अपने घर जाओ, कल सुबह फिर आना '

तभी बाहर से गौर पण्डितजी की आवाज आयी, शम्भू की मा, दरवाजा खोलो

अरे नाना आ गए

कहते-कहते रानी ने दौडकर दरवाजा खोल दिया।

पण्डितजी अदर सबको देखकर हैरान रह गए।

रानी बोली, 'नाना तुम इतनी देर म आए ? तुमने मुझसे तो कहा था जल्दी वापस आओगे।

पण्डितजी ने कहा तू तो बडी बच्ची है अभी, तुझे क्या मालूम मुझे कितना काम रहता है ?

रानी ने कहा काम नही धूल थोडी, खाली कुर्सी पर बठे-बठे

'रघुपा और किस ! हिसाब देखन के लिए शशधरबाबू को रखा है वसिम बाबू को अग्रेजी क लिए रखा है, भूगोल इतिहास कालिबाबू पढाते हैं और

गौर पडितजी ने कहा सस्कृत कौन पढ रहा है, यह बतलाओ ?

जी आपको और क्या कहू आपस कहने की तो हिम्मत हाती नही

क्यो ? मैं बूढा हो गया हू इसलिए ?

गौर पडितजी जब नाराज होते तो सब लोग घबडा जाते। कहते, क्यो, मैने तुम लोगो का नही पढाया ? इतन दिना तक बलरामपुर के लडको को सस्कृत किसने पढाई सुनू जरा ? दखो भाई अगर कोई अशुद्ध सस्कृत पढाए तो मुझसे बर्दाश्त नही होन का। मैं जब नवद्वीप की चतुष्पाठी मे पाठशाला म पढता था तब जानते हो गुरुजी से कितने बेंत खाए थ ?

इसके बाद फिर उसी जमाने की बातें होने लगती। रास्ते म खडे खडे पडितजी की बातें सुनते सुनते कितने लोगो को अपने काम काज के लिए देर हो जाती।

अचानक पडितजी पूछते तुम्ह कोट जाने को देर तो नही हो रही ?

नरेन विनीत भाव से कहता हा पडितजी आज मुझे जरा जल्दी पहुचना था।

तब जसे पडितजी को होश आता। कहते लेकिन यह बात तुम्ह पहले बतलानी चाहिए थी देखो न मैंने तुम्हारा कितना समय नष्ट कर दिया

तो उस दिन कोर्ट से लौटते-लौटते नरेन को देर हो गयी। वासती ने कहा, 'आज देर हो गयी ?'

नरेन का चेहरा काफी गंभीर लग रहा था।

वासती ने कहा, 'क्या बात है ? आज लगता है मामला हारकर आ रहे हो ?

नरेन ने वासती की बात का जवाब न देकर पूछा, 'रानी कहां है ?'

वासती ने कहा, 'स्कूल से आने के बाद काकीमाँ के यहाँ गयी है।'

'इसी वक्त वहाँ गयी है ? और कोई खबर नहीं मिला ?'

वासती हैरान रह गयी। उसने कहा, क्या इस वक्त क्या जाती नहीं है वह ? रोज इसी वक्त तो जाती है।

नरेन इस बात का कोई जवाब नहीं दे पाया।

वासती को बड़ा अजीब लग रहा था। उसने कहा, 'आखिर आज तुम्हें हुआ क्या है ? तुम्हारे स्कूल की कमिटी में लगता है फिर झगड़ा हुआ है ?'

नरेन ने अदालती पोशाक उतारते-उतारते कहा, 'कह क्या रही हो तुम मैं स्कूल का सक्रेटरी हूँ, मैं किसके साथ झगड़ा करूँगा ?

वासती ने कहा, 'वाह तुम्हारी कमिटी में झगड़ा नहीं होता ?'

नरेन इसके बाद खबर को दबा नहीं पाया।

उसने कहा 'सुनो खबर सुनकर मन बड़ा खराब हो गया है

'कौन-सी खबर ?'

वासती खबर सुनने की आशंका से और भी पास आ गयी।

नरेन ने कहा, 'पंडितजी की लड़की मर गयी है '

'हैं ? कहते क्या हो तुम ? अपनी अवती ?

नरेन ने कहा हाँ

वासती ने पूछा, 'कैसे मर गयी ? क्या हुआ था ? खबर किसने दी ? च्च-च्च ! काकीमाँ की एक ही तो लड़की थी, एक लड़का भी

था उसने

रेन न तब तक वपड वदर लिए थे। उसने वहा मैं जरा पण्डित जी क यहाँ हो आऊ तुम चलोगी ?

वासती के मन पर अभी तक शोक छाया था।

उसने पूछा हा तुम्हें खबर वहाँ से मिली ?

मदन ने कहा मैं वोट स वापस आते वक्त स्कूल गया था वही टेलीग्राम आया था।

फिर ?

हेडमास्टर भवरजन खबर सुनाते घबडा रहे थ। मैंने ही कहा कि इस खबर को छुपाना ठीक नही होगा। इसके बाद मैं ही गया पण्डित जी की क्लास म। बाहर बुलाकर टेलीग्राम उन्हे दिया। उन्होने पढा।

फिर ?

इसके बाद बोले—तुम ठहरो मैं इन लोगो का पाठ पूरा करा दू कहकर फिर से क्लास म जाकर पढाने लगे।

इसके बाद घटा पूरा होने पर भवरजन ने पण्डितजी स जाकर कहा पण्डितजी अब आप घर जाइए इस हालत म पढाना ठीक नही होगा

पण्डितजी का चेहरा न जान कसे कापसा रहा था। उन्होने कहा, लेकिन अब अभी तो दो क्लास बाकी हैं उनका क्या होगा ?

भवरजन ने कहा, उनका इतजाम मैं कर दूगा। आप उनके लिए परेशान न हो आप घर जाइए

पण्डितजी न कहा लेकिन यह कसे हो सकता है भव जो चला गया वह तो चला ही गया वह अब वापस आने से रहा लेकिन लडको का आज का दिन बेकार जाएगा।

इसके बाद जाते जाते मुडकर रुके।

बोले इससे तो तुम एक काम करो भव किसी क हाथो यह टेलीग्राम अपनी काकीमा क पास घर भिजवा दो, खबर दे देना ठीक

है, कहना देना अपनी असली नहीं रही '

कहकर अपनी क्लास की ओर चले गए।

नरेन ने कहा, 'इतना सुनकर मैं चला आया, और कुछ मुझे नहीं मालूम।'

'वासती न रहा, तो एक बार काकीमाँ के पास हो आऊँ मैं, क्या कहते हो ?'

'हो आओ।'

कहकर नरेन खुद भी तैयार होने चला गया।

हाँ तो आज भी कल्याणपुर के लोगों को उन दिनों की याद ताजा है। पंडितजी की वह इकलौती लड़की थी। सभी ने उसे पैदा होने के बाद से देखा है। लाड से पंडितजी ने उसका नाम वसती रखा था। जब माना मे वसती के ब्याह के वक्त पंडितजी का कहीं कोई भी ठिकाना नहीं था।

गोविन्द चक्रवर्ती ने वसती की शादी पर एक कीमती बनारसी साड़ी दी थी और दो चार गिन्नियाँ।

आशीर्वाद दिया था सुखी होओ बेटी '

मथुरा साह ने भी कम नहीं दिया था।

और पंडितजी को बुलाकर पूरी तरह पूछताछ की। यह भी पूछा लड़की के ब्याह में आपका कितना खर्चा होगा पंडितजी ?'

और पंडितजी ने कहा, यह तो मुझे नहीं मालूम साहजी इससे पहले तो किसी का ब्याह किया नहीं है

साहजी ने कहा 'सो तो है ही। फिर भी एक अंदाज तो होगा ही कि आपका कितना खर्च हो सकता है या आप कितना खर्च सकते हैं ?'

गौर पडितजी ने कहा था, 'मेरे पास तो कुछ भी नही है साहजी। मुझे पूरी तरह फक्कड कह सकते है आप। सपत्ति के नाम पर पत्नी का एक दस भरी का हार था और तीन भरी के बाले थे लेकिन पाठशाला म सब खच कर दिया अब मेरे पास कुछ नही है'

मथुरा साह बडे सहृदय व्यक्ति थे।

उन्होने पूछा 'फिर भी कितने रुपये होने से आपका काम चल जाएगा?'

पडितजी ने कहा था 'मुझे तो बस थोडा सा कलाया चाहिए उसी के दो भाग करके दोनो हाथो म बाध दूगा।'

सुनकर साहजी हसने लगे।

फिर बोले 'इससे तो काम नही चलेगा पडितजी। आप घर वहीं देकर सतुष्ट हो जायगे लेकिन आपकी लडकी? आपकी लडकी की भी तो कोई इच्छा हो सकती है?'

कहकर कुछ देर सोचते रहे। फिर बोले 'ठीक है आप घर जाइए, और सब सम्हालिए आपकी लडकी के ब्याह का भार हम सब पर है। आप कल्लामपुर स्कूल के पण्डित हैं आपकी लडकी का विवाह यानि हमारी लडकी का विवाह। अब जाइए जाकर पत्नी से चिन्ता करने को मना करिए'

कहकर मथुरा साह ने गौर पडितजी को घर भेज दिया था। उसी लडकी की मृत्यु हो गयी। यह जितना आकस्मिक था उतना ही मर्मान्तक भी। स्कूल म आखिरी क्लास तक पढ़ाकर पण्डितजी धीरे धीरे घर की ओर बढ़े। तब तक खबर पाकर पत्नी बेहोश हो चुकी थी। खबर सुनकर आस पास के काफी लोग आ गए थे। पडितजी के घर म घुसते ही सभी ने उनकी ओर देखा। फिर कहा 'आप अभी तक स्कूल म क्या कर रहे थे पण्डितजी?' यहाँ कारणों को समझने वाला कोई नहीं था।

पडितजी चबूतरे पर बैठ गए। फिर बोले 'सब माया है नरेन!'

भगवान ने गीता में कहा है—ब्रह्म ही एकमात्र सत्य है, वास्तव और प्रकृति सब असत्य है प्रपंच है, उसकी परमार्थत कोई सत्ता नहीं है। बेकार में यह सोचकर आंसू बहाकर मैं क्या कर सकता हूं बतलाओ ?'

बात बड़ी अच्छी थी। सोचने पर इससे अच्छी और कोई बात नहीं हो सकती।

नरेन ने आहिस्ते-आहिस्ते पूछा, 'हुआ क्या था ?'

पण्डितजी ने कहा, जमाई ने लिखा था अवती की हालत खराब चल रही है। मैंने सोचा एक बार जाऊंगा। जाकर लड़की और नाती को यहां ले आऊंगा। लेकिन जाऊं-जाऊं करते-करते जा ही नहीं पाया।

मथुरा साह का लड़का निमाई साह भी आया था।

'वहां जायेंगे क्या एक बार ?'

पण्डितजी ने कहा, 'अब वहां जाकर और क्या होगा साह, मेरे वहां जाने से मेरी लड़की तो वापस आ नहीं जाएगी।'

नरेन ने पूछा, जमाई के घर में कौन कौन हैं ?'

पण्डितजी ने कहा, 'गृहस्थी के नाम पर वे लोग ही थे और है नाती। अब तो पूरा घर खाली हो गया। नाती को यहां ले आने पर जमाई एक-दम अकेला रह जाएगा।

मौसीजी के पास बैठी वासन्ती पंखा झल रही थी।

एक बार रानी ने पास मुंह लेजाकर बोली, सरकार, उठो ऊपर तखत पर लेटो।'

रानी यह सब देखकर जैसे गूंगी हो गयी थी। इतनी कम उम्र में चारों ओर शोक भरा वातावरण देखकर जैसे शरम से उसकी बोलती बंद हो गयी थी।

उसने पूछा मां पटिन अब यहां आ जाएगा न ?

वासन्ती ने कहा, तू चुप रह तो बेकार की बकबक न कर '

इस बार जैसे शिवानी हिल उठी। जैसे उसके कान में भी बात पहुंची थी। अचानक जोर से सुबकते-सुबकते हाथ उठाकर रानी को

गोद म खीच लिया। कहन लगी, इस न डाट बहू, यह क्या कुछ समझती है ?

इसने बाद रानी का छाती स चिपककर सुबकन लगी।

गौर पडितजी की लक्ष्मी की मौत का वजह से बलरामपुर का स्कूल रुका नही रहा क्योकि पडितजी ने स्कूल को रुकन नही दिया। दुनिया म किसी के भी लिए काई काम रुका नही रहता। अगले रोज पडित जी हमशा की तरह स्कूल जा पहुच।

जनादन भी हैरान था।

उसन कहा भी आज तो पडितजी आप स्कूल नही ही आते

भवरजन के कमर म अनिलेश दौडा-दौडा गया।

हड मास्टर साहब पडितजी आज भी स्कूल आए हैं

सुनकर भवरजन जल्दी स बाहर आ गया। देखा गौर पडितज बकझक कर रहे हैं क्यो जनादन अभीतक घटा नहा लगाया ?

जनादन ठीक वक्त स घटा लगाने ही वाला था लेकिन फिर भी जस हर काम म पडितजी रोज की तरह जल्दी मचा रहे थे।

गेट बद कर दो गट बद कर दो जनादन

गट बद होते ही सार स्कूल के विद्यार्थी अपनी अपनी क्लास म खडे होकर श्लाक पाठ करने लगे

जगदुदभव पालन नाशकरम

प्रणमामि शिवम शिव कल्पतरम

यह श्लोक स्कूल की नाव पडने के बाद से ही सबको पाठ करना पडता रहा है। नरन जब छोटे थे, उन्होने इसका पाठ किया निमाई साह ने भी पाठ किया। भवरजन न पाठ किया। बिनू की मा का लडका

विनोद, जो अब हाकिम हो गया है, उसने भी इस श्लोक का पाठ किया है। यह श्लोक पाठ इस स्कूल का आवश्यक नियम है।

पंडितजी कहते यह पाठ करना अच्छा है भाई प्रति दिन भगवान का स्मरण करने के बाद पढ़ाई प्रारम्भ करना अच्छी बात है।'

ऊपर क्लासों में श्लोकपाठ होता और पंडितजी तब तक गेट के पास आ पहुंचते।

ऐं तुझे देर क्यों हुई ? तारा, देर क्या हुई ? अब तेरा साढ़े दस बजा है ?'

एक ने कहा, 'सर, मुझे कल बुखार आ गया था '

'बुखार ? लेकिन कल बुखार हुआ था तो आज स्कूल क्यों आया ?'

'जी नहीं आने से आप नाराज होते।'

पंडितजी कहते 'देखूं, तेरा माथा देखूं'

गेट के बाहर हाथ बढ़ाकर लड़के का माथा छूकर देखा। अभी तक बदन गर्म था।

पंडितजी ने जोर की डांट लगायी। बोले 'तुझे अभी तक बुखार है। जा घर जा, आज तुझे क्लास में आने की जरूरत नहीं है, जा भाग। सेहत रहेगी तब तो पढ़ाई लिखाई कर पाएगा। मर जाने पर कैसे पढ़ पाएगा ? पहले सेहत है न कि पहले पढ़ाई '

लड़के को अंदर नहीं आने दिया। सर झुकाए बेचारा चला गया।

'और तू ? तुझे क्यों देर हुई ?'

इसी तरह हर लड़के से पंडितजी खोद-खोदकर पूछते और तब अंदर आने देते।

उसके बाद ही शशधर। शशधर सरकार उस दिन भी लेट था।

पंडितजी ने कहा, छी शशधर, तुम रोज इसी तरह देर करोगे ? तुम लोग अगर विद्यार्थियों के सामने इस तरह देर करके आओगे तो किसे देखकर ये लोग सीखेंगे।'

शशधर सरकार के शर्म लिहाज नहीं थी। गेट के अंदर आते ही

पंडितजी ने कहा, तुम्हारी वजह से तो लड़कों के आगे मेरा सर नीचा हुआ जा रहा है। तुम भी क्या हो! जरा जल्दी स्कूल चले आओगे तो क्या आफत आ जाएगी?

स्कूल के अन्दर आते ही टीचर्स कामन रूम में बगला टीचर गिरीश दास ने कहा 'क्यों शशधरबाबू पंडितजी ने पकड़ लिया न?'

शशधर बाबू तब पंखे के नीचे खड़े पसीना सुखा रहे थे।

उसने कहा अरे तुम भी किसकी बात करते हो! पंडितजी ने कहा और मैंने सुन लिया मामला चुक गया। कल पंडितजी महाराज की लड़की मर गयी और आज ठीक वक्त पर स्कूल आ पहुंचे। पागल है पागल। इस नशे की भी बलिहारी है भाई। बड़े से बड़ा नशेबाज भी किसी किसी दिन नशा करना भूल जाता है लेकिन अपने पंडितजी महाराज तो देखना हूं किसी बड़े से बड़े नशेबाज से भी ज्यादा है—

पंडितजी तब तक सीधे भवरंजन के कमरे में जा पहुंचे थे। एक कागज पर जो जो लेट आए थे उनका नाम दर्ज करके उसके हाथ में थमाते हुए बोले यह लो आज ये लोग लेट आए थे तुम इन लोगों को बुलाकर जिरह करो

फिर कहने लगे ऐसा किए बिना तुम स्कूल नहीं चला पाओगे भव जब मैं हेडमास्टर था तो तुम लोगों के साथ मैंने यही किया था अब तुम हेडमास्टर हो, तुम्हें भी ऐसा ही करना चाहिए। और अगर ऐसा नहीं करते हो तो मेरा इतना मुश्किलों से बनाया स्कूल धूल में मिल जाएगा कहे देता हूं

भवरंजन ने कागज लेकर पंडितजी की ओर ताकते हुए कहा आज के दिन आप स्कूल क्यों चले आए पंडितजी आपके घर इतनी बड़ी मुसीबत आयी है

लेकिन यह सब बातें सुनने का वक्त नहीं था पंडितजी के पास। कितना काम बाकी पड़ा है। लड़कों के पीने के लिए पानी का इंतजाम हुआ है या नहीं उन्हें देखना पड़ेगा। हाजिरी के रजिस्टर में देखना

होगा कि कौन-कौन मास्टर आज नही आया। पडितजी का काम ही काम है। जिधर देखना भूल जायें उधर ही गडबड हो जाती है

पडितजी तब तक कमरे के बाहर चल गए थे।

हा तो जमाई एक दिन नाती को लेकर आ पहुचा। दूर कहा दिलदारपुर है—जमाई वही रहता है। जमाई को देखकर शिवानी विलख विलखकर खूब रोयी।

निशापद ने कहा, 'अब और क्यो रोती हैं मा रोने से तो आदमी लौट नही आएगा। रोना बेकार है'

गया आदमी वापस नही आता। लेकिन इसीलिए गृहस्थी तो किसी के लिए रोती बैठी नही रहती। वहा रसोई करनी पडती है, खाना पडता है सामाजिकता निभानी पडती है सब-कुछ ही करना पडता है।

निशापद एक दिन रुका था।

फटिक ने पूछा, 'नानीअम्मा, सुशील है? रानी है?'

नानीअम्मा ने कहा, 'हा बेटा, सब हैं'

मैं सुशील के घर जाऊगा'

लेकिन उसके घर जाने की जरूरत नही पडी। खबर पाते ही सुशील दौडा हुआ आया। देखते ही बोला, 'ओमा सर क्यो घुटा डाला?'

रानी ने सुशील के एक धौल लगायी। फिर बोली, 'छी छी ऐसा नही कहते? पता नही उसकी मा मर गयी है।'

फटिक ने कहा, 'देखो बाबा, सुशील कितना बुद्धू है। मा मरने पर सर घुटवाना पडता है न?'

निशापद ने कहा, 'हा रे, तू खूब चालाक है। जाकर अपनी अम्मा से

पूछ एक कप चाय मिलेगी या नही ?'

फटिक दौड़कर रसोईघर म गया । बोला 'नानीअम्मा, बाबा के लिए चाय नही दोगी ?

चाय ! नानीअम्मा अपने ही गम से बेहाल थी । जमाई के लिए नाश्ते का इतजाम कर रही थी । लेकिन चाय की बात दिमाग म ही नही आयी । दौडी दौडी वासती क यहा पहुची ।

'बहू तुम्हारे यहा चाय होगी जमाई चाय पीता है मैं बनाना ही भूल गयी

वासती न कहा, आप परशान न हो काकीमा मैं अभी चाय बना कर भिजवाती हू ।

हा तो बहू की वजह स उसकी बात रह गयी । तब तक फटिक बगीचे की ओर निकल गया था ।

निशापद न पुकार लगायी अरे फटिक

आवाज कान मे जाते ही फटिक ने कहा, 'बाबा पुकार रह है मैं चलू भाई

'कहा था अब तक '

कहकर चारो ओर अच्छी तरह देख भालकर जेब से सिगरेट निकाली । फिर फटिक स कहा 'कही स दियासलाई ला सकता है

रसोई म नानीअम्मा क पास जाकर फटिक ने कहा नानीअम्मा दियासलाई दो, बाबा सिगरेट पियेंगे

बात निशापद के कान म भी गयी ।

उसन कहा, 'चल बुद्धू नानीअम्मा स कहना चाहिए कि मैं सिगरेट पीता हू !

फटिक न कहा लाओ बाबा, चाय ला मैं भी पिऊगा

प्लेट म थोडी-सी चाय डालकर निशापद न कहा "ल पी कपडो पर मत गिराना, पी जा ।

अचानक तभी पडितजी अन्दर घुस । साथ ही साथ सिगरट का धुआ !

हाथ से परे हटाते हुए निशापद ने फटिक से कहा 'उठ उठ, तेरे नाना आ गए '

लेकिन पंडितजी की नजरों से कुछ भी छुपा नहीं रह सका। जमाई का सिगरेट पीना भी उन्हें अच्छा नहीं लगा और फटिक का चाय पीना भी उन्हें बुरा लगा।

कैसे हो निशापद ? रात को नींद आयी थी अच्छी तरह ?'

निशापद ने कहा 'मुझे नींद वीद की बीमारी नहीं है, बिस्तर पर लेटा और सोया।'

पण्डितजी ने कहा, 'फटिक को भी चाय पीने की आदत डाल दी है क्या ?'

निशापद ने कहा 'आपकी लड़की भी चाय पीती थी, उसी ने इसकी भी आदत डाल दी '

'पढ़ाई लिखाई करता है कुछ ?'

निशापद ने कहा 'पढ़ाई ! राम का नाम लीजिए अरे यह मेरी ही बात नहीं सुनता है। दिल्दारपुर में तो मुझे अपने काम काज से ही फुरसत नहीं मिलती, लड़के की पढ़ाई लिखाई कब देखूं ?'

फटिक बोल उठा नानाजी, मैं दूसरा भाग पढ़ लेता हूँ '

तू चुपकर तो मुझे उस्तादी दिखलाने की जरूरत नहीं है। आपकी लड़की तो कुछ देखती नहीं थी और मुझे भी दम मारने की फुरसत नहीं है एकदम हरिया होता जा रहा है। दिल्दारपुर जगह भी ठीक नहीं है '

पंडितजी ने कहा 'इसे अब यहीं छोड़ जाओ मैं देखूंगा इसे '

यही ठीक रहेगा, आपके पास ही ठीक रहेगा, हरामजादा मेरी तो बात ही नहीं सुनता।

जाते वक्त निशापद ने सास के पांव छूकर प्रणाम किया।

शिवानी की आँखों से आंसू बह रहे थे। उसकी इकलौती लड़की। विवाह के बाद से वही एकमात्र सहारा थी। कितनी मुश्किलों से,

कितनी मेहनत करके उसे पाला पोसा यह बात पडितजी हो क्या कोई भी नही जान पाया । इस बल्रामपुर म पडितजी को सभी पहचानत है लेकिन इस ख्याति के पीछे और भी किसी का महत्त्वपूण हाथ है यह बात किसी क दिमाग म नही आयी ।

निशापन्द ने कहा रोइए नही मा । रोकर और क्या करेंगी मैंन इलाज म तो कोई कमी रखी नही—दवा और डाक्टर म ही करीब पाच सौ रुपया खच हो गया मेरे पास सारा हिसाब है ।

शिवानी इस बार जवाब देती ।

उन्होने कहा हम लोगो को जरा पहले खबर देत तो हम लोग एकबार जाते

निशापन्द बोला जाकर वहा करती क्या ? बेकार पसा बरबाद होता और डाक्टर साल दोनो हाथो रुपया लूटत

फिर भी आखिर मा बाप का जी है बेटा आखिरी वक्त म लडकी की सूरत तो देख लेती ।

निशापन्द ने कहा बिलकुल भी समय नही था। आपकी लडकी क्या आपके बारे म सोचती थी कभी ? बहुत खराब स्वभाव था उसका । म कितना ही कहता कि मेरे लिए बिना खाए पिए न बठी रहा करो लेकिन वह काहे सुनन लगी ? तभी तो पेट म अल्सर हो गया था

कहकर निशापन्द ने सास के पाव छुए और निकल पडा ।

जाते वक्त बोला बाबा स मुलाकात नही हो पायी उनस कह दीजियगा

मथुरा साहू न जब जमीन दी थी रुपया लिया था तब कहा था गौर तुम्ही इसक फाउण्डर हो जाओ तुम्ही इसके प्रतिष्ठाना हा लो

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन गोविन्द चक्रवर्ती ने भी यही कहा था। कहा था, हम लोग स्कूल के पट्रन रहेंगे, असल म फाउण्डर तो तुम्हें ही होना चाहिए ,

लेकिन गौर पडितजी ने कहा था नहीं साहजी इन झमेला म मुझे न घसीटिए लड़को को पढा लिखाकर कुछ बना सकू उसी मे मैं अपना काम पूरा समझूगा ,

तो फिर इसी तरह से कागज तैयार हुए। गोविन्द चक्रवर्ती और मथुरासाह दोना पीढी दर पीढी फाउण्डर टस्टी रहेंगे और गौर पडित जी हागे हेडमास्टर।

गौर पडितजी न कहा 'आप लोग मरे ऊपर हैं यही मेरा भरोसा है—आफत मुसीबत म आप ही लोग मरा सहारा हागे। मैं आप लोगो की छत्रछाया म काम करता रहूँगा।

लेकिन दो जनो क रुपये से क्या इतना बडा स्कूल बनता है ? यह गौर पडितजी कितनी बार कधे पर झोली लटकाकर लडको को साथ लिए कितन ही मेलो म गए हैं।

मेले मे लोगो को समझात, 'तुमम से हर आदमी एक एक ईट का दाम दे एक ईट का दाम है दो पैसे। दो पसा दन से मेरी पाठशाला बन जाएगी लाओ हर आदमी दो दो पसा निकालो।

अवन्ती अभी हुई ही थी। लडकी को गोद मे लिए शिवानी सारे दिन पति की राह देखती बठी रहती। सुबह के निकले हैं घर से जरा सा चिउडा और लाई खाकर सारा दिन निकाल दिया।

रात को जब घर लौट तो साथ मे झोली भर पसे थे।

हाँ जी ये पसे कस हैं ?'

'तुम औरत जात यह सब नही समझोगी ,

समझ नही है, लेकिन दिन भर इस लडकी को लिए कैसे काटू तुम्ही कहो बेचारी चार दिन से बुखार मे पडी है ,

'बुखार हो रहा है तो वैद्यजी को क्या नही बुलवा लिया। कोई चूण

सबका अपमान समझते हैं एक की इज्जत सबकी इज्जत है।'

उस दिन गौर पण्डितजी की लड़की अवता के विवाह म सब लोग जी जान से जुटे थे। इन बातों को क्या बलरामपुर के लोग भूल सकते हैं ?

निशापद ने आते वक्त कहा था 'आप फटिक को यहा रख रही हैं बाद म पता चलेगा।

सुनकर शिवानी को अजीब लगा।

उन्होने पूछा था क्यो बटा ? यह तो खब सीधा लडका है '

निशापद ने कहा था सीधा ? देखिएगा कसा सीधा है। अभी ही मेरे हाथ से छीनकर सिगरेट फूकने है बाबूसाहब बाद म बडा चिल्म न पकडे—

'बडी चिल्म माने ?

शिवानी की समझ म बात नही आयी। निशापद ने समझा दिया। उसने कहा बडी चिल्म नही जानती ? बडी चिलम माने गाजा। बडा होकर यह साला जरूर गाजा पिएगा। भले घर म कुलागार पदा हुआ है।

जमाई की बात सुनकर शिवानी मन ही मन सिहर उठी। बोली 'लेकिन बटा तुमने उसे जरा अच्छी सीख क्यो नही दी ?

निशापद ने कहा था, अरे मैं अपना कारोबार सम्हालू या लडके को देखू ? आपकी लडकी तो किसी मतलब की नहा थी आपकी लडकी ने अगर फटिक की ठीक-ठीक देखभाल की होती तो यह हाल होता ?'

'तुम अवती से देखने के लिए कह सकते थ !

निशापद ने कहा था कहना माने झगडा। बाप रे क्या झगडालू

थी आपकी लडकी। वह मेरे साथ झगडा करती या लडके का बनाती ?'

इतना सुनकर शिवानी को जो समझना था उन्होंने समझ लिया। आखो म आसू लिए ही सब समय लिया।

लेकिन गौर पडितजी ने कहा था, 'ठीक है फटिक को यही छोड जाओ। मैं ही उसे पालूगा '

'बडी अच्छी बात है। आपका नाती है आप पालें। इसम मैं क्या कह सकता हूँ ?'

निशापद उस दिन फटिक को छोडकर गया तो फिर कभी उसने खबर नही ली।

गौर पडितजी ने उसी दिन स फटिक को पढाना शुरू कर दिया।

हर रोज सुबह गौर पडितजी अपने घर के चबूतरे पर लडको को लेकर बठते। इसी तरह एक दिन निमाई साहू भी इसी चबूतरे पर बैठकर पढ गया है। रानी क पिता नरेन चक्रवर्ती भी पढ गए। यह सब भवरजन भी इसी मिट्टी के चबूतरे पर बठकर पढ गया है। शिवानी सुबह उठकर गोबर से चबूतरा लीप देती। बाद म चबूतरा सूखते-सूखते सब एक एक कर स्लेट-पेंसिल और कापी किताब लिए आ पहुचते। लेकिन उसके भी काफी पहले पडितजी गायत्री मत्र का जाप करके दिनभर के लिए तयार हो लिए होते।

अरे हाँ कैलाश किधर है ? कैलाश नही आया आज ?'

बिनू आ गया है रानी आ गयी सुशील आया। रणवीर आया। और कोई आने को बाकी नही रहा। सिफ कैलाश नही आया। कैलाश तो एसा नहीं करता। पढाने-पढाते गौर पडितजी जाने कस अनमने म हो गए। आखिर कैलाश को हुआ क्या ?

पढाने-पढ[illegible] गौर पडितजी अदर गए। शिवानी तब रसोई घर म खाना बनाने म मशगूल थी।

'अरे सुनती हो ? किधर गयी ?'

खाना बनाते-बनाते शिवानी ने मुडकर देखा। फिर पूछा, 'क्या

हुआ ?'

'अरे कैलाश नही आया आज ?'

शिवानी ने कहा, 'कैलाश नही आया तो मैं क्या करूँ ?'

गौर पडितजी ने कहा, 'नही वैसे ही तुम्हें बतलाने आया।'

मुझे बतलाने से क्या फायदा ? मैं क्या कैलाश को बुलाने जाऊगी ?'

पडितजी ने कहा, यह देखो तुम फिर नाराज होने लगी। मैं क्या नाराज होने की बात कर रहा हू। कह रहा हू कि कैलाश नही आया। और तो कुछ नही कहा तुमसे। एक लडका रोज आता है आज नही आया। चिन्ता करने की बात नही है ?

शिवानी ने कहा, अब और कोई नही आएगा तुम्हारे पास। आए भी क्यो ? सब बच्चे ही तो हैं। इतनी मारपीट करने पर कोई आएगा ?'

मारपीट की बात सुनने के बाद गौर पडित वहाँ और नही रुके। चबूतरे पर बठे सबके सब अभी भी आगे पीछे हिल हिलकर पढ रहे थे। गौर पडितजी वहा जाकर फिर से अपने आसन पर बठ गए। यह भी हो सकता है। शिवानी ने जो बात कही हो सकता है वही ठीक हो। लेकिन वहा नरेन ने पढा निमाई पढ गया विनोद पढ गया। सभी तो उन्हे देखते ही पैर छूकर प्रणाम करते हैं। सब उनकी श्रद्धा करते है। मारपीट के लिए अगर ये लोग नाराज होते तब क्या इनकी इतनी श्रद्धा करते ? तब क्या आज भी रास्ते मे दीख पडने पर पैर छूकर प्रणाम करते ?

पडितजी उठ पडे। बोले तुम लोग पढो, मैं अभी आया—'

कहकर उठे। उठकर चबूतरे की सीढियो से उतरकर सदर दरवाजे की ओर गए। वहा रसोईघर की ओर देखकर आवाज लगायी, अरे सुन रही हो मैं जरा बाहर जा रहा हूँ थोडे देर मे वापस आ जाऊँगा।'

भोर होकर सूरज निकल चुका था। सामने के पोखर के पास से ही रास्ता था। रास्ते तक आते ही काली की मा दीख गयी।

'अरे काली की मा, इतने सबेरे-सबेरे कहा जा रही हो ?'

पडितजी की आवाज सुनकर काली की माँ ने लम्बा सा घूघट निकालकर जमीन पर सर टेका।

'बस-बस काली की माँ ! काम-काज कैसा चल रहा है ?'

काली की माँ का चेहरा जैसे करुण हो उठा।

बोली, 'अरे पडितजी, आपके पास ही आ रही थी अपने नाती के लिए कहने आयी थी।'

तुम्हारा नाती ? काली का लडका ? काली के लडका कब हुआ ? मैंने तो नही सुना कभी ? कौन सी क्लास मे पढता है ?'

'अभी पढता नही है पडितजी। अबकी भरती करा दूँगी। लेकिन आप तो काली की हालत जानते हैं, काली आजकल नन्दी बाबू की आढत म काम करता है। जो तनख्वाह पाता है उससे दोनो टेम का खाना नही जुटता। आप अगर दया करके नाती को फ्री कर देते।'

गौर पडितजी ने कहा, 'लेकिन इसके लिए मुझसे क्यो कह रही हो ? फ्री करने का मालिक क्या मैं हूँ, काली की माँ ?'

काली की माँ न कहा, 'जी स्कूल आपका ही है, आप ही ने स्कूल बनाया है।'

गौर पडितजी ने कहा, 'यह सब फीफ्री मैं नही कर पाऊगा, जब स्कूल बनाया तब बनाया। अब भव हेडमास्टर है। निमाई साहू प्रसीडेंट है, नरेन चक्रवर्ती सेक्रेटरी है। स्कूल चलाने के लिए कमिटी है। वे ही लोग सब करते हैं मैं कौन हूँ ? उन्ही के पास जाओ।'

काली की माँ ने कहा, नही पडितजी, वह सब मैं नही जानती लोग जानते हैं आप ही सब-कुछ हैं, आज भी सब गौर पडित का स्कूल कहते हैं—मेरे नाती को फिरी' करना ही पडेगा।'

गौर पडितजी का मन जैसे थोडा सा पिघला। बात ठीक ही है, बलरामपुर के लोग अभी भी गौर पडित का स्कूल कहकर ही पुकारते हैं। कौन नही जानता कि पडितजी ने स्कूल के लिए क्या किया है।

वलरामपुर यूनियन के सरदार थे निमाई साह। बाप के आगे 'बलराम-पुर वैरायटी स्टोर्स' की शुरुआत हुई थी। दाल चावल, किरासिन से लेकर धीरे धीरे सभी कुछ आ गया। बाप मथुरा साह के पास पैसा था लेकिन वह खुद धर्मभीरु आदमी थे। जैसे रुपया आता गया, कारबार में जैसे बढ़ोतरी हुई, उसी तरह दान दक्षिणा भी की। इसी से आखिरी दिनों में ग्रामवासियों का कुछ भला करने की इच्छा हो गयी। साथ में गोविंद चक्रवर्ती को ले लिया। स्कूल की बिल्डिंग के लिए जमीन दी साथ ही दूसरे चार लोगों से पैसा या और दूसरी तरह से मदद करने को भी कहा। मथुरा साह की बात पर ही और भी कई लोग स्कूल के मामले में आगे बढ़े। पहले दो मील दूर कदमतल्ला के स्कूल में बलरामपुर के लड़कों को पढ़ने के लिए जाना पड़ता था। बारिश में कीचड़ से लथपथ हो जाते गरमी के दिनों में लड़के सर फाड़ती धूप से परेशान हो जाते। बलरामपुर स्कूल बनने पर यहां के लड़कों ने जैसे चैन की साँस ली।

जब झाड़ जंजाल साफ करके स्कूल की इमारत ऊँची उठने लगी तो सभी पूछने लगे यहां क्या हो रहा है भाई?

जो मिस्त्री काम कर रहे थे वे लोग कहते गौर पंडितजी की पाठशाला।

तभी से यह नाम ही चला आ रहा है। जब पाठशाला की नयी इमारत के ऊपर बड़े बड़े हरफों में लिखा गया—बलरामपुर हाई स्कूल तब भी लोग यही कहते गौर पंडित की पाठशाला। कागज पत्रों में जो भी नाम रहा हो लोगों की जबान पर हमेशा यही नाम चलता रहा।

गौर पंडितजी कहते अरे तुम लोग इसे मेरी पाठशाला क्यों कहते हो? इस स्कूल का मालिक क्या मैं हूँ? स्कूल का सेक्रेटरी है प्रेसीडेंट है मैनेजिंग कमेटी है वे ही लोग सब-कुछ हैं। मैं कौन हूं? मेरे पास क्या आए हो? उन लोगों के पास जाओ अगर जरूरी हुआ तो वही लोग तुम्हारे लड़के के लिए फ्री शिप कर सकते हैं—

सिर्फ यही नहीं। लड़का फेल हो गया गार्जियन गौर पंडितजी के

पास आकर रोना शुरू करते, पंडितजी पंडितजी हैं ?'

रानी बाहर आकर दरवाजा खोल देती।

सेक्रेटरी की लड़की को गाँव का हर आदमी जानता था।

वे लोग पूछते, 'अरे रानी बिटिया, पंडितजी कहाँ हैं ? घर में हैं ?'

रानी कहती, 'नाना नहीं हैं '

'गौर पंडितजी तुम्हारे नाना हैं ? तुम तो नरेन चक्रवर्ती की लड़की हो।'

रानी कहती, 'बाबा तो उस मकान में हैं।'

'तब तुम इस मकान में कैसे हो ?'

रानी कह देती, 'वाह मैं यहाँ नहीं आऊँगी ? यह मेरे नाना का घर जो है नाना इस वक्त नहीं हैं।'

घर पर मुलाकात न होने पर रास्ते में मिल जाते।

'पालागन पण्डितजी। मैं कालीपद हूँ। कालीपद विश्वास।'

गौर भट्टाचार्यजी पहचान लेते। कहते 'समझा, तुम्हारा लड़का तो फेल हो गया है '

कालीपद विश्वास कहता 'जी हाँ पंडितजी, इसीलिए अभी-अभी आपके घर गया था, नरेन चक्रवर्ती बाबू की लड़की रानी, उसी ने दरवाजा खोला था, उसने बतलाया, नाना, घर पर नहीं हैं।'

गौर पंडितजी ने कहा, 'हाँ मेरी नातिन है '

कालीपद विश्वास ने कहा, 'जी, मैं अपने लड़के के लिए ही आपके पास आया था, पंडितजी, उसे पास करवाना पड़ेगा, नहीं तो पूरा साल खराब हो जाएगा।

गौर पंडितजी ने कहा, लेकिन जब फेल हुआ है तब एक साल तो खराब होगा ही। अब की बार अच्छी तरह से पढ़ने को कह देना अपने लड़के से '

कालीपद विश्वास ने कहा, 'जी, कसूर लड़के का नहीं है, एकदम

मिनशन के ठीक पहले बेचारे को टाइफाइड हो गया था। दवा-ग्लाक्टर करते-करते पस्त हो गया पंडितजी।'

पंडितजी ने सर घुमाया। फिर बोले, तुम्हें परेशानी हुई, लेकिन मैं क्या कर सकता हूँ? तुम्हारे फेल लडके को पास करा दूं? मैं यह सब नही कर सकता हूँ मैं कौन हू? स्कूल का हेडमास्टर है प्रेसीडेंट है सेक्रेटरी है मनेजिंग कमिटी है ये ही लोग सब कुछ हैं। उन लोगों के पास जाओ मैं कौन हू?'

लेकिन यह सब कहने से ही कौन सुनता है?

उस रोज पंडितजी संस्कृत की क्लास ले रहे थ। 'कृ' के धातु रूप किसी को याद नहीं थ। एक एक करके सबसे पूछने लगे। क्लास सिक्स के लडके थ।

और पंडितजी ने पूछा ए तू बोल तू '

छाँट छाँटकर जो लडके पीछे की बेंचा पर बैठते उन्हीं से पूछने लगे, 'क्यो, तुम लोग क्लास सिक्स के लडके हो कृ का धातु रूप नहीं बतला सकते तो बडे होकर क्या करोगे? इम्तहान मे पास कैसे होओगे?'

उसके बाद ही भाषण शुरू हो गया। यह भाषण पंडितजी हर क्लास के लडको को देते आए हैं।

अचानक दरवाजे की ओर नजर गयी। काली का नाती डरा खडा था।

क्यो रे श्रीमन्त है न? आ अन्दर आ—अंदर आ '

श्रीमंत बाहर खडा था। किसी भी तरह अन्दर नहीं आ रहा था।

काफी कहने के बाद धीरे धीरे अदर आया। आते ही रोने लगा।
आँखों से लगातार आँसू झरने लगे।

'क्यों रे क्या हुआ? क्लास मे क्यों नही आ रहा था?'

श्रीमत ने रोते रोते कहा, 'सर, मेरा नाम काट दिया है'

'क्यों? नाम क्यों काट दिया गया?'

कहकर गौर पडितजी श्रीमत की पीठ पर हाथ फेरने लगे।

'बोल, क्या हुआ था? तेरे बाबा फीस नही भर पाए?'

श्रीमत चुप रहा। गौर पडितजी ने कहा 'मैंने तो दादी की
दरखास्त सेक्रेटरी को दे दी थी, फिर भी नाम काट दिया?

अचानक बाहर जनार्दन ने टन्-टन स्कूल का घटा बजा दिया?
यानी वह क्लास पूरी हो गयी।

गौर पडितजी ने कहा, 'चल मेरे साथ चल, मैं देखता हूँ।'

श्रीमत को साथ लिए पडितजी सीधे आफिस में जा पहुँचे। हरि-
लाल स्कूल का क्लर्क था। हरिलाल फीस लेकर हिसाब रखता। मोटे मोटे
सारे काम वह अकेले ही करता। हरिलाल उस वक्त हिसाब का रजिस्टर
देखने मे मशगूल था। और एक हाथ मे थी जलती बीडी। पडितजी को
देखते ही झट से बीडी फर्श पर फेंककर जूते से मसल दी। हाथ का
काम छोड उठ खडा हुआ।

'हरिलाल, इस श्रीमत का नाम तुमने काट दिया है?'

हरिलाल जैसे सकपका गया। एक तो पडितजी ने उसे बीडी पीते
देख लिया था, ऊपर से ये शिकायत। झटपट क्लास सिक्स का अटेण्डेन्स
रजिस्टर उसने निकालकर दिखलाया। फिर कहा, 'जी, उसकी छै
महीने की फीस बाकी है'

पडितजी ने कहा, 'फीस बाकी है इसलिए नाम ही काट दिया?
पहले एक नोटिस क्यों नही दिया? नोटिस दिए बगैर ही नाम काटना
चाहिए? यह तुम्हारी कौन-सी अक्ल है हरिलाल? मैंने भी पहले स्कूल
चलाया है, तब नोटिस दिए बगैर किसी का नाम काटा? तुम तो

पुराने आदमी हो, तुम तो सब देखते आए हो—'

हरिलाल ने कहा, जी मैंने हेडमास्टर साहब से पूछा था, उन्होंने नाम काटने को कहा।'

'किसने ? भव ने ? भव ने नाम काटने को कहा ? लाओ तो हाजिरी का रजिस्टर मुझे दो '

कहकर सीधे भवरजन के कमरे म गए। वहाँ तब नरेन चक्रवर्ती सेक्रेटरी भी बैठे थे।

'अरे नरेन तुम भी हो, अच्छा ही हुआ। कहकर हाजिरी का रजिस्टर खोलकर दिखलाया, 'यह देखो, श्रीमत की हाजिरी, क्लास सिक्स इसका नाम काट दिया है।'

भवरजन न देखा। सेक्रेटरी नरेन ने भी देखा।।

भवरजन ने कहा 'जी छ महीने की फीस बाकी थी इसीलिए नाम काट देने को कहा

सेक्रेटरी की ओर देखकर पडितजी न कहा, 'लेकिन एक महीने पहले मैंने तुम्हे श्रीमत की दरखास्त दी थी उसका क्या किया ?

'मुझे दी थी ?

'हाँ-हाँ, अच्छी तरह से याद करके देखो। श्रीमत की फी शिप की दरखास्त मैं खुद तुम्हारे घर आकर दे आया था, अच्छी तरह याद करके देखो—

नरेन चक्रवर्ती भट स अपना पोटफोलियो बेग खोलकर कागजा मे ढूढने लगे। ढेर सारे कागज थ। कोट के कागजात स्कूल के कागजात और भी बहुत-कुछ। आखिर म श्रीमत की दरखास्त भी निकली। वह हाथ म लेकर नरेन ने कहा, 'यह रही, मिल गयी—

गौर पडितजी ने कहा, तारीख देखो किस तारीख को दरखास्त दी थी ?

सचमुच तारीख मिलाकर देखा गया तो पता चला करीब एक महीने पहल सेक्रेटरी के हाथ म दरखास्त दी गयी थी।

'और इधर तुम लड़के का नाम काट बैठे हो। बेचारा रो रोकर आँखें फुलाए मेरी क्लास के बाहर खड़ा था। डर के मारे अंदर तक नहीं आ रहा था। इस तरह चलाने से स्कूल कितने दिन चलेगा? उसका नाम काटने से पहले एक नोटिस क्यों नहीं दिया?

'यह कौन-सी नीति है तुम लोगों की? मैंने भी तो स्कूल चलाया है, तब नोटिस दिए बिना कभी किसी का नाम काटा? तुम लोग तो पुराने विद्यार्थी हो, तुम लोग भी सब देखते आए हो'

मदरंजन ने धीमे से कहा, 'तब स्कूल छोटा था, उन दिनों की बात और थी पंडितजी, अब लड़के बढ़ गए हैं, सभी डिफाल्टर हैं, कितनों को नोटिस दूँगा'

'लेकिन ये लोग डिफाल्टर क्या जान-बूझकर हुए हैं? बाप की हालत खराब है, इसी से डिफाल्टर हो गए हैं।'

उसके बाद नरेन की ओर देखकर बोले, 'और तुमसे भी कहता हूँ, एक महीने पहले दरखास्त मिली तुम्हें, वह इस तरह दबाकर कैसे रख ली?

नरेन चक्रवर्ती ने कहा, 'फ्री शिप की दरखास्त अकेले श्रीमंत की नहीं है पंडितजी। आपने कितनी फ्रीशिप की दरखास्तें मेरे हाथ दी हैं! यह देखिए'

कहकर दरखास्तों का एक बंडल बैग से निकालकर दिखलाया।

फिर कहा, 'इतने लड़कों को अगर फ्रीशिप मिल जाए तो स्कूल किस तरह चलेगा आप ही बतलाइए? स्कूल भी तो चलना चाहिए। इतने बड़े स्कूल का खर्चा भी तो है'

और पंडितजी ने कहा 'स्कूल का खर्चा है मानता हूँ। इतने सारे टीचरों को तनख्वाह देनी पड़ती है इसका खर्च नहीं है? लेकिन स्कूल का खर्च है इसीलिए क्या जिनकी फीस देने की सामर्थ्य नहीं है और जो अच्छे विद्यार्थी हैं, उनसे तुम जबर्दस्ती फीस लोगे? स्कूल परचूनिए की दुकान तो है नहीं, ईंट-चूने या सुरखी की दुकान भी नहीं है। स्कूल का काम

शिवानी कहती, लेकिन इसीलिए क्या लड़के के आगे उसके बाप को गधा कहोगे ? गाली दोगे ?'

गौर पंडित कहते, 'लेकिन तुम्हारा जमाई क्या आदमी है ? आदमी होता तो तुम्हारे आगे बीड़ी पीता ? आदमी होता तो तुम्हारी लड़की को मार डालता ? मैंने गधा कह लिया तो कौन बुरी बात कह दी ? और भी बहुत-कुछ नहीं कहा यही क्या कम है '

शिवानी कहती, लेकिन तुम्ह भी तो सारी दुनिया खोजने के बाद यही जमाई मिला था। तब तो आकर तुम्हीं ने कहा था—मेरा नाम सुनकर उसने लड़की देखने तक को मना कर दिया। तब ठीक से खोज खबर क्यों नहीं ली ? जो स्कूल चला सकता है, इतने बच्चों को पढ़ा सकता है, वह घर नहीं चला सकता।'

गौर पंडित कहते, मैं क्या घर नहीं चला रहा ? मैं क्या तुम्हें बिना खाए पिए रखता हूँ ?'

शिवानी कहती मैं खा पीकर सुख से हूँ या शोक कर रही हूँ यह मेरे भगवान् ही जानते हैं। बेकार मेरी बात क्यों उठाते हो ? मेरे सुख को कभी सोचा है तुमने ? मैं मर गयी या जिन्दा हूँ, यह देखने की तुम्हें क्या जरूरत ? तुम्हारा स्कूल ठीक तरह चलता रहे तो सारी दुनिया ठीक है।

रानी इसके बाद नहीं बैठ पाती। जल्दी से शिवानी के पास पहुँचती। कहती 'नानी अम्मा, अब बस करो। बहुत डाँट लिया दादू को अब बस करो '

रानी की बात पर जैसे शिवानी को होश आता। फिर वहाँ न रुकती। सीधे रसोईघर में जाकर अपने काम में लग जाती।

रानी भी रसोईघर में जा पहुँची।

कहने लगी, 'नानी, तुम हमेशा नाना को ही क्यों डाँटती हो ?'

शिवानी ने कहा तू चुप रह, तू और परेशान न कर मुझे

रानी भी कहती 'वाह, खुद ही तुम मेरे नाना को डाँटोगी और मैं चुप किए बैठी रहूँ ?'

शिवानी ने कहा, 'तुझे नहीं दीखता कि तेरे नाना बिना माँ के लड़के को कैसे डाँटते रहते हैं ? बेचारा अभी बच्चा ही तो है वह अभी से इतना सब पढ़ सकता है भला ? सारे दिन पढ़े बैठकर, खेलेगा-कूदेगा नहीं ? सभी क्या तेरे नाना की तरह बूढ़े हैं ? बच्चा की इच्छा उसमें कुछ भी नहीं है ?'

रानी ने कहा, 'लेकिन पटिल आजकल बहुत शैतान हो रहा है।'

शिवानी ने कहा, 'लड़के जरा शैतान होते ही हैं। लेकिन इसीलिए क्या हर वक्त उन्हें मारना-पीटना चाहिए ? तुझे तो नहीं पीटते। उस बेचारे का बाप यहाँ नहीं है इसलिए बस इस तरह डाँटना चाहिए ? हजार हो, है तो पराया लड़का '

तभी अचानक पंडितजी की आवाज सुनाई दी, 'रानी, ओ रानी '

रानी दौड़कर बाहर आयी। उसने पूछा, क्या बात है नाना ?'

रानी को एक ओर बैठाकर पंडितजी ने पूछा, 'क्यों री तेरी नानी क्या कह रही थी तुझसे ? लगता है खूब गुस्से हो गयी है मेरे ऊपर ?'

रानी ने कहा, 'तुम्हारा ही तो कसूर है नाना, तुम पटिल को इस तरह क्यों मारते हो ? मुझे तो कभी नहीं मारते, मैं भी तो शैतानी करती हूँ।'

नाना बोले, 'तुझे क्यों मारूँगा बेटी, शैतानी करती है तो क्या हुआ, लेकिन मन लगाकर पढ़ती भी तो है। जो मन लगाकर पढ़ता है मैं उससे कुछ भी नहीं कहता। तुम तो स्कूल में हमेशा फर्स्ट आती हो। तुम तो मेरी रानी बिटिया हो।'

कहकर पंडितजी रानी के सर पर स्नेह से हाथ फेरने लगे।

रानी उठते-उठते बोली, 'अच्छा अब बहुत लाड़ करने की जरूरत नहीं है, तुम्हें स्कूल को देर हो जाएगी तो नानी मुझे ही डाँटेंगी, जाओ '

पंडितजी उठ खड़े हुए।

रानी भी उठी। कापी किताब और स्लेट लेकर उठते उठते बोली, 'नानी, मैं जा रही हू—

तब तक और सब जा चुके थे। सिर्फ फटिक किताब सामने रखे मन लगाकर पढ़ रहा था।

रानी अचानक उसकी ओर मुड़ी। फिर बोली, उठ-उठ बहुत पढ़ लिया अब और पढने की जरूरत नही है। अब उठ जाकर स्कूल जा, कितनी धूप निकल आयी है।

कहकर धीरे धीरे उसके सर पर धौल लगाने लगी।

फटिक नाराज होकर बोला 'तो मुझे मार क्या रही है ?'

रानी ने कहा 'खूब मारूगी तेरे लिए रोज मुझे डाट सुननी पडती है। तू न पढता है न लिखता है खाली शतानी करेगा और मैं बेकार डाट खाऊँ ?

तब तक नानी आ गयी। नानी ने भी कहा 'उठ उठ नहाने जा मैं खाना परोस रही हूँ, बाद म देर होगी तो खा नही पाएगा तेरा और तेरे नाना का खाना एकसाथ ही परोसे द रही हूँ

फटिक बोल उठा, देखती हो नानी रानी ने मुझे मारा है।'

नानी बोली 'अच्छा किया जो मारा। न पढना न लिखना सारे दिन शतानी करता फिरेगा। शतानी करगा तो मार नही खायेगा ? दीदी की तरह फस्ट हो सकता है दर्जे म ?'

फटिक उठा। बोला सब लोग मुझे मारते हैं। इसी तरह सब मारगे तो एक दिन मैं भाग जाऊगा कह देता हू '

नानी अम्मा ने कहा भाग जाएगा तो भाग न, कहा जाएगा भाग कर ? जरा मैं भी तो सुनू ? कौन से चूल्हे मे जाएगा ?'

फटिक ने कहा मैं बाबा के पास चला जाऊगा।'

रानी बोली 'ओ माँ, जरा से लडके की बुद्धि तो दखो नानीअम्मा' बाबा के पास जाएगा रास्ता देखा है ?'

नानी ने कहा जाए न बाबा के पास, जाकर देखे न वहां कैसा

लाड होता है। बाप जब पहुंचा गए तब से एक चिट्ठी भी नही डाली खबर लेने के लिए। बाप को अपने लडके का कितना ध्यान है सब मालूम हो गया '

'ओ रानी ओ रानी '

अचानक वासन्ती आ गयी। आकर इन लोगो को देख हैरान रह गयी।

फिर बोली, 'क्यो री, इतनी देर क्या ? स्कूल नही जाना ?

रानी ने कहा, देखो न माँ फटिक कह रहा है कि वह भाग जाएगा!'

'हूँ, यह कौन सी बात हुई काकी मां, भाग क्या जाएगा ? कहा भाग जाएगा ?'

काकी मां ने कहा, 'कहाँ भागकर जाएगा यह वही जाने। कहता है बाप के पास जाएगा। लेकिन बाप के मन म लडके के लिए कितनी माया है वह दीख गया। जाने के बाद से एक चिटठी तक नही डाली कभी कि लडका कैसा है। बाप भी जैसा मिला है।

वासन्ती ने कहा 'हूँ ? जाकर एक चिटठी तक नहीं लिखी जमाई ने ?

शिवानी ने कहा, लडकी से ही नाता था, लडकी ही जब चली गयी तो किसके लिए नाता रखेगा वह ? उसे क्या पडी है नाता बनाए रखने की ?'

वासन्ती न कहा जो गया वह तो गया ही, लेकिन लडका तो उसी का है।'

शिवानी ने कहा, 'वही तुम्हारे काका बाबू, जिन्दगी भर खाली स्कूल और स्कूल। घर म हम क्या खा रहे हैं, जिन्दा हैं या मर गए, वह तो कभी देखा नहीं। लडकी का ब्याह जैसा काम वह भी एक अच्छी जगह देखकर नही कर पाए, किससे क्या कहूँ वह, सब मेरा भाग्य '

पण्डितजी तब तक पोखर मे नहाकर आ गए, फटिक भी नहाने गया

था। वासती ने कहा, 'अब चलूँ काकी मा चल रानी चल—देर हो गयी

कहकर वासती लडकी को लेकर चली गयी।

बलरामपुर हाई स्कूल का शुरू म सिफ एक ही मकान था। सबसे पहले टीन की शड क नीच दो कमर बनाकर पडितजी की पाठशाला थी। उस टीन की शेड के नीचे बठकर गर्मी मे ताड के पड के पत्ते स हवा करते-करते पसीन स नहा जाते। तब लाग कहते थे गौर पडित की पाठशाला। उस टीन की शेड के नीचे बठकर ही वे एक बडे सस्थान का स्वप्न देखा करते। मन ही मन सोचते इस टीन की शेड की जगह एक दिन पक्का मकान होगा। लडक उस पक्के मकान म आकर आदमी बनेंगे। वह भी हुआ एक दिन। पक्का मकान ही बना। पक्की इमारत म आकर लडके पढने लगे।

विनोद उस वक्त विधुर था। विनोद की मा विधवा थी। विधवा होने क बाद इसी लडके को छाती स लगाए एक दिन गौर पडित के पावो म उसे रखकर उसन कहा, इसे आपके भरोसे छोडा पडितजी, आप ही इसकी देखभाल करेंग इसे अपना ही लडका मानें

विनोद तब इकहरे बदन का दुबला सा लडका था। उस देखकर पण्डितजी को बडा रहम आया। उन्होन कहा मैं कौन हूँ विनोद की मा? भगवान् की मर्जी होगी तो तुम्हारा विनोद आदमी बन जाएगा। यह जो स्कूल बना है यह क्या मेरी बहादुरी स हुआ सोचती हो? उसकी मर्जी होगी तो स्कूल चलेगा बडा होगा इसी तरह उसकी मर्जी हुई तो तुम्हारा लडका भी आदमी बनगा। उसी क भरोस सब कुछ समपण कर दो दयामो जिनका काम है वही करेंग तुम मैं तो सब

निमित है'

उसके बाद वही विनोद इसी स्कूल से पढकर वजीफा लेकर सदर पढने गया। वहाँ भी उसे वजीफा मिला। वहाँ से गया कलकत्ता। वहा बी० ए० पास किया। उसके बाद

एक दिन गौर पडित दौडे दौडे घर आए।

बडी बहू सुना, अपना विनोद कलकत्ता म बी० ए० म फस्ट आया है!'

खबर सुनकर शिवानी भी खुश हुई। बोली, 'आज उसकी मा होती तो उस बेचारी को कितनी खुशी होती'

गौर पडित के हाथ म अभी भी विनोद का खत था। उन्होने कहा, 'यह देखो, खबर पाते ही मुझे चिट्ठी लिखी है। लिखा है आपके आशीर्वाद से ही मुझे यह सफलता मिली है। अगले सप्ताह ही बलरामपुर आकर आपके श्रीचरणो का स्पश करूँगा। मैं आई० ए० एस० की परीक्षा म बठने की तयारी कर रहा हूँ। इति। आपका विनोद'

शिवानी को सुनाकर भी जैसे गौर पडित का जी नही भरा। खत हाथ म लिए लौट पडे।

शिवानी ने पूछा, 'अब फिर कहा जा रहे हो ?'

गौर पडित न कहा, तुम तो सिफ यही कहा करती थी कि मैं स्कूल-स्कूल करके पागल हूँ। अब समझा कि मैं स्कूल स्कूल करके पागल क्यो हुआ था। अब जाता हूँ चिट्ठी नरेन को पढा आऊँ।

'लेकिन इस वेवक्त निकलोगे ? खा-पीकर फिर चले जाते ?'

लेकिन तब तक पडितजी बाहर सडक पर जा पहुचे थे। बाहर सडक से ही चिल्लाए, 'नहीं-नही, खाना अभी नहीं। हा, तुम खा लेना। मुझे देर होगी। पहले सबको खबर द आऊ—'

उस रोज पडितजो जब घर वापस आए तो शाम हो आयी थी। उतनी देर मे बलरामपुर का कोई भी आत्मा यह जानने से बाकी न रहा कि गौर मास्टर के स्कूल का विनोद बिहारी बद्योपाध्याय कलकत्ता के

ालज की बी० ए० की परीक्षा म फस्ट आया है उस स्कालरशिप मिली ह और वह डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट होन की तयारी कर रहा है।

नरन चक्रवर्ती उस वक्त कोट म था। गौर पडित घर म अन्दर तक चले गए। नरेन न सही बहू तो है।

बहूरानी बहूरानी अरे किधर गयी बहूरानी ?

मासती खा-पीकर जरा आराम करन लेटी थी। बाहर आकर बोली क्या बात है काका बाबू ?

गौर पडित न जेब से विनोद का खत बाहर निकालकर दिखलाया यह देखो बहूरानी यह चिटठी पढकर देखो अपने विनोद ने लिखी है

कहकर खुद ही पढने लगे, श्री चरणेषु आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि मैं कलकत्ता विश्वविद्यालय की बी० ए० परीक्षा मे

कहकर खत की आखिरी लाइन तक पढकर सुनाई। फिर कहा देखा न बहूरानी तुम्हारी काकी मा तो हमेशा यही कहती है कि मैं स्कूल स्कूल करके ही पागल हू। अब समझना कि मैं क्यो स्कूल स्कूल करके पागल हुआ था। नरेन कोट से लौटे तो उस खबर देना, समझी ? सुनकर उसे खुशी होगी। भवरजन को मैं चिटठी पढा आया हू। तुम्हारी काकी मा को भी जनला आया हू तुम्हें भी दिखला दी अब पूरब पाडे की ओर जा रहा हू निमाई को भी खबर दे आऊँ उसके बाद

तभी जसे अचानक ध्यान आया पडितजी न पूछा रानी कहा है ?

बहू ने जवाब दिया, स्कूल गयी है।

ठीक है तो रानी स भी कह देना कि अपना विनोद फस्ट आया है

और स्कूल का वक्त नही था। वहा से ही सीधे बलरामपुर बरायटी स्टोस निमाई साहू क पास। निमाई साहू तब स्कूल कमिटी का प्रेसीडेंट था। सारे दिन काम काज के मारे फुरसत नही मिलती। उसके कई

कारोबार है। फिर भी उसी के बीच वक्त निकालकर स्कूल का काम भी देखता।

'अरे निमाई, निमाई हो क्या ?'

निमाई साह उस वक्त अन्दर के कमरे में हिसाब की बहियों के पहाड़ के बीच बैठा था। पण्डितजी की आवाज सुनते ही उठकर आया। बोला 'आइए पण्डितजी आइए क्या खबर है ?'

गौर पण्डित ने कहा 'नहीं मैं अभी बैठूंगा नहीं, खबर सुनी तुमने ? अपना विनोद था न जानते हो न विनोद को। हां वो वह बी० ए० में फर्स्ट आया है ? यह देखो मुझे चिट्ठी लिखी है '

कहकर जेब से खत निकालकर एक बार फिर पढ़ा। फिर कहा, देखो, यह हमारे स्कूल के लिए गर्व की बात है हम सबके लिए, बल्कि रामपुर के लिए गर्व की बात है।'

निमाई साह ने कहा 'तब तो स्कूल की छुट्टी होनी चाहिए। विनोद के सम्मान में एक दिन छुट्टी तो देनी ही चाहिए '

गौर पण्डित ने कहा 'नहीं वह ठीक नहीं होगा निमाई। छुट्टी देकर एक दिन का नुकसान एक दिन की पढ़ाई खराब होगी, इससे कोई फायदा नहीं होगा। इससे तो एक 'सर्कुलर' भेजकर सबको खबर करा दो। उससे लड़कों को प्रोत्साहन मिलेगा।'

कहकर जा रहे थे। निमाई साह पीछे पीछे दरवाजे तक पहुंचाने आया।

उसने कहा, 'एक बात कहनी थी पण्डितजी '

गौर पण्डित घूमकर खड़े हो गए। बोले, 'कौन सी ?'

'टीचरों ने एक ज्वाइंट दरखास्त दी है '

'कैसी दरखास्त ?'

लिखा है कि अब उनकी तनखाह बढ़ाए बिना काम नहीं चलेगा। चीज वस्तुओं की कीमतें बढ़ गयी हैं '

गौर पण्डितजी चमककर एकदम सीधे खड़े हो गये। फिर बोले,

क्यों ? तनख्वाह क्या बढ़वाना चाहते हो ? मैं भी तो टीचर हूँ। सुनाम तो कुछ भी नहीं करा उन लोगों ने। मैं अगर किसी तरह काम चला लेता हूँ तो वे लोग क्या नहीं चला सकते ? इनके अलावा वे लोग तो नोटस लिखते हैं ? प्राइवेट ट्यूशन करते हैं ? कोचिंग चलाने लगे हैं। उन्हें किस बात की कमी है ? यहाँ-वहाँ तनख्वाह बढ़ाने की जरूरत नहीं है। और तुम लोग तनख्वाह बढ़वाना भी क्या चाहते ? तुम्हारे मन में क्या है ?

निमाई शायद बोला, उस दिन मीटिंग में भी तो यह बात उठी थी। सबने यही कहा कि स्कूल का फीस रेट बढ़ गया है अगर उसमें आठ आने नहीं बढ़ा लिया जाए तो

अरे नहीं यह ऐसा काम नहीं करना निमाई। स्कूलों में मां-बाप की हालत तो तुम जानते नहीं हो। मैं सबकी हालत जानता हूं। किसी की हालत ऐसी नहीं है कि यही फीस दें नहीं तो रोज मेरे घर आकर क्या धरना देंगे ? सब अपने लड़के को भी पढ़ाना चाहते हैं—नहीं नहीं तुम लोग राजी मत होना—खबरदार यह काम न कर बैठना।'

कहकर सड़क पर आ गए। इस वक्त भी उनके दिमाग में विनोद की बात ही चक्कर काट रही थी। और किस किसको चिट्ठी पढ़ानी है यही सोच रहे थे। उन्होंने कहा अब चलता हूं निमाई और भी कई जगह जाना है

शुरू-शुरू में हर काम गौर पंडित से पूछकर किया जाता था। तब पंडितजी कमिटी के मेम्बर थे। टीचर्स के प्रतिनिधि की हैसियत से। गौर पंडितजी जैसा कहते वैसा ही होता।

लेकिन बाद में खटपट होने लगी।

अचानक किसी दिन शाम से पहले ही पंडितजी घर आ पहुंचते।

इतनी जल्दी तो कभी आते नहीं। शिवानी को अजीब लगता।

वह पूछती, क्यों, आज इतनी जल्दी चले आए ? आज तुम्हारी कमेटी की मीटिंग फीटिंग नही है ?'

रानी पास ही बैठी थी। उसने कहा, 'वाह, तुम्हें पता नही नानी अम्मा नाना ने तो कमेटी छोड दी है।

नानी अम्मा रानी की बात सुनकर हैरान थी। पूछने लगी, 'ओ माँ, तुझे किसने बतलाया ?'

रानी ने कहा उस दिन बाबा माँ से कह रहे थे, तभी सुना मैंने '

गौर पंडित न कहा, 'अरे नहीं, बात यह नहीं है, और कब तक मैं ही करता रहू, य सब जवान है नया खून है इनका, अब ये लोग भी कुछ काम-काज सीखें। मैं स्कूल चलाने के लिए हमेशा तो बैठा नही रहूँगा। तब ये लोग कैसे काम चलायेंगे ?'

फिर रानी की ओर देखकर बोले यह इस वक्त यहा ?

शिवानी न कहा, 'पता है, यह क्लास मे फिर फस्ट आयी है, वही कहने आयी थी '

'हूँ ?' पंडितजी अपना कुर्ता उतारते-उतारते रुक गए।

रानी ने कहा, 'हा नाना, सस्कृत म मुझे नब्बे नम्बर मिले हैं।

वाह यह लडकी जरूर मेरा नाम रखेगी लेकिन तेरे बाबा ने क्या कहा ? बाबा को मालूम है ?'

'बाबा अभी घर नही लौटे। स्कूल से आकर मैं सीधी तुम्हें बतलाने आयी हूँ। मुझे तुम क्या दोगे बोलो, तुमने कहा था, अब लाओ

पंडितजी हसने लगे, 'ठीक ही तो है, अब इसे कुछ देना चाहिए। तू क्या लेगी, बोल ?'

'मैं साडी लूगी ?'

'साडी ?'

रानी ने कहा हाँ साडी, मा मुझे साडी पहनने को नही देती। कहती है मैं अभी बडा नही हुई हूँ। अच्छा नानी अम्मा मैं भात नही

बिल्कुल सोचती ही नही है। लेकिन वह है किधर ? कहा है ?'

देखोगी उसे ? उधर देखो।'

कहकर अन्दर कमरे मे बिछे तख्त की ओर इशारा किया। बोली, 'देख लो '

वासती ने बाहर से ही अन्दर की ओर देखा। रानी एक साडी पहने काका बाबू के तख्त पर बेखबर सोयी थी।

ओ मा साडी कहा मिल गयी ? साडी किसने दी ?'

शिवानी ने कहा 'उसे डाटना मत बहू बेचारी को साडी पहनने का बडा शौक है

वासती ने कहा, अच्छा तो तुमसे साडी पहनने के लिए जिद कर रही थी ?

शिवानी ने कहा नही नही, तुम्हारी लडकी की आदत खराब नही है। सस्कृत म उसे नब्बे नम्बर मिले हैं। तुम्हारे काका बाबू ने कहा था कि फस्ट होने पर उसे कुछ देंगे। वह साडी साडी कर रही थी उन्होंने बाजार ले जाकर ।

वासती ने कहा सब काकी मा तुम्ही लोगो ने लाड कर करके इसका दिमाग मेरे पास जिद करने से साडी नही मिली, तब उसने तुम लोगो को पकडा—'

शिवानी ने कहा, अच्छा जाने भी दो उससे और कुछ न कहना। अभी सो रही है सोने दो बाद म स्कूल से लौटने पर यह पहुचा आयेंगे तुम जाओ

लेकिन इसने खाया पिया है ?

खाना क्या उसका बाकी है बहू ? मुझसे मागकर उसने खा लिया। यह सिर्फ तुम्हारे पेट से पैदा भर हुई है, लेकिन असल म वह मेरी ही लडकी है। तुम उसके लिए जरा भी फिक्र न करो।

लेकिन फटिक के आने के बाद से इस घर की सूरत बदल गयी। सेक्रेटरी नरेन का लड़का उसे बुलाने के लिए आने लगा। दोनों एक ही क्लास में पढ़ते—एक ही साथ अड्डेबाजी करते।

स्कूल से लौटने में देर होने पर शिवानी चिंता करती। शभु की मा गौर पण्डित के घर काम-काज करती थी। आंगन में झाड़ू लगा जाती पोखर जाकर जूठे बरतन साफ कर लाती। चूल्हा जला देती। इसके बाद काम पूरा होने पर घर चली जाती।

दिन ढले दरवाजा खटखटाने की आवाज सुनकर शिवानी उठी। दरवाजा खोलते खोलते बोली, 'क्यों रे फटिक, कहा था अब तक ?'

लेकिन नही फटिक नहीं था, शभु की मा थी।

'अरे तू है ? मैंने सोचा फटिक आया है।'

'स्कूल की छुट्टी कब की हो गयी, अभी तक नही आया, बड़ी फिकर हो रही है।'

शभु की मा ने कहा, फटिक की बात कर रही हो ? वह तो गंज के पास नाव चला रहा है '

'नाव चला रहा है ? किसकी नाव ?'

शभु की मा ने कहा, कौन जाने किसकी नाव है ?'

सुनकर शिवानी तो हैरान रह गयी। फिर बोली, 'फटिक को नाव चलाना आता है ?'

शभु की मा बोली 'सो तो मालूम नही था, संग में नरेन बाबू का लड़का भी है।'

शिवानी बोली, इस लड़के का हाल तो देखो मैं तो सोच सोच में मरी जा रही हूँ, और यह है कि गंज में नाव चला रहा है '

शिवानी सोच में पड़ गयी। बोली, 'शभु की मा एक बार जाओगी, फटिक को बुलाकर लाएगी। कहना कि यह तुम्हारी कौन सी अक्ल है खोका बाबू, तुम्हारी नानी उधर घर में बैठी फिकर कर रही है और तुम यहा खेल में लगे हो ? कहना कि नाना बाबू से कह दूंगी।

शभु की मा की जाने की इच्छा नही थी। फिर भी जाना पडा। जाते-जाते बडबडाती गयी, 'लेकिन मा तुम्हारा नाती दिन दिन बिगडता जा रहा है। तुम कुछ कहती नही हो उससे

घर के पास बैठा विधू बघाल आढत का काम कर रहा था।

शभु की मा ने पास जाकर पूछा अ छा यहा पर पण्डितजी के नाती को देखा था, नाव पर खेल रहा था वह किधर चला गया ?

विधू अपने काम में लगा था। सुनकर उसे भी ताज्जुब हुआ। उसने कहा 'मुझे नही मालूम

शभु की मा ने एक बार इधर उधर देखा फिर घर लौट आयी।

आकर बोली, नही मा नही मिला।

शिवानी ने कहा मिला नही ? फिर गया कहा ?'

शभु की मा को भी काम काज था। पोखर जाकर बरतन माजने हैं। रसोई साफ करके गोबर से लीपनी है। गृहस्थी के घर म काम की कोई कमी है क्या ? देही तोडकर काम करना पडता है तब कही महीना पूरा होने पर हाथ मे दो पैसे आते हैं। बरतन उठाकर वह पोखर की ओर चली गयी। वहा नही रुकी।

शिवानी भी फिर क्या करती ? घर की बहू और कर भी क्या सकती है। मुहल्ले मुहल्ले म जाकर नाती को ढूढ नही सकती। चुप चाप बैठे बैठे सोचने के अलावा कोई चारा भी नही था।

बरतन माजने के बाद शभु की मा के आते ही शिवानी ने कहा, हा री, जरा ठीक से ढूढ लेती ? देख तो कब का स्कूल गया है शाम हो आयी न खाया है न पिया है पता नही कहा ढूंढ रहा है ? जरा देख आती जाकर '

शभु की मा ने कहा 'लडका है थोडा घूमेगा फिरेगा नही ? आ जाएगा ठीक आ जाएगा इतनी फिक्र मत करो।

शिवानी ने कहा 'बिना फिक्र किए क्या रह पाती हूँ ?'

शभु की मा ने और कुछ नही कहा। चुप रही।

लेकिन शाम को दरवाजा खटकने की आवाज आते ही शिवानी ने झट से जाकर दरवाजा खोला। खैर, आया तो सही। दरवाजा खोलते-खोलते ही बोली, 'हा रे फटिक, स्कूल से इतनी देर करके लौटते हैं बेटा'

लेकिन नहीं। यह कोई और था। एकदम अनजान सूरत।

पंडितजी हैं?'

शिवानी ने कहा, 'तुम कौन हो? पंडितजी तो स्कूल में हैं'

उस आदमी ने कहा 'देखिए माँजी, मैं वीरगंज से आया हूँ।

'वीरगंज? वह तो बहुत दूर है?'

'हाँ माँजी, मैं बहुत दूर से ही आ रहा हूँ। आपका नाती फटिक है न, उसने हमारी दुकान पर खाया है, पैसा नहीं दे रहा।

शिवानी ने कहा, फटिक? वह है कहाँ?'

उस आदमी ने कहा, 'वह तो भाग गया

शिवानी को बड़ी हैरानी हो रही थी। उसने कहा, 'खाकर पैसे दिए बगैर भाग गया। क्या खाया था उसने?'

उस आदमी ने कहा, 'चाय कटलेट और अंडा करी। जो मांगा हम लोगों ने यही खाने को दिया। खा पीकर कहता है पैसे नहीं हैं। साथ में नरेन बाबू का लड़का सुशील भी था, किसी के पास पैसे नहीं थे।'

शिवानी क्या करे, कुछ न कर पा रही थी।

अचानक रानी आ पहुँची।

क्या बात है नानी अम्मा? यह कौन हैं?'

शिवानी ने जो कुछ सुना था खोलकर कहा। रानी ने उस आदमी से पूछा, 'कितने का खाया है?'

उस आदमी ने कहा, दोनों ने मिलकर तीन रुपये सात आने का

रानी बोली, लेकिन तुमने देखा था कि ये बच्चे हैं, उन लोगों की जेब में पैसा है या नहीं? यह देखे बिना क्यों दिया खाने को? गलती तो तुम्हारी ही है।'

उस आदमी ने कहा, 'देखा दीदी, एक पडितजी का नाती और दूसरा नरेन बाबू का लडका दोनो ही बलरामपुर के जाने माने आदमी हैं, यह जानवर भी सौदा करने नही देता।'

रानी बोली उन लोगो को पकडकर पुलिस के हवाले क्या नही कर दिया ?'

आदमी बोला, क्या कहती हो दीदी, भले घर के लडको को पुलिस म कस द सकता हूँ ?

शिवानी बोली अरे रानी, इतनी बात बढाने की क्या जरूरत है और कुछ भी कहने की जरूरत नहा है, मैं रुपये दिए देती हू, बात कही फल गयी तो मुसीबन हो जाएगी '

रानी बोली बात फैलने पर मुसीबत क्या होगी ? जिन लोगों ने ठगा है उन्हे पुलिस के हवाले क्यो नही किया इन लागा न ?'

शिवानी बोली, अरी तेरे नाना सुनगे तो क्या कहेंगे तू ही कह ?

रानी बोली कहेगे क्या पीट पीटकर फटिक की हड्डी पसली एक कर देंगे। सुशील को भी जरा घर आने दो। आज बेंता स उसकी पीठ न उधडवायी तो देखना।'

फिर उस आदमी की ओर देखकर बोली, 'तुम मेरे साथ आआ मैं तुम्हारे पसे देती हू आओ।'

कहकर रानी अपने घर की ओर जाने लगी। वह आदमी भी पीछे पीछे निकल गया।

शिवानी ने पीछे से आवाज लगायी, अरी रानी सुन, मैं पसे दे रही हू लेती जा '

रानी ने जाते जाते चिल्लाकर कहा नही नानी अम्मा तुम फिकर न करो मेरे पास अपने रुपये है अपने रुपयो म से ले दूगी '

झटपट घर पहुँचकर उसन बाल बाधने का अपना डिब्बा निकाला। उसके अदर एक और भी टीन का छोटा-सा डिब्बा था। उसे खोलकर

गिनकर तीन रुपये साल आने निकाले। इसके बाद डिब्बा फिर उसी जगह पर रख दिया।

वासंती ने देख लिया। उसने पूछा, 'वहाँ पर क्या कर रही है?'

रानी ने जवाब दिया, 'नहीं माँ, कुछ भी नहीं कर रही'

'तब बालों का डिब्बा लेकर क्या कर रही थी?'

रानी ने कहा, 'नानी अम्मा के पास बाल बधवाने गयी थी, रख रही हूँ।'

कहकर धीरे धीरे पीछे के दरवाजे से फिर बाहर आयी।

वह आदमी पीपल के पेड़ के नीचे घूँघट में खड़ा था। रानी ने कहा, 'यह लो अपने रुपये। अच्छी तरह गिनकर देख लो। ठीक है न?'

उस आदमी ने अच्छी तरह गिनकर उन्हें अपनी जेब में रखे।

रानी ने कहा, 'अब कभी भी इन लोगों को अपनी दुकान में न घुसने देना। अगर फिर कभी खिलाया तो पैसे नहीं मिलेंगे। कहे देती हूँ, अब जाओ'

आदमी सर झुकाए चला गया। बेचारा वीरगंज से आया था। अब फिर वीरगंज तक जाना था। पोखर पार करने के बाद उस ओर का रास्ता पतला हो गया है। दोनों ओर रगतों से घिरा किसी के मकान का बगीचा था। बड़ा सा एक नीम का पेड़ था।

नीम के उस पेड़ के पास आते ही फटिक ने पकड़ा, 'क्या, रुपये मिल गए?'

उस आदमी ने कहा, 'हाँ पूरे रुपये मिल गए।'

सुशील भी पास ही खड़ा था। फटिक ने कहा, 'फिर, फिर काहे को बड़ बड़ कर रहे थे? मैंने कहा था न कि पैसे मिल जायेंगे?'

सुशील ने कहा, 'किस घर में गए थे?'

उस आदमी ने कहा, 'पंडितजी के घर।'

फटिक ने पूछा, 'पंडितजी घर पर थे?'

उस आदमी ने कहा, 'नहीं'

फिर उसने सुशील की ओर देखकर कहा, 'तुम्हारी दीदी ने घर ले जाकर मेरे पैसे चुका दिए। लेकिन फिर कभी दुकान पर आए तो मजा चखा दूंगा, तब समझ लेना'

फटिक ने कहा 'अरे जाओ जाओ तुम जैसे बहुत दूकानदार देख लिए। खूब जायेंगे देखें क्या करते हो ?'

उस आदमी ने कहा ठीक है, एक बार बीरगंज आकर देखो '

फटिक ने कहा, बीरगंज क्या तुम्हारे बाप की जगह है। जरूर जायेंगे बेकार में लम्बी लम्बी न हांको

आदमी भी जमकर खड़ा हो गया। फिर बोला, 'क्या, क्या कर लोगे सुनूं ज़रा ?

फटिक ने कहा 'हम क्या करेंगे सुनना है ? ज्यादा बक बक करोगे तो तुम्हारी दुकान में आग लगा देंगे तब समझ में आएगा

उस आदमी से फिर नहीं रहा गया। आगे बढ़ते हुए उसने कहा, तो छोकर, तेरा मजा चखाना बतलाता हूं अभी '

कहकर उसके आगे बढ़ते ही फटिक और सुशील ने एक दौड़ लगायी। दौड़ते दौड़ते फटिक ने कहा तेरी दुकान में बम फेंकेंगे, सोडे की बोतल फेंकेंगे मुझे जानता नहीं है बहुत नवाबी कर ली बलरामपुर में, सारी नवाबी धरी रह जाएगी

कहते हुए दोनों दौड़कर जाने कहां गायब हो गए। वह आदमी थोड़ी देर वहीं खड़ा रहा। फिर देखा कि वहां कोई नहीं है तो उसने फिर से बीरगंज का रास्ता पकड़ा।

ये बातें पंडितजी के कान में नहीं पहुंचती थीं। और पंडितजी अपनी क्लास पूरी होने के बाद ही घर नहीं आ पाते थे। जिन लड़कों को

होमवर्क देते वे लोग काम पूरा करके कापी क्लास मे ले आते। उनका बंडल बाँधकर पंडित जी अपने कमरे में ले आते। पूरी क्लास के लड़कों की ढेर सारी कापियाँ। बंडल खोलकर कापियों पर नम्बर देना शुरू करते।

पहले जब स्कूल छोटा था तो हेडमास्टर वही थे। बाद में एक दिन हाई स्कूल हो गया। पहले के नाम बदलकर अब कहाँ आना क्लास वन, क्लास टू, क्लास थ्री। उसके बाद हाई स्कूल अब हायर सेकेंडरी हो गया था। पहले संस्कृत कम्पलसरी थी वही संस्कृत अब ऐच्छिक हो गयी थी। एडीशनल। अब बड़ी स्कूल कमेटी हो गयी है। प्रेसीडेण्ट, सक्रेटरी, और भी क्या-क्या हो गए हैं।

लेकिन अब हेडमास्टर न होने पर भी हेडमास्टर के बहुत से काम पंडितजी को करने पड़ते थे। पीने का पानी ठीक है या नहीं, लड़के और स्टाफ ठीक वक्त पर आ रहे हैं या नहीं—असल में ये सारे काम हेडमास्टर के हैं। लेकिन गौर पंडित बिना खुद देखे किसी के भरोसे काम छोड़कर चैन से नहीं बैठ सकते।

जनार्दन आकर सामने खड़ा होता।

गौर पंडितजी उस पर नजर पड़ते ही पूछते, 'क्या बात है जनार्दन, कुछ कहना है ?'

जनार्दन भी पंडितजी की तरह बूढ़ा हो गया था। स्कूल में ही बगीचे के कोने में एक ओर खपरैल वाली छोटी सी कोठरी में रहता था। वहीं खाना बनाता और वहीं सोता। ड्यूटी के वक्त वहीं से बाहर आकर ड्यूटी करता।

'कुछ कहना है जनार्दन ?'

'रात बहुत हो गयी, आप घर नहीं जायेंगे ?'

पंडितजी कहते, 'अरे रुक भी, पहले काम तो पूरा हो। काम पूरा करके ही तो घर की बात '

किसी किसी दिन गौर पंडितजी जनार्दन से देर ■

करते रहते। सारे दिन के बाद रात को पडितजी अपने काम म डूब जाते और सामने जमीन पर बठा जनादन जाने कहाँ-कहाँ की बातें किया करता।

गौर पडितजी कहते, क्यो जनादन, तुम अभी तक बठे हो ? खाना पीना हुआ ?'

जनादन कहता, आप बठे हैं मैं कसे खा सकता हूँ पण्डितजी ?'

गौर पडितजी कहते, मेरे लिए तुम क्या बैठे रहन हो जनादन ? मेरे लिए बठे रहोग तो तुम्हारा खाना पीना हो लिया। मुझ क्या कम काम है ?

जनादन कहता लेकिन सेहत का भी तो ख्याल करिए मौं जी घर म अकेली बिना खाए पिए बठी होगी।'

गौर पडितजी कहते, 'अरे धत सेहत के बारे म सोचने से कही काम चलता है ? पहले काम है न कि पहल सहत। मैं तो तुम्हारी माँ जी से भी यही कहता हूँ कि एक बार स्कूल को खडा हो जाने दो उसके बाद सेहत का ख्याल करूगा

जरा रुक कर फिर कहते, यह देख न, क्लास सिक्स के लडको को अभी तक शब्द लिखना तक नही आता लेकिन हर साल दर्जे म उठ जात हैं '

जनादन कहता 'जी, अपने गणित के मास्टर शशधर बाबू हैं न उन्होंने घर पर कोचिंग स्कूल खोला है पद्रह रुपय महीन फीस लत हैं

गौर पडितजी कहते, 'मुझे मालूम है जनादन सब मालूम है। एक दिन सब समाप्त कर दूगा। उस दिन देखा, देरी से स्कूल आ रहा था '

जनादन कहता, शशधर बाबू तो रोज ही लेट आते हैं पडितजी '

गौर पडितजी को सब मालूम है। कौन मास्टर कोचिंग करता है, कौन देरी से आता है, कौन देरी करके क्लास म जाता है, कसा पढाता

है, गौर पडितजी से कुछ भी छुपा नहीं है। फिर भी वे चुप रहते। वस्तुत कहने से फायदा ही क्या ? उसके लिए स्कूल का प्रेसीडेंट है, सेक्रेटरी है, कमिटी है हेडमास्टर है। वे लोग ही देखें। उनकी उमर भी हो गयी है।

गौर पडित कहते, तुम्हें मथुरा साहु जी का ध्यान है ?'

'वह जमाना अब नहीं रहा पडितजी।'

तब दोनो बूढे मिलकर पुराने जमाने की बातें करते। एक काम करते-करते बात करता और दूसरा काम करने के लिए बात करता। तब किसी समस्या को सुलझाने के लिए बात नहीं होती। किसी को डाँटने के लिए भी बात नहीं होती। दोनो जने एक स्तर पर उतरकर या एक स्तर पर उठकर एकाकार हो जाते। दोनो को तब बडा अच्छा लगता। न घटा बजाना, न गेट बद करना और न लडको को पढाना। यह वक्त गौर पडितजी को बडा अच्छा लगता था। स्कूल के पीछे वाले तालाब से मन्द मन्द हवा आती रहती, आम और नारियल के पेडो पर पत्ते सिहरते रहते। गौर पडितजी एक-एककर कापी जाँचते रहते। हर लडके का नाम देखते। सबका चेहरा उनकी आँखो में आग उभर आया होता।

कहते, 'जनार्दन आजकल लडके ठीक से पढाई लिखाई नहीं कर रहे।'

जनार्दन कहता, 'ठीक से होगा कैसे पडितजी ? आजकल सारे मास्टर साहबो ने मिलकर शशांकबाबू के घर कोचिंग स्कूल खोल लिया है—सारे लडके वहीं पढने जाते हैं '

तू ने भी देखा है क्या ?'

जनार्दन कहता, मैंने अपनी आँखों से देखा है पडितजी।'

बात करते-करते पडितजी कहते, अब तू सोने जा जनार्दन, थोडी सी कापियाँ और रह गयी हैं, इन्हें जाँच कर मेरा आज का काम पूरा, मैं ताला लगाकर चला जाऊँगा। जा, तू कब तक बैठा रहेगा। जा '

जनार्दन चला जाता। बाद में कापियाँ जाचना पूरा करके पंडितजी उठते। बत्ती बुझाते। इलेक्ट्रिक थी आजकल। पहले कितने साल उन्होंने किरासिन की लालटेन में काटे हैं। अब कितनी सुविधा हो गयी। फिर भी हर ओर जैसे कामचोरी फैल गयी है। काम की सुविधा के लिए ही तो यन्त्र हैं। लेकिन यन्त्रों ने तो जैसे काम की असुविधाओं को और भी बढ़ा दिया है। इसके बाद धीरे धीरे कंधे पर चादर डालकर दरवाजे में ताला लगा देते। और उसके बाद बाहर आकर अपने घर की ओर पाँव बढ़ाते।

लेकिन उस दिन एक अजीब बात हो गयी।

पंडितजी रोज की तरह कापियाँ जाचकर निकले थे। अचानक उनकी नजर पड़ी—दूसरी मंजिल पर एक कमरे की रोशनी जल रही है। इतनी रात को रोशनी कैसे जल रही है! लगा जैसे सायन्स लेबोरेटरी की बत्ती बुझाना भूल गया।

पंडितजी फिर से ऊपर चढ़ने लगे। जाकर बत्ती बुझा आयेंगे।

लेकिन लेबोरेटरी में पहुँचकर हैरान रह गए। नया सायन्स टीचर शिवेन्दु अंदर खड़े-खड़े दो चार लड़कों को कुछ समझा रहा था।

गौर पंडितजी थोड़ी देर तक चुपचाप वहीं खड़े रहे। शिवेन्दु की उम्र कम ही है। हायर सेकण्डरी होने के बाद सायन्स विभाग खोला गया है, शिवेन्दु तभी आया।

अचानक शिवेन्दु की नजर पंडितजी पर पड़ी। वह भी हैरान था।

शिवेन्दु पंडितजी की ओर बढ़कर आया। उसने कहा, पंडितजी, आप!

गौर पंडितजी ने कहा, 'नीचे से देखा लेबोरेटरी में रोशनी जल रही है। सोचा शायद जनार्दन बुझाना भूल गया है। लेकिन तुम अभी तक क्या कर रहे हो?'

शिवेन्दु ने कहा, इन लोगों को जरा पढ़ा रहा था पंडितजी '

ये लोग किस क्लास के लड़के हैं ?'

शिवेन्दु ने कहा 'ये लोग इसी साल नाइंथ में आए हैं। इन कुछ लड़कों का पढ़ाई में ध्यान है इसी से जरा समय निकाल कर पढ़ा रहा था। अगर ये लोग कुछ पायें '

इसके बाद लड़कों से बोला 'अब तुम लोग जाओ '

पंडितजी ने कहा 'नहीं नहीं, मैं जा रहा हूं, तुम इन लोगों को पढ़ाओ।'

शिवेन्दु ने कहा 'नहीं, इन लोगों ने पढ़ लिया है पंडितजी, मैं भी अब जाऊंगा '

लड़के आहिस्ते-आहिस्ते दोनों को नमस्कार करके चले गए।

गौर पंडितजी ने कहा, 'वाह, ये लड़के तो बड़े अच्छे हैं। तुम क्या रोज पढ़ाते हो इन्हें ?'

शिवेन्दु ने कहा, प्राय ही पढ़ाता हूँ। जब देखता हूँ कि इन लोगों की सीखने की ओर रुझान है तो सोचता हूँ—अगर ये लोग कुछ सीख लेंगे तो इससे मुझे भी अच्छा लगता है इन लोगों को भी अच्छा लगता है। बचपन में मुझे किसी ने अच्छी तरह नहीं सिखलाया था। मुझे काफी दिक्कतें उठानी पड़ी हैं। अब सोचता हूँ, इन लोगों को मेरी तरह न भोगना पड़े '

'लगता है, तुमने काफी कष्ट उठाया है ?'

शिवेन्दु ने कहा, 'बहुत। माँ बाप कोई था नहीं, दूसरे के घर पला पैसे की तंगी की वजह से स्कूल की फीस ठीक से नहीं दे पाता था '

गौर पंडितजी अचानक एक कागज पर कोई डिजाइन-सा बना देख बोले 'यह क्या है ?'

शिवेन्दु उस ओर बढ़ आया।

'यह ? यह एक अपरेट्स का नक्शा है। लड़कों को इसी के बारे में समझा रहा था।'

गौर पंडितजी नक्शा देखने में मशगूल हो गए। रत्ती भर भी

दिमाग म नही घुसा । खुद ने हमेशा सस्कृत काव्य दशन पन्ना स्मृति पढी । लकिन यह सब क्या बला है, कभी नही देखा । किसी न उन्ह कभी दिखलाया भी नही । यह भी एक दुनिया है । इस दुनिया के बारे म वे अब तक नहीं जानते थे । बोड स कम्पलसरी संस्कृत खत्म होने पर उन्ह बडा दु ख हुआ था । मन ही मन बडा डर भी लगा था । लगा था, साहित्य, दशन स्मृति, यह सब पढे बगर लडको का मानसिक गठन अधूरा रह जाएगा । लेकिन आज इस नक्शे के आगे खडे होकर जसे उन्ह लग रहा था शायद उन्ही की धारणा गलत थी। साहित्य दशन और स्मृति छोड और भी बहुत कुछ है जिसके बारे म वे नही जानत । शायद इस नक्शे म भी कोई सत्य हो सकता है ।

अच्छा शिवेन्दु, तुम्हारी तरह एक और भी तो साय स टीचर है ?'

शिवन्दु ने कहा भधर बाबू हैं फिजिक्स पढाते हैं भौतिक शास्त्र

वे भी क्या तुम्हारी तरह लडको का इतना ध्यान रखते हैं ? उन्हें तो नही देखता ।

शिवन्दु चुप रहा । थोडी देर बाद बोला मेरी तरह उनके जिम्मे इतना प्रैक्टीकल नही है बहुत कम है

गौर पडितजी ने जसे एक नई दुनिया आविष्कृत कर ली थी ।

फिर बोले मरी समझ म इसमे का कुछ भी नही आता शिवेन्दु ! सोचता हू तुम्हारे इस रसायन शास्त्र और भौतिक शास्त्र म भी हो सकता है कोई सत्य हो

शिवन्दु मुस्कराया । फिर बोला पडितजी हर चीज म सत्य है । आपके साहित्य दशन और स्मृति म जिस तरह है वसे हो हमारे कैमिस्ट्री फिजिक्स म भी है । ये सारे ट्रुथ हो तो मिलकर उस ग्रेटर ट्रूथ की ओर उस महा सत्य की ओर महाध्रुव की ओर बढ रहे हैं । युग युग स सकडो वर्षों स हम उस इटरनल ट्रूथ की ओर विभिन्न मार्गों से

पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं।'

गौर पंडितजी हैरत से शिवेन्दु की बातें सुनने लगे। उन्हें लगा कि इतने दिन से वह जो सोचते आ रहे हैं वही पूर्ण सत्य नहीं है। उनकी जानकारी के बाहर भी कहीं एक और सत्य है जिसके बारे में वे अब तक नहीं जानते थे जिसके बारे में शायद शिवेन्दु जानता है भूधर जानता है। यह नक्शा शायद उसी सत्य की ओर इशारा कर रहा है। उसी सत्य की ओर जैसे यह नक्शा बढ़ना चाहता है।

'अच्छा शिवेन्दु मैं चलूँ अब। तुमने ठीक ही कहा। सत्य तक पहुँचने के बहुत से मार्ग हैं। वह मार्ग मेरे साहित्य, दर्शन और स्मृति में भी है और तुम्हारे विज्ञान में भी है '

फिर जैसे मन ही मन बोल उठे, अच्छा, अब मैं चलूँ, तुम काम करो

शिवेन्दु ने कहा, 'अब मैं भी जाऊँगा पंडितजी '

कहकर शिवेन्दु ने गैस का स्विच आफ कर दिया। उसके बाद कमरे की बत्ती बुझाकर बाहर बरांडे में आ गया।

गौर पंडितजी भी तब तक नीचे सड़क पर आ गए थे। नहीं, शायद उन्हें हताश होने का कोई कारण नहीं है। सभी ने तो कोचिंग स्कूल नहीं खोल रखा है। शिवेन्दु की तरह के शिक्षक भी तो हैं।

शिवेन्दु साथ ही आ रहा था।

गौर पंडितजी ने अचानक पूछा, 'अच्छा शिवेन्दु तुम शशधरबाबू की कोचिंग क्लास में नहीं पढ़ाते ?

शिवेन्दु ने कहा 'नहीं पंडित जी, नहीं '

गौर पंडित ने फिर पूछा, 'क्यों ?'

शिवेन्दु ने कहा, 'उससे ठीक-ठीक पढ़ाना नहीं होता पंडितजी। घंटा, मिनिट गिनकर और सजेशन देकर पास कराने में मेरा विश्वास नहीं है। उससे रुपया कमाया जा सकता है, लेकिन लड़कों को बनाया नहीं जा सकता। शशधरबाबू ने मुझसे कहा था लेकिन मैं राजी नहीं

हुआ '

'लेकिन वहाँ तो सब लड़के जाते हैं ?'

शिवेन्दु ने कहा जो हाँ जाते हैं मुझे वह भी पता है। लेकिन वे लोग पढ़ने नहीं जाते, सस्ते में बिना मेहनत पास होने के लिए जाते हैं। मैंने जिंदगी में कभी फाकी नहीं दी पंडित जी इसी से अगर किसी को फाकी देते देखता हूँ तो मुझे बड़ा खराब लगता है। इसीलिए जो लड़के सचमुच पढ़ना चाहते हैं उन्हें स्कूल के बाद लेबोरेटरी में बुलाकर पढ़ाता हूँ

लड़के इसके लिए क्या तुम्हें कुछ देते हैं ?

शिवेन्दु फिर मुस्कराया। फिर बोला नहीं पंडितजी रुपया देने पर भी मैं लेता नहीं। रुपये की मुझे बड़ी सख्त जरूरत है पंडितजी! लेकिन वैसा करने पर मैं अपनी ही नजरों में छोटा हो जाता हूँ। मुझे स्कूल से जो मिलता है किसी तरह उसी से गुजर कर लेता हूँ

गौर पंडितजी अपने को और नहीं रोक पाए। अचानक शिवेन्दु के दोनों हाथ पकड़ लिए। फिर बोले 'शिवेन्दु तुम्हारे विज्ञान में भी जो यह आदर्श है यह मुझे नहीं मालूम था मेरा विचार था तुम्हारा विज्ञान शायद केवल जड़वाद ही सिखलाता है। शिवेन्दु मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूँ, तुम विज्ञान के माध्यम से ही अपना सत्य खोज पाने में सफल होओगे '

शिवेन्दु भी जैसे कुछ देर के लिए विभोर हो गया। फिर उस सड़क पर ही उसने पंडितजी के दोनों पाँव छू लिए।

गौर पंडितजी ने कहा 'आज बड़ी शक्ति मिली भाई आशा भी हो रही है, तुम दीर्घजीवी होओ शिवेन्दु। जानते हो नदिया जिले के कीर्ति काव्यालंकार मेरे पुरखे थे उसी वंश में मेरा जन्म हुआ है। मुझे नवद्वीप से काव्यतीर्थ की उपाधि मिली है। जब यहाँ आया तो देखा यहाँ सभी मूर्ख हैं कोई संस्कृत नहीं जानता। मेरा विचार था संस्कृत जाने बिना मनुष्य-जन्म ही व्यर्थ है। शास्त्र के अतिरिक्त और सब कुछ जड़वाद

है। मैं उसी आदर्श के बीच पला हूँ।

विद्यार्थियों को पढ़ाऊंगा लेकिन अर्थ नहीं लूंगा, नोटस नहीं लिखूंगा। इस युग का जो पाप है मैं उसे स्पर्श भी नहीं करना चाहता। यही कारण है कि इस युग के सारे लोगों से मेरा विरोध है शिवेन्दु। लेकिन इस पाप को मैं रोक नहीं पा रहा। दुनिया के सारे लोग अपनी रुचि के अनुसार चल रहे हैं। मेरी बात तो किसी ने नहीं सुनी। मेरी गृहिणी तक मुझसे अप्रसन्न है क्योंकि मैंने यथेष्ठ धनोपार्जन नहीं किया। लेकिन तुम्हीं बतलाओ, इस पृथ्वी पर मनुष्यत्व, सतता, सत्यवादिता और श्रम यह सब क्या मिथ्या है, रुपया ही सब कुछ है? जिसके पास रुपया नहीं है किन्तु मनुष्यत्व है सतता है, वह क्या परित्याज्य है? तुम्हारा विज्ञान क्या कहता है शिवेन्दु? तुम्हारा विज्ञान भी क्या यही कहता है?

शिवेन्दु बोला, 'गलत पंडितजी, यह बात गलत है। विज्ञान माने जड़वाद नहीं है।'

जड़वाद नहीं? तो इस दुनिया के बाहर एक और जो पृथ्वी है, उसे तुम लोग क्या मानते हो? युक्ति-तर्क के अतीत को भी तुम लोग स्वीकार करते हो?'

शिवेन्दु ने कहा, 'हम कुछ भी अस्वीकार नहीं करते पंडितजी। विज्ञान के माने तो आप अच्छी तरह जानते ही हैं, मैं आपको और क्या समझाऊंगा। अच्छा, इसी ज्ञान को लीजिए। ज्ञानी किसे कहते हैं? रामकृष्ण देव तो भक्तिवादी थे। उन्होंने कहा है दूध पीने से स्वास्थ्य अच्छा होता है, यह बात जो जानता है वह है ज्ञानी, और दूध पीकर जो स्वास्थ्य अच्छा करता है वह हुआ विज्ञानी।'

तब तक चलते चलते शिवेन्दु काफी दूर निकल आया था।

अचानक उसने कहा, 'आप घर नहीं जायेंगे पंडितजी? आप तो काफी दूर चले आए हैं।'

गौर पंडितजी ने कहा, 'कोई बात नहीं है कोई बात नहीं है। देखो शिवेन्दु, भक्तियोग और ज्ञानयोग इन दोनों के समन्वय के माध्यम से

मारती है फिर भी मा के पास ही जाएगी। रट लगाए है—माँ के पास जायेंगे। मा है भी ऐसी ही चीज

वे मुखर्जी बहू अब नही है। अष्टमी पूजा वाले रोज पेट म अचानक दद उठा और खत्म।

अवती तब छोटी थी। उसकी समझ मे कुछ नही आया। वह पूछती, मा दादी कहा गयी ? दादी आती क्यो नही है ?'

शिवानी किसी भी तरह लडकी को नही समझा पाती थी कि मरने के बाद आदमी जहाँ जाता है वहा से वापस नही आता।

अचानक दरवाजा खटकने की आवाज आती।

शिवानी कहती कौन ? फटिक ?'

कोइ जवाब नही। जल्दी स दरवाजा खोलत ही देखती सचमुच फटिक ही है। फटिक दात निकाले हँस रहा था।

क्यो रे इतनी देर कर दी ? कहा था अब तक ?'

फटिक अभी तक हँस रहा था। फिर बोला, नाना तो नही लौटे न अभी ?

शिवानी ने कहा 'पहले तू था कहाँ यह बतला।'

फटिक तब तक समझ गया। वह बोला, 'अरे नानीअम्मा आज एक जने को खूब मजा चखाया '

शिवानी ने कहा 'हा वही दुकानदार यहाँ आया था '

आया था ? तुमने पसे तो नही दिए न ?'

मैंने नही दिए रानी न दिए।'

फटिक बोला, 'ठीक हुआ, मैंने उससे सुशील के घर जाने को ही कहा था, वह हरामजादा यहा चला आया। दोनो के पसे ले गया अच्छा हुआ। जानती हो नानीअम्मा, दीदी के डब्बे म बहुत-से रुपये हैं लेकिन दीदी इतनी मजूस है कि किसी को एक पसा भी नही देती खाली जमा करके रखती है।'

फटिक की बात सुनकर शिवानी जसे आसमान से गिरी।

फटिक तब हाथ की किताबें अदर रखने गया था। वही से बोला, 'आज मैं खाना नहीं खाऊगा नानीअम्मा, मेरा पेट भरा है।'

शिवानी बोली, 'जरा इधर आ तो तू '

फटिक आकर शिवानी के आगे खडा हो गया। फिर बोला, 'क्या है ?'

शिवानी न कहा 'तूने समझा क्या है ? स्कूल से सीधा घर क्यो नही आया, बोल ? नाव लेकर कहाँ गया था ?

फटिक को इतनी देर के बाद अपनी गलती का ध्यान आया।

'बोल क्या नहीं रहा ? बोल, जवाब दे।'

फटिक न कहा, 'वाह, तुम मुझे क्यो डाट रही हो ? सुशील से कुछ नहीं कह सकती ? उसी ने तो नाव पर चढने को कहा था '

'सुशील न नाव चलाने को कहा और तू नाव पर चढ गया ? और जेब मे पैसे नहीं थे फिर भी सुशील की बात पर चाय-कटलेट खाने बैठ गया ?'

फटिक बोला, 'सच कहता हूँ नानीअम्मा, काली मा की कसम, सुशील नन्दी ने मुझसे खाने के लिए कहा था।

शिवानी ने कहा 'अब अगर तेरे नाना से यह बात कहू ?'

फटिक बोला, 'तुम्हारे पावा पडता हूँ नानीअम्मा नाना से नही कहना, मैं फिर कभी ऐसा नही करूँगा '

शिवानी ने कहा, 'यह बात उस समय ध्यान म नहीं आई ? जब सुशील तुझे ले गया तब नाना की याद आई ?'

फटिक की रोनी सूरत देखकर जैसे अचानक शिवानी की नजरों के आगे लडकी अवती का चेहरा उभर आया। ठीक जैसे माँ का चेहरा लेकर बठा दिया हो। शिवानी को भी जोर की रुलाई आ गई। बोली 'हतभागे, इतन दिन अपने नाना के पास रहकर भी तेरी बुद्धि नही खुली ? यही तेरी शिक्षा हुई है ? नाना सुनेंगे तो मार मारकर तेरा खून ही कर डालेंगे। मैं तब क्या कहकर उन्हें रोकूगी।'

कहते-कहते शिवानी पम्नि को सीने से लगाकर रोने लगी । शिवानी को लगा जैसे पटिन नही अपनी ही उसकी गोद में मुंह छुपाए है, उसी तरह छाती से लगाए शिवानी कहने लगी, 'तेरे नाना की कितनी इच्छा है तुझे आदमी बनाने की, तू भी यशोधन पाए और तेरी यश कीर्ति !'

बलरामपुर की सारी आबहवा जैसे शिवानी के साथ एकाकार होकर उस वक्त रो उठी । सामने पोखर के सीने पर अचानक जैसे एक लहर उठी और पास के सिरस के पेड की पत्तियां व्याकुल होकर दुख के मारे सिहर उठी ।

सुशील भी चुपचाप दबे पांव घर मे घुस रहा था ।

'कौन ?'

सामने दरवाजे के पास वाले कमरे मे बाबा अपने मुवक्किलो के बीच बैठे थे ।

वहां न जाकर सुशील पिछले दरवाजे से अदर घुसा । पढने वाले कमरे मे उस वक्त शशधरबाबू बैठे हुए थे । रोज की तरह शशधरबाबू पढाने आए थे । सुशील उस ओर भी नही गया । पास के गलियारे से पर्दे के पीछे छुपता सुशील सीधा अपने कमरे मे पहुचा ।

'कौन ?'

सुशील का दीदी से सामना हो गया ।

'कहाँ था इतनी देर तक ?'

पकडे जाने पर सुशील सकपका गया । फिर बोला, 'वाह, मुझे डांट क्यो रही है मैंने क्या किया है ?'

'क्या किया है ? बडा भोला बन रहा है ? स्कूल से घर क्यो नही आया ? बोल, कहाँ गया था ? नही तो मैं अभी जाकर बाबा से

कहती हूँ '

सुशील सिटपिटा गया। फिर बोला, 'फटिक के साथ गया था।'

कहाँ गया था ?

सुशील ने कहा 'वीरगंज के मेले में।

वहाँ क्या करने गया था ?'

सुशील बोला 'खाने '

'खाने, मतलब ?'

सुशील बोला 'मैं खाना नहीं चाहता था दीदी! फटिक ने कहा कटलेट खायेंगे। इसी से मैंने भी खा ली।'

पैसे किसने दिए ?'

'पूरे पैसे नहीं दिए मेरे पास सिर्फ एक रुपया था।'

रानी ने कहा, 'तेरे पास रुपया आया कहाँ से ? किसने तुझे रुपया दिया ?'

सुशील ने डरते डरते रानी की ओर देखा। फिर बोला, 'तेरे डिब्बे में से लिया था दीदी।'

रानी थोड़ी देर चुप रही। सुशील की ओर एकटक देखकर उस उसे डर दिखलाया।

सुशील डर के मारे चिरौरी करने लगा दीदी तू किसी से कहना नहीं। फटिक ने मुझ से तेरे डिब्बे में से रुपया निकालने को कहा था। इसमें मेरा कसूर नहीं है, कसूर फटिक का है।'

फिर ? किनने का खाया ?

चार रुपये सात आने का।

बाकी तीन रुपये सात आने किसने दिए ?'

सुशील बोला 'नहीं दिए। दुकानदार हम दोनों को पुलिस के हवाले कर रहा था। बाद में बाबा और पंडितजी का नाम लेने पर वह हम पकड़कर ले आया। तू रुपये नहीं देती तो वह हम जरूर पुलिस के हवाले कर देता—तूने बाबा से तो कुछ नहीं कहा न '

रानी न और कुछ नहीं कहा, सिफ बोली, 'जा, मास्टर साहब बहुत देर से नाच बठे है जा म पढ़ जा '

'अर पटिक ओ पटिक !'

शिवानी न सदर दरवाजा खोल दिया। गौर पडितजी बडी बहू को देखकर आश्चयचकित हुए। बोल 'तुम ! लगता है पटिक सो गया है ?

शिवानी न बिना कुछ कहे दरवाजा बन्द किया।

गौर पडितजी न जात-जात कहा 'जानती हो बडी बहू मैं सोचता था विचार जडवाद है लेकिन ऐसी बात नही है। असल म ये लोग जो चाहते हैं हम भी वही चाहते हैं। हमारे अलकार शास्त्र भी।'

गौर पडितजी ने कापियाँ तख्त के ऊपर रख दी चादर अलगनी पर लटका दी। उसके बाद कपड बदलने लगे।

'अपने स्कूल म शिवेन्दु नाम का एक मास्टर आया है आज आते समय देखता हूँ लडको को पढ़ा रहा है। मैं तो उसे इतनी रात को क्लास मे देखकर हैरान रह गया। मैंने तुमसे कहा था न, कि आजकल सब कामचोरी करते है! लेकिन नही भाई, मुझे देखकर बडा आनन्द हुआ। उसी के साथ तो इतनी देर हो गयी '

तब तक लोटा लेकर पडितजी ने हाथ मुह धो लिए। फिर खाने बठे।

'हम लोगो ने नवद्वीप म स्मति पढी न्याय पढ़ा, लकिन आज देखा, शिवेन्दु न भी कुछ कम नही पढ़ा। बडा मेघावी लडका है।

'इतने दिनो तक मैं सोचता था कि सब खाली कोचिंग स्कूल मे ही मास्टरी करते हैं और रुपया कमाने की तरकीब बिठाते हैं '

पंडितजी खाते-खाते बात करने लगे।

बोले 'मन ही मन मुझे बड़ा कष्ट था बड़ी बहू गवर्नमेण्ट ने कम्पल सरी संस्कृत हटा दी, जड़ विज्ञान शुरू कर दिया। लेकिन देखा '

इतनी देर बाद शिवानी बोली। उसने कहा, तुम झटपट खा लो, बाद में बात करना। तुम्हारे खा लेने के बाद फिर मुझे भी खाना है।

पंडितजी का जैसे इतनी देर बाद ध्यान आया।

बोले, अरे हां, आज उस शिवेन्दु से बात करते-करते देर हो गयी 'कहकर झटपट खाना पूरा किया।

और पंडितजी तब अपने बिस्तरे पर आ लेटे थे। अभी भी दिमाग में शिवेन्दु की बातें चक्कर काट रही थीं। लड़का बड़ा होनहार लगता है। इतनी रात तक पढ़ा रहा था '

'अरे हां फटिक पढ़ने बैठा था आज ?'

शिवानी बगल वाले कमरे में तब फटिक के पास सोती-जागती लेटी थी। उसे अभी तक नींद नहीं आयी थी। शायद फटिक भी तब जागा था। लेकिन किसी ने जवाब नहीं दिया। किसी ओर कोई आहट नहीं थी। और पण्डित काफी देर तक अकेले जागते पड़े रह। बार-बार शिवेन्दु की बातों का ध्यान हो आता। शिवेन्दु का कहना ही शायद ठीक है। शिवेन्दु नये जमाने का लड़का है, शायद उसी की बात ठीक है। सोचते-सोचते न मालूम कब पण्डितजी सो गए।

कहीं जैसे एक त्रुटि थी जो किसी की नजर नहीं पड़ी जिसके फलस्वरूप पंडितजी इतने दिन एक तरह से निश्चिन्त थे। जी-जान से स्कूल के पीछे मेहनत करते। गृहस्थी की ओर कभी भी ध्यान नहीं दिया। नोट्स लिखकर रुपया कमाने की बात नहीं सोची। इतना ही नहीं, और मास्टरों ने जब ट्यूशन करके कोचिंग स्कूल चला चलाकर अपने घर खड़े कर लिए, तब भी पंडितजी स्कूल के बारे में ही सोचते रहे, स्कूल के बारे में ही उन्होंने सोचा।

उस दिन कमिटी की मीटिंग में प्रेसीडेंट निमाई साह ने बात उठाई।

निमाई साहू ने कहा आप लोग स्कूल की आमदनी और खरचे का हिसाब जानते है। कई कारणो से हमारा खरचा बढ गया है। इस पर टीचस ने तनखाह बढाने के लिए दरखास्त दी है। उनकी तनखाह मे अगर बढोतरी करते है तो हम स्कूल की आमदनी बढाने का भी कोई रास्ता खोजना पडेगा। मैं प्रस्ताव करता हू कि टयूशन फी म एक रुपय की बढोतरी की जाए तभी इस समस्या को सुलझाया जा सकता है।'

एक मम्बर ने कहा महगाई के इस जमाने मे गार्जियनो के ऊपर यह बोझ डालना क्या ठीक होगा ?

निमाई साहू ने कहा सिफ एक रुपया बढाने से क्या बहुत ज्यादा हो जाएगा ? आज किस चीज की कीमत नही बढी है ? मैं तो अपन ज म से कारोबार कर रहा हू। हमारी तीन पुस्तो की दुकान है। पहले जो चीज जिस कीमत म खरीदी अब उसकी कीमत तीन गुनी ज्यादा हो गयी है। लेकिन हमारे स्कूल की तनखाहें वही पुराने स्केल की है जो पडितजी न तयार किए थे। मरे ख्याल स तो उसम किसी गार्जियन को किसी तरह की आपत्ति नही होनी चाहिए '

सब लोग चुप रहे।

सेक्रेटरी नरन चक्रवर्ती ने कहा तब तो एक बार पडितजी को बुला लिया जाता।

इतनी दर बाद जस सभी न समथन का भाव दिखलाया। बोले 'ऐसा करना अनुचित नही रहगा। एक तरह से यह स्कूल उ ही का तो है। उनकी अनुपस्थिति म इतना बडा डिसीजन लना क्या ठीक होगा ?

निमाई साहू ने कहा उनका स्कूल मान ? जब तक कमिटी है यह स्कूल कमिटी क अडर म है। इसकी पालिसी तथा दूसर सारे निणय कमिटी ही का काम है। कमिटी बडी है न कि पण्डितजी ? हकीकत बडी है या भावना ? भावना स दुनिया नही चलती।'

नरेन चक्रवर्ती को यह बात अच्छी नही लग रही थी। उसन कहा 'तब यही ठीक है उ हे बुलवा लिया जाए।

गौर पडितजी आए। सबने सम्मानपूर्वक स्वागत करके उन्हें बिठ
लाया। उन्होंने भी सब बातें सुनी। स्कूल की आमदनी और खर्चे का
ब्योरा समझा। बोर्ड से मिली ग्रांट की रकम भी जानी।

फिर बोले, 'मेरे विचार से लड़कों की फीस इस समय बढाना उचित
नहीं होगा।'

निमाई साहू ने कहा 'तब टीचर्स की तनखाहें किस तरह बढाई जा
सकती हैं आप वही बतलाइए, फिर हम आपकी बात मान लेंगे।

गौर पडितजी ने कहा 'टीचर्स की तनखाह क्या बढानी ही पड़ेगी?
मैं भी तो इस स्कूल का एक टीचर हूं। मैंने तो कभी अपनी तनखाह
बढाने को नहीं कहा ,

सेक्रेटरी नरेन चक्रवर्ती ने कहा, 'नहीं पडितजी, बात यह है, आजकल
जमाना खराब है इस हालत म सभी खरचा बढ गया है आमदनी वही
है। इसी से इन लोगों का तनखाह बढाने के लिए कहना अन्याय
नहीं है।

गौर पडितजी ने कहा सब समझा लेकिन गाव के लोग लड़कों की
फीस देंगे कहा से? गार्जियनों की तनखाह बढी है या उनकी आमदनी
बढी है? पता है कौन कितने लड़कों के मा-बाप मेरे पास आते हैं? वे
लोग रोज लडको के लिए फ्री शिप की दरखास्त देते हैं। म उन्हें क्या
कहकर समझाऊं बोलो?'

निमाई साहू बोला, 'वह सब तो ठीक है पडितजी, लेकिन स्कूल
आखिर चले कैसे? पहले राज मिस्त्री रोज के तीन रुपए लेते थे, अब
लेते हैं सात रुपए रोज। लड़कों के लिए दो नए कमरे बनवाने हैं। बढने
की जगह कम पड रही है। एक-एक क्लास म चालीस-पचास लडकों को
पिचपिच करके बठना पड़ता है। उसके बाद स्टाफ का सवाल है। अकेले
हरीलाल बाबू आजकल पूरा काम नहीं सम्हाल पा रहे। उनके लिए
एक असिस्टेंट की जरूरत है। इन सबके लिए रुपया आए कहा से?'

गौर पडितजी ने कहा, 'वह सब मुझे मालूम है निमाई। लेकिन ये

सारे सवाल तो एक दिन मैंने भी सुलझाए हैं। मैंने अकेले ही स्कूल चलाया। लड़के भी तब कुछ कम नहीं थे। तुम लोग भी तो तब इसी स्कूल में पढ़ते हो। तुम लोगों को क्या मालूम नहीं है कि यहां कितने कम-चारी थे? कितनी बार रुपए की तंगी हुई। लेकिन कहां मैंने तो तब लड़कों की फीस नहीं बढ़ायी।

नरेन चक्रवर्ती ने कहा 'पण्डितजी वह जमाना दूसरा था। तब

लेकिन पंडितजी ने बात को आगे बढ़ने नहीं दिया।

बोले 'जमाना दूसरा क्या था? तुम लोग हर बात में वह जमाना यह जमाना कहकर बात को टाल देते हो। वह जमाना दूसरा कैसे था जरा मैं भी तो सुनूं? तब भी हम भात खाते थे, अब भी भात खाते हैं। उस जमाने में आदमी के भी दो हाथ दो पांव दो आंखें थीं। आज भी वही हैं। अब क्या हम लोगों के चार हाथ पांव उग आए हैं? तब भी सोलह आने का रुपया होता था आज भी सोलह आने का ही है। ये सब असल में तुम लोगों की बड़ी-बड़ी बातें हैं। काम करने का इरादा होने पर ही काम किया जा सकता है। सिर्फ बैठे-बैठे पांव पर पांव चढ़ाए

बोले, 'तुम्हारी कमिटी के मस्वरो की अगर यही मर्जी है तो तुम लोग यही करो। तब मुझे क्यो बुलाया ? मैं कौन हू ? मेरी राय लेने के लिए मुझे क्या बुलाया ? मुझे तुम लोगों के इस झमेले से कोई मतलब नही है '

अचानक क्लास का घटा बज उठा।

पडितजी फिर और नहीं रुके। कमरे से निकलकर बाहर चल गए।

उस दिन अचानक कमरे से बाहर नजर पडते ही गौर पण्डितजी ने देखा कोई एक जना खड़ा है।

'क्या चाहिए ? कौन ? अरे सतोष बाबू !'

सतोष बाबू घर-गृहस्थी वाले आदमी हैं। डरते डरते अन्दर आए।

गौर पण्डितजी ने कहा, 'क्या बात है ? फ्री शिप के लिए आए हो क्या ? वह काम मेरे पास आने से नही होगा, अब वह जमाना नही है सतोष बाबू। अब आदमी के चार हाथ पाँव आग उग आयी हैं। अब दया, सहानुभूति किसी के पास नहीं मिलेगी। जब तक मैं था बहुत दया सहानुभूति की। अब स्कूल की आमदनी घट गयी है खरचे बढ गए हैं। वह सब मुझसे नही होगा। आप सेक्रेटरी बाबू के पास जायें। प्रेसीडेण्ट बाबू के पास जायें '

कहकर अपने काम म मन लगाने की कोशिश करने लगे।

लेकिन सतोष बाबू अभी तक खड़े थ।

बोले 'जी पण्डितजी, यह बात नहीं है '

'यह बात नही है, तो फिर क्या ?'

'जी मेरे लडके को इस बार प्रमोशन नहीं मिला।'

'क्या प्रमोशन नही मिला ? किस विषय मे फेल हुआ है ?'

'जी तीन विषयों में फेल है।'

गौर पंडितजी नाराज हो गए।

बोले आप भी अजीब आदमी [redacted] सतोष बाबू! यह स्कूल है न कि बच्चों का खेल? आप का लड़का तीन-तीन विषयों में फेल है और आप उसके प्रमोशन की सिफारिश के लिए आए हैं? आपके लड़के का कुछ भी नहीं होगा। निमाई साह की दुकान में माल तौलेगा। एक साल और पढ़े। फेल हुआ अच्छा हुआ। आप का लड़का जरा भुगते तभी उसे समझ आएगी

सतोष बाबू ने कहा जी बीमारी की वजह से पढ़ाई नहीं कर पाया

गौर पंडितजी ने कहा, 'नहीं-नहीं मुझसे नहीं होगा, मैं उसे पास नहीं करा सकता, आप हेड मास्टर के पास जायें

सतोष बाबू ने कहा जी आप अगर एक बार कह देते तो हेडमास्टर साहब पास करने को राजी हो जायेंगे

गौर पंडितजी ने कहा, लेकिन मैं क्यों कहने जाऊं? आपके लड़के के लिए मैं कहने जाऊं? इम्तहान से पहले क्या आपका लड़का मेरे पास पढ़ने के लिए आया था? अब जाइए, मुझे काम करना है आप के साथ बेकार की बात नहीं कर सकता। मेरे पास वक्त नहीं है '

कहकर अपना काम करने लगे।

सतोष बाबू मामूली आदमी थे। एकदम सीधे सादे बाबू। बलरामपुर से रोज डेली पसेंजरी करते। हताश होकर लौट पड़े। लौटकर आहिस्ते-आहिस्ते मैदान की ओर गए। मैदान माने बगीचा, नारियल और आमों का बगीचा। वहीं पर बड़ा तालाब था। तालाब के किनारे बलाई बाबू खड़े थे। बोले 'सतोष बाबू क्या हुआ?

सतोष बाबू ने पास पहुंचकर कहा 'नहीं बलाई बाबू नहीं हुआ।'

'क्यों? पंडितजी ने क्या कहा?

सतोषबाबू बोले वह तो बुरी तरह नाराज हो गए। कहने लगे—

हेडमास्टर के पास जाइए मैं कौन हूँ ? मैं स्कूल का कोई नहीं हूँ'

बलाईबाबू बोले, 'अरे साहब मैंने आपसे कितनी बार कहा है कि लड़के को हमारे कोचिंग स्कूल में भेज दीजिए। पास होने की फिक्र नहीं करनी होगी। तब तो सुना नहीं'

लेकिन एक साल तो खराब होगा ?'

'साल खराब होगा तो क्या किया जा सकता है। बाद में जिन्दगी ही खराब हो जाएगी।'

कोचिंग स्कूल कहां पर है ?'

'अरे आप कोचिंग स्कूल नहीं जानते ? शशधरबाबू का मकान तो जानते हैं ?

सतोषबाबू ने कहा, वह जानता हूँ'

बलाईबाबू ने बतलाया, 'तो शशधरबाबू ने अपने घर में ही तो स्कूल *खोला है। हम सब पढ़ाते हैं।'*

'फीस कितनी है ?

'तीस रुपए।'

तीस रुपए की बात सुनकर सतोष बाबू उछल पड़े। बोले, 'हर महीने इतने रुपए कहां से दूंगा बलाईबाबू ? गरीब आदमी ठहरा, ढाई सौ रुपए तनख्वाह मिलती है। तीस रुपया निकल जाएगा तो और बच्चे क्या करेंगे बलाईबाबू ? उनका भी तो खरचा है'

बलाइबाबू ने एक सिगरेट सुलगाई। धुआं उगलते हुए बोले य सारी बातें लड़के के पैदा होने से पहले सोचने की थी।'

सतोषबाबू वहां और नहीं रुके। दूसरी ओर चले गए।

इतिहास का कोई निश्चित नियम-कानून न होने पर भी एक आदि नियम

तो है ही। उसके मुताबिक एक जाता है और एक और कोई उसकी जगह लेता है। लेकिन गौर पडित मुह से कहने पर भी वह स्कूल छोड कर और कही जा नही पाते थे कही जाना उन्हे अच्छा भी नही लगता था। घूम फिरकर स्कूल के अपने कमरे मे आकर जसे उन्हे शाति मिलती थी।

कोई आता तो उससे उसी कमरे मे मुलाकात करते।

रानी कहती 'नाना, इसके माने तुम घर पर खाली खाने और सोने आते हो?

गौर पडित कहते 'नही री अपने हाथो बनाया है, इसलिए मोह हो गया है।

रानी कहती अच्छा तो हम लोगों से तुम्हे मोह नहीं है?'

गौर पडित मुस्कराए 'अरे तू तो मेरी रानी बिटिया है तुझसे तो मोह होगा ही।

इसके अतिरिक्त तेरे बाबा हैं मा है मैं हूँ सभी मिलकर तुझे प्यार करते हैं। लेकिन स्कूल बेचारे का कौन है तू ही बता? स्कूल के बाबा हैं माँ है और नाना हैं?'

रानी कहती वाह रे स्कूल के तुम तो हो।'

गौर पडित कहते, मैं अब बूढा हो गया हू। मैं क्या अब पहले की तरह स्कूल देख पाता हूँ। दूसरे मास्टर भी नही देखते, लडके भी नही देखते।

रानी कहती नही, मेरे बाबा तो देखते हैं, बाबा तो सेक्रेटरी हैं '

गौर पडित ने कहा तेरे बाबा सेक्रेटरी हैं तो क्या हुआ? हैं तो बच्चे ही। कमिटी म सब बच्चे हैं। इसके अलावा उन लोगो के निजी काम भी तो है। स्कूल के लिए सोचने की फुरसत किसी के पास नही है। अपना काम-काज करने के बाद समय बचता है तो स्कूल की बात सोचते हैं। और मुझे काम ही क्या है? मैं अगर स्कूल नही देखू तो ये लडके लोग सब गडबड कर देंगे

रानी कहती, 'ओ माँ, बाबा बच्चे हैं ?'

'बाबा तो बूढ़े हो गए—तुम भी क्या क्या कहते हो कुछ ठीक नहीं रहता।'

गौर पंडितजी रानी के सर पर हाथ फेरते हुए कहते, 'हाँ री, मेरे लिए ये सब बच्चे हैं। नरेन, निमाई, भव सब—मैंने इन लोगों को पैदा होते देखा है, जानती है तू—मैं तो हमेशा का बूढ़ा हूँ री।'

रानी भी कहती, 'ठीक है बाबा अगर बच्चे हैं तो मैं क्या हूँ ?'

गौर पंडित कहते, 'तू मेरी रानी माँ है।'

रानी कहती, 'धत् मैं तुम्हारी माँ क्यों होने लगी। मुझे तुम्हारी माँ नहीं होना है, तुम रात दिन अपना स्कूल लिए पड़े रहोगे, मुझे देखोगे भी नहीं, मैं तुम्हारी माँ क्यों होने लगी। तुम नानीअम्माँ को ही कहाँ देखते हो।'

पास बैठी नानीअम्माँ सिलाई कर रही होतीं।

कहतीं, 'तू यह सब देखती है ? तेरी बुद्धि तो खूब है।'

गौर पंडितजी कहते, 'बड़ी होने पर देखना यह बहुत बुद्धिमान होगी।'

रानी कहती, 'वाह, अभी क्या मैं बुद्धू हूँ ? मुझमें तो अभी भी खूब बुद्धि है। अब बुद्धि नहीं होती तो मैं स्कूल में फर्स्ट कैसे आती ?'

तभी वासंती आ पहुँचती।

उसे लड़की को वहाँ देखकर आश्चर्य होता। कहती, 'वाह री, तू यहाँ बैठी-बैठी गप्प लगा रही है, मैं तुझे कब से ढूँढ रही हूँ।'

शिवानी कहती, 'तुम तो जानती हो बहू कि वह यहाँ आती है फिर इतनी फिक्र क्यों करती हो ?'

वासंती कहती, 'ठीक है आए लेकिन कहकर तो आए मुझसे। इतनी बड़ी धींगड़ी हो गयी अब क्या हर वक्त घर से बाहर रहना ठीक है। ये नाराज होते हैं—मुझपर डाँट लगाते हैं।'

शिवानी ने कहा, 'तुम नरेन से कह देना कि उसे डाँटें नहीं।'

तो है ही। उसके मुताबिक एक जाता है और एक और कोई उसकी जगह लेता है। लेकिन गौर पंडित मुह से कहने पर भी वह स्कूल छोड कर और कही जा नही पाते थे वही जाना उन्हें अच्छा भी नहीं लगता था। घूम फिरकर स्कूल के अपने कमरे म आकर जब उन्हें शांति मिलती थी।

कोई आता तो उनसे उसी कमरे म मुलाकात करते।

रानी कहती 'नाना, इसके माने तुम घर पर खाली खाने और सोने आते हो ?

गौर पंडित कहते, नही री, अपन हाथो बनाया है इसलिए मोह हो गया है!

रानी कहती 'अच्छा तो हम लोगो से तुम्हे मोह नही है ?'

गौर पण्डित मुस्कराए, अरे तू तो मेरी रानी बिटिया है तुझसे तो मोह होगा ही।

इसके अतिरिक्त तेरे बाबा है, मा है मैं हूँ सभी मिलकर तुम प्यार करते हैं। लेकिन स्कूल बेचारे का कौन है, तू ही बता ? स्कूल के बाबा हैं मा है और नाना है ?'

रानी कहती 'वाह रे स्कूल के तुम तो हो।'

गौर पडित कहते मैं अब बूढा हो गया हू। मैं क्या अब पहले की तरह स्कूल देख पाता हू। दूसरे मास्टर भी नही देखते लडके भी नही देखत।'

रानी कहती 'नही मेरे बाबा तो देखत है बाबा तो सेक्रटरी हैं

गौर पण्डित ने कहा 'तेरे बाबा सेक्रेटरी हैं तो क्या हुआ ? हैं तो बच्चे ही। कमिटी म सब बच्चे हैं। इसके अलावा उन लोगो के निजी काम भी तो हैं। स्कूल के लिए सोचने की फुरसत किसी के पास नही है। अपना काम-काज करने के बाद समय बचता है तो स्कूल की बात सोचते हैं। और मुझे काम ही क्या है ? मैं अगर स्कूल नही देखू तो ये लडके लोग सब गडबड कर देंगे '

रानी कहती, 'नानीअम्मा माँ से कहो मैं तुम्हारा कितना काम कर देती हूँ।'

वासती कहती 'देखती हू बडी काम करने वाली हो गयी है'

शिवानी कहती, 'नहीं बहू तुम्हारी लडकी बडी कामोदा है, मेरा दाल चावल बिनवा देती है। बडी छाड देती है'

'ओ माँ क्या कहती हो काकी मा ? यह बडी छोड देती है ?'

शिवानी कहती हां बहू तुम विश्वास नही करोगी, कितनी अच्छी तरह से बडी छोडती है मैं तो उस दिन देखकर हैरान रह गयी। सिरे कितने साफ और नुकीले आते हैं। और भी कितना ही काम कर देती है मेरा। मेरे तो आँख नही है सुई म धागा डाल देती है।'

रानी बोल पडती 'मैं भात भी तो पका लेती हू है न नानी-अम्मा ?'

ये सब बहुत पहले की बातें है। बहुत पहले से ही रानी जैसे इस घर की लडकी हो गयी थी।

उसे बुलाने आयी वासती लौट जाती। कहती 'तो यह तुम्हारे पास रही काकी माँ, मैं चलू'

शिवानी कहती तुम जरा भी फिकर न करो बहू म इसे खिला पिलाकर शभू की माँ के साथ तुम्हारे पास भिजवा दूगी, और नही तो तुम्हारे काकाबाबू ही पहुचा आयेंगे'

वासती जल्दी से घर चली जाती।

लेकिन उसके बाद कितना कुछ हो गया। दिलदारपुर मे लडकी मर गयी, फटिक बलरामपुर आया। आकर स्कूल म भर्ती हुआ। रानी भी इस बीच बडी हो गयी। वही जो स्कूल गौर पडित या सर दद बना हुआ था, वह स्कूल भी कितना बडा हो गया। एक दिन संस्कृत कम्पल्सरी से आप्शनल हो गयी। अतएव स्कूल शुरू होने पर स्तोत्रपाठ का जो विषय था वह भी खतम हो गया। क्यो ? नही, यह धर्म निरपेक्ष देश है, यहाँ किसके धर्मबोध को कब चोट पहुँच जाए, कौन जानता है।

रानी कहती नानीअम्माँ माँ मुझे हर वक्त धीगडी धीगडी कहती है।'

वासती कहती 'धीगडी लडकी को धीगडी नही कहूगी तो क्या छोटी-सी मुन्नी कहूगी ?

रानी कहती ठीक है, मैं धीगडी हो गयी तो मेरे लिए साडी क्यो नही खरीदती ?

शिवानी सुनकर हस पडती। फिर कहती 'ठीक कहती है रानी बहू अब तुम इसकी बात का जवाब दो ?'

वासती कहती खाली बडी बडी बात बनाना आ गया है एक काम के भी मतलब की नही है खाली बात—चल शाम हो रही है घर चल

रानी नानीअम्मा से चिपट जाती। कहती, मैं अभी घर नही जाऊगी '

शिवानी कहती, रहने भी दे न बहू, यही रहने दे—तुम उसके पीछे क्यो पडी हो ?

वासती कहती वह सारे दिन यहा आकर आप लोगो को परेशान क्या करेगी ? आप लोगो का भी तो सारे दिन कोई काम नहा करने देगी

शिवानी कहती तुम भी क्या कहती हो बहू वह आती है तो थाडी देर बात करके जी बहल जाता है।

अब वासती हस पडती। कहती, वाह, काकी मा को बात करने वाली तो अच्छी मिली

शिवानी कहती नही वह तुम जानती नही हो वह आती है तो दो बात सुन पाती हूँ। तुम्हार काका बाबू ता सारे दिन स्कूल के पीछे ही पागल रहते हैं। छुट्टी क दिन भी नही काम के दिन भी नहा। यह बचारी आती है मैं दाल चावल साफ करती हूँ और इसकी बात सुनती हू। इसके बिना मैं किसके सहारे रहती ?'

'हरिलाल तुम इसे रुपये क्यो नही दे रहे ? ढाई सौ रुपये का बिल लिए एक साल से चक्कर काट रहा है ? इसका बिल चुकता क्यो नहीं कर देते ?

कहकर उस आदमी के हाथ से बिल लेकर हरिलाल की ओर बढाया । किसी ट्रेडिंग कपनी का बिल था । लेबोरेटरी के लिए उन लोगो ने कब एक एपरेटस सप्लाई किया था ।

हरिलाल ने देखकर कहा इस बिल को लेकर यह आपके पास क्या गया ? मैंने तो इससे एक-दो महीने बाद आने को कहा था । कैश मे इस वक्त इतना रुपया नहीं है ।'

गौर पडितजी को बडा आश्चर्य हुआ ।

उन्होंने कहा ढाई सौ रुपये भी नही हैं ?'

जी पडितजी और कई पेमेंट करने पडे न, इसीलिए जरा मुश्किल हो गई है ।

गौर पडितजी अपने को और नही रोक पाए ।

बोले, 'आजकल तुम लोगों का हुआ क्या है, ढाई सौ रुपये का बिल एक साल से रोककर रखा है ? मेरे जमाने मे तो कभी ऐसा नही हुआ ?

कहकर आफिस से निकल कर पडितजी भवरजन के कमरे मे घुसे । हरिलाल भी साथ आया ।

'यह तुम लोगो की कौन-सी अक्ल है भव ? यह देखो, ढाई सौ रुपये के छोटे से बिल का एक साल से पेमेंट नही किया गया । इस बेचारे को हरिलाल महीनो से चक्कर लगवा रहा है यह तुम लोगो का कौन सा इतजाम है भव ? यह क्या हो गया है आजकल तुम लोगो को ? मेरे वक्त म तो कभी भी ऐसा नहीं हुआ ?'

बिल देखकर भवरजन ने कहा 'जी हाँ, मेरे पास भी आया था । लेकिन जरा मुश्किल हो गयी है पडितजी, इस वक्त हरिलाल के पास रुपये की जरा तगी है '

उस रोज अपने कमरे में बैठे गौर पंडितजी लड़कों की कापियाँ जाँचने में मशगूल थे।

अचानक जैसे कोई बाहर दरवाजे के पास आकर रुका।

'पंडितजी पालागन।'

अनजान आदमी। पंडितजी ने कहा, 'कौन हो भाई? क्या चाहते हो?'

'आपसे अर्जी थी।'

'कैसी अर्जी?'

'मेरा एक ढाई सौ रुपये का बिल बाकी है।'

गौर पंडितजी ने कहा, 'बिल के रुपये बाकी हैं तो मेरे पास क्यों? रुपये देने का क्या मैं मालिक हूँ? तुम हमारे कैशियर हरिलाल के पास जाओ। या हेडमास्टर भवरजन हैं उनके पास जाओ।'

उस आदमी ने कहा, 'जी, गया था। दोनों के पास ही गया था।'

'तो उन्होंने क्या कहा?'

'कहा कि रुपये नहीं हैं।'

गौर पंडितजी को बड़ा अजीब लगा। उन्होंने कहा, 'रुपया नहीं है? ढाई सौ रुपये नहीं हैं? हो सकता है रुपये नहीं होंगे। तुम कुछ दिन के लिए सब्र कर लो। हर समय क्या हाथ में रुपये रहते हैं? कुछ दिन बाद आ जाना।'

'जी, एक साल हो आया। बहुत दिनों से रुपया रुका हुआ है।'

'एक साल? कहते क्या हो? ढाई सौ रुपये के लिए तुम्हें एक साल से घुमा रहे हैं?'

कहकर उठ खड़े हुए। फिर बोले, 'आओ तो मेरे साथ! मैं तुम्हें हरिलाल के पास ले जाता हूँ।'

हरिलाल दूसरी मंजिल पर बैठता था। हेडमास्टर बगलवाले कमरे में। काम करते-करते बीड़ी पी रहा था। पंडितजी को देखते ही बीड़ी फेंक कर जूते से मसल दी।

चलाओ।

यह कर पंडितजी और नहीं रुके। खटखट करते बाहर चले गए।

हरिलाल अभी तक वहां खड़ा था। पंडितजी के चले जाने पर बोला, ऐसा करने पर तो काम चलाना मुश्किल है हेडमास्टर साहब।'

भवरंजन बोला 'आप जाइए हरिलाल बाबू मैं आकर सेक्रेटरी से बात करता हूं।'

लेकिन काम क्या एक था। और पंडितजी क्या-क्या सम्हालते। स्कूल के किसी कमेटी में वे नहीं थे फिर भी हर मामले में अपना माथा खपाना पड़ता कभी कभी।

शिवानी कहती, 'इस उमर में तुम यह सब लेकर अपना दिमाग खराब क्या करते हो?

और पंडितजी कहते दिमाग खराब नहीं करूंगा? मैंने इतनी मुसीबतें उठाकर इस स्कूल को बनाया और सब मिल मिलाकर उसे खतम कर देंगे?

शिवानी कहती, 'लेकिन तुम हमेशा तो रहोगे नहीं। तब क्या स्कूल चलेगा नहीं।'

और पंडितजी कहते, खाक चलेगा। सब तहस-नहस हो जाएगा, तुमसे कहे रखता हूं। दो चार जो अच्छे मास्टर हैं उन्हें भी क्या ये लोग ठीक से काम करने देंगे? कहते हैं रुपया नहीं है लेकिन आखिर रुपया जाता कहां है?'

फिर जैसे अचानक मायूस हो उठते। कहते 'खैर, छोड़ो, मुझे क्या है? मैं कितने दिन और हूं? मर जाने के बाद समझ में आएगा। सब मिलकर स्कूल का सत्यानाश पीट देंगे। अभी ही कुछ बाकी नहीं छोड़ा

इस तरह की तगी होना तो अच्छी बात नही है। उस रोज शिवेन्दु कह रहा था—उसके सेक्शन मे कोई एपरेटस चाहिए। तुम लोग वह भी नही खरीद रहे। ऐसा करने पर लडके पढेंगे कैसे? तुम सब मिलकर क्या स्कूल को बन्द कर देना चाहते हो? ऐसा करने से स्कूल रहेगा?

फिर बोले तो अब क्या करोगे?'

भवरजन ने उस आदमी की ओर देखकर कहा, तुम अगले महीने मे एक बार मेरे पास चले आना। तुम्हारा पूरा भुगतान कर दिया जाएगा। चिन्ता करने की कोई बात नही है

वह आदमी बिना लिए नमस्ते करके चला गया।

गौर पडित बोले यह बडी बुरी बात है भव। मेरी समझ मे नही आता कि इतना सारा रुपया कहाँ चला जाता है। ढाई सौ अस्सी छोटी रकम के लिए एक साल से उस आदमी से चक्कर लगवा रहे हो इससे स्कूल की बदनामी नही होती? मेरे जमाने मे तो कभी भी यह बात नही हुई। मथुरा साह जी इस बात को जरा भी पसद नही करते थे। कहते थे—जिसका जो पावना है वक्त पर देना चाहिए उससे काम ठीक होता है।

भवरजन ने कहा आपको तो मालूम है पडितजी इन दिनो रुपयो की बडी तगी चल रही है टीचर्स की तनखाह नही बढ रही है लडको की फीस भी नही बढा पा रहे।'

गौर पडितजी ने कहा अगर कुछ भी किया नही जा सकता तो तुम्हारी कमिटी है किस मतलब की? कमिटी क्या सिर्फ खाने के लिए है? मास्टर्स लोग रोज कितने रुपये राजभोग और समोसा पर खर्च करते हैं जरा तुम्ही बतलाओ? उस वक्त तो रुपए की कमी नही पडती? यही करना था तो स्कूल न बनाकर लोहे लक्कड का कारोबार करना ही ठीक रहता, सरसो के तेल या मनिहारी की दूकान मे ही ज्यादा नफा होता। वह सब न करके आखिर यह स्कूल क्यो बनाया, तुम्ही

बतलाओ ।

यहकर पण्डितजी और नहीं रुके । खटखट करते बाहर चले गए ।

हरिलाल अभी तक वहीं खड़ा था । पंडितजी के चले जाने पर बोला, ऐसा करने पर तो काम चलाना मुश्किल है हेडमास्टर साहब ।'

भवरजन बोला 'आप जाइए हरिलाल बाबू मैं जाकर सेक्रेटरी से बात करता हू ।

लेकिन काम क्या एक था । और पंडितजी क्या-क्या सम्हालते । स्कूल के किसी पमेले म वे नहीं थे, फिर भी हर मामले म अपना माथा खपाना पड़ता कभी कभी ।

शिवानी कहती, इस उमर म तुम यह सब लेकर अपना दिमाग खराब क्या करते हो ?'

गौर पंडितजी कहत 'दिमाग खराब नहीं करूगा ? मैंने इतनी मुसीबतें उठाकर इस स्कूल को बनाया और सब मिल मिलाकर उसे खतम कर देंगे ?

शिवानी कहती, 'लेकिन तुम हमेशा तो रहोगे नहीं । तब क्या स्कूल चलेगा नहीं ।'

गौर पंडितजी कहते 'खाक चलेगा । सब तहस-नहस हो जाएगा, तुमसे कहे रखता हू । दो चार जो अच्छे मास्टर हैं उन्हें भी क्या य लोग ठीक से काम करने देंगे ? कहते है रुपया नहीं है लेकिन आखिर रुपया जाता कहाँ है ?'

फिर जस अचानक मायूस हो उठते । कहते खर, छोड़ो, मुझे क्या है ? मैं कितने दिन और हूँ ? मेरे जाने क बाद समझ म आएगा । सब मिलकर स्कूल का सत्यानाश पीट देंगे । अभी ही कुछ बाकी नहीं छोड़ा

है तब तो और भी मजा होगा। खर जो होना है सो हो, मुझे क्या पड़ी है ? मैं हमेशा तो बठा नहीं रहूँगा '

कहने को बात कहते लेकिन बिना स्कूल के मामले म सर खपाए जसे उनका खाना हजम नहीं होता था।

पडितजी हैं ? पडितजी !'

पडितजी को बडे जोर का गुस्सा आ गया। जरूर कोई परिगार होगा या कोई गाजियन। लड़के की फीस माफ कराने आया होगा।

अदर से ही चिल्लाए 'नही मै घर म किसी से नहीं मिलूगा। स्कूल मे हडमास्टर से जाकर जा कहना है कहा। मैं स्कूल का काइ नहीं हू।'

जी एक मिनट के लिए अगर मेरी बात सुन लेते, बडी जरूरी बात है

पडितजी कहते, नहीं, घर म नहीं होगा मैं किसी को पास नहीं करा सकता।'

आखिरी दिनो मे पडितजी इन लोगो से परेशान हो उठे थे। हर किसी को सुविधा चाहिए किसी के लडके को पास कराना है, किसी की फीस माफ करानी है एक न एक फरमाइश लगी ही रहती। लेकिन एक दफा किसी तरह पडितजा तक पहुच पान क बाद पडितजी जसा आदमी मिलना मुश्किल था।

लाग कहते जो भी कह लें असल म आप ही तो सब हैं पडितजी।

गौर पडितजी कहते, मैं ही सब हू माने ? मैं कस सब हो गया ? स्कूल का हडमास्टर नहीं है ? सकटरी नहीं ह ? प्रेसीडेंट नहीं है ? कमिटी नहीं है ?'

लोग कहते, 'उनके होने स क्या होता है, आप एक दफा जाकर देखिए, स्कूल कसे चलता है

गौर पडितजी के चेहरे पर फीकी मुस्कान खल जाती। फिर कहते 'अरे राजा के मरन के बाद राज्य चलता है मैं कौन-सा बडा भारी महारथी हूँ '

फटिक किसी किसी रोज झुझला उठता। रात को पानी बरसने पर जब सारे कमरे मे पानी भरने लगता तो उसे ख्याल नहीं रहता। शिवानी जिस जगह पानी चू रहा होता उसके नीचे बाल्टी रख देती। बाल्टी जब पानी से भर जाती तो बाहर ले जाकर उसका पानी फेंक देती और बाल्टी फिर से उसी जगह रख देती। सारी रात शिवानी को यही करना पड़ता। छत अगर एक जगह से चू रही होती तो कोई बात न थी, लेकिन यहाँ तो पूरी छत म छेद थे। शिवानी फटिक से कहती, अरे तेरे बिस्तरे पर पानी पड रहा है वहाँ एक बाल्टी रख दे बेटा ,

फटिक कहता 'मुझसे नहीं होगा भीग रहा है तो भीगे ,'

शिवानी कहती,'भीग जायेगा तो सोएगा कहा ? तेरे नाना ही कहाँ सोयेंगे ?'

फटिक कहता, 'नहीं सोना मुझे, तुम्हारे इस सडे मकान म सोए मेरी बला।

एक अच्छा-सा मकान नहीं बनवा सकतीं ? सुशील का मकान कितना नया है। उसके यहा तो पानी नहीं भरता। कितना अच्छा नया सा मकान है वैसा एक मकान नाना नहीं बनवा सकते ?'

तब तक बिस्तर पूरी तरह भीग चुका होगा। शिवानी को खुद ही उठकर तखत खिसकाना पडता। पानी से बचाकर एक कोने मे बिस्तर लगाना पडता। लेकिन थोडी ही देर बाद वहा भी पानी चूने लगता। तब शिवानी भी झुंझला उठती।

अचानक बाहर से नाना की आवाज आती 'फटिक, ओ फटिक दरवाजा खोल।'

और पंडितजी खुद भी बुरी तरह भीग गए थे। शिवानी के दरवाजा खोलते ही पंडितजी आगन पार कर बरांडे पर पाव रखते। बरांडा भी भीग गया था।

सब देख-सुनकर जैसे मन ही मन कहते,'अरे यहाँ तो सब भीग गया है। तुम लोग अब कहाँ सोओगे ?'

उनकी बात जैसे कोई भी सुन नही पाता। कमरे म अदर आकर देखते—कमर भर म बाल्टी तस्ट और थाली रखी हैं। सच ही तो ये लोग कहा सोयेंगे।

शिवानी फश पर के पानी को कपडे से पोछ रही थी। पडितजी की बात सुनकर उससे न रहा गया।

बोल उठी 'हम लोगो की फिकर तुम्हें करने की जरूरत नही है। तुम अपने स्कूल की सोचो, उसी से इष्ट लाभ होगा। हम लोगो के बारे म कभी सोचा है जो आज सोचने बठे हो ?

फटिक भी काफी देर से झुझलाया बठा था। बोला 'तुमस एक नया घर नही बनवाया जाता नाना ? सबके घर कितने नए हैं! और किसी के घरो की छत से तो पानी नही टपकता '

घर ! बच्चा ही है न जानता नही है कि घर बनवाने म कितना रुपया खरच होता है।

गौर पण्डितजी हस पडे। फिर बोले अरे घर बनवाना क्या इतना सहज काम है ?

फटिक बोला तो छत तो ठीक कराते ?

शिवानी फटिक की बात को ही बढाकर कहती लेकिन फटिक ने ऐसी कौन खराब बात कह दी ? नया घर किसने नही बनवाया है ? तुम्हारा भव, उसी दिन का लडका उसने नया घर नही बनवाया ? तुम्हारे स्कूल के सारे मास्टरो ने हो तो घर खडे कर लिए हैं। शशधरबाबू ने घर नही बनवाया ?'

गौर पडितजी पत्नी को दिलासा दन की कोशिश करत। कहत 'उन लोगो की बात क्यो कर रही हो ? वे लोग तो नोटस लिखत हैं कोचिंग स्कूल खोल्ते है '

लेकिन तुम्हे किसने नोट की किताब न लिखने की कसम दिला दी है, सुनू जरा ? कोचिंग स्कूल खोलने को तुमसे किसने मना किया है ? तुम क्या एक सत हो गए हो जो नोट की किताब लिख देने से पाप चढ

जाएगा ?

'कितने लोगों ने तुमसे अपने लड़कों को पढ़ाने के लिए विनती की। लेकिन कहाँ, कभी तुमने घर की बात सोची ? अगर इतने ही बड़े संत महात्मा थे तो ब्याह करने कौन-सा मुंह लेकर गए थे ? गृहस्थी बसाने के लिए किसने तुम्हें कसम दिलाई थी ?'

बात एक बार शुरू होने पर वह जल्दी पूरी नहीं होती। काफी रात गए कब बारिश रुक गयी पानी टपकना भी बन्द हो गया। पंडितजी खाट पर बैठे कापियां जांच रहे थे। लेकिन बार-बार जैसे मन उचाट हो जाता। बार-बार शिवानी की बातें दिमाग में चक्कर काटतीं—किसने उन्हें नोटिस लिखा से रोका ? किसने उन्हें कसम दिलाई कि लड़कों को पढ़ाकर उनसे फीस न लेना ?

लेकिन वह थोड़ी देर के लिए। मन जरा चंचल हो उठता बस। उसके बाद फिर सब कुछ ठीक हो जाता फिर कापियां देखने लग जाते। पानी बरसना बंद हो गया था। पास की पोखर से मेढकों के टर्राने की आवाज आ रही थी। चारों ओर जैसे सनसनी का सा भाव फैला था। और पण्डितजी ने आखिरी कापी देखकर रोशनी गुल कर दी। उसके बाद उसी पत्थर जैसे सख्त तख्त पर लेटकर सो गए।

उस साल लड़कों की फीस लगाए जाने का सरकुलर निकला। और पंडितजी के हाथ में सरकुलर आया। जनार्दन से देखने को लिया। बोले, 'देखूं तो क्या है रे ?'

जनार्दन ने कहा, 'जी, लड़कों की फीस लगी है '

और पंडितजी ने सब पढ़ा फिर बिना कुछ कहे सरकुलर उन्होंने जनार्दन को वापस कर दिया। मुंह से कुछ नहीं कहा। फिर अपना काम

करने लगे। भाड मे जाए सब, जो जी मे आए करो। मेरा क्या है ? स्कूल का सत्यानाश होगा। लडको का नुकसान होगा।

लेकिन ज्यादा देर चुप नही रह पाए। मन ही मन जल छटपटा रहे थे। कमरे के बाहर चारो ओर देखा। पूरे स्कूल म क्लासे चल रही थी। सब मन लगाकर पढ रहे थ या शायद मन लगाकर नहीं पढ रहे थे, उन्ही क डर के मारे शायद सब चुप थे या शायद वे लोग शोरगुल कर रहे थे। उन्ही के कानो म शोरगुल की आवाज नहा आ रही थी।

अचानक एक भले आदमी ने उनके कमरे के बाहर आकर नमस्कार किया। कहा नमस्कार पडितजी।'

क्या चाहिए ? मेरे पास क्यो आए है ? मैं इस स्कूल का कोई नही हू आप हेडमास्टर क पास जाइए जो कहना हो जाकर उन्ही से कहिए।'

उस आदमी ने कहा 'नही मैं आपके पास ही आया हू

क्या काम है ?'

जी मैं एक सम्बन्ध के सिलसिले म आया हूँ।

कैसा सम्बन्ध ?'

'विवाह का।

विवाह ? विवाह की बात सुनकर गौर पडितजी हैरान रह गए।

'हुगली मे जमादार रतन नारायण चौधरी की एकमात्र सतान है—उसी क सम्बन्ध क लिए कन्या के बारे म बात करने आया हू।

गौर पडितजी ने कहा लेकिन कन्या कहा है ? मरे तो किसी सम्बन्धी की कन्या है नहीं।

नहा पडितजी इस स्कूल क सक्रेटरी नरेन चक्रवर्ती की लडकी है न मैं उसी क बारे म आपसे बात करने आया हू '

गौर पडितजी ने कहा 'लेकिन इन सब बातो क लिए स्कूल म क्यों ?

घटक बोला 'जी मैं आपके घर गया था लेकिन आपने घर के भीतर

ने स्कूल जाने को कहा, इसलिए स्कूल आया हूं।'

'लेकिन जिसकी लडकी है उसके पास तो जाइए। मैं कौन हूं ? रानी तो मेरी लडकी नही है। नरेन के घर जाइए उसी से बात चलाइए।'

घटक बोला, 'लेकिन मैंने तो सुना है वह आपकी लडकी की तरह है आप ही के घर ज्यादातर रहती है। एक बार आप हां कर दें तो नरेन बाबू मना नहीं करेंगे।'

अरे नहीं-नही यह किसने कहा? गौर पंडितजी ने कहा, 'मेरी बात नरेन क्यों सुनने लगा ? मैं कौन हूं ? नरेन भी मेरा कोई नही है मैं भी नरेन का कोई नही हूं। आपने गलत सुना है।'

घटक शायद इस लाइन में घिसा हुआ आदमी था।

वह बोला 'जी यह सम्बन्ध तो आपको कराना ही पडेगा। आप दया करके एक बार चलकर पात्र को देख लें। मैं आपको गाडी से ले जाने का इंतजाम कर दूंगा आपको कोई कष्ट नही होगा।'

'लेकिन पहले नरेन से तो बात कर ली जाए। उसकी लडकी है उसी से पहले बात नहीं करेंगे ?'

घटक बोला, 'आप पहले स्वयं एक बार देख लीजिए न, फिर नरेन बाबू से बात कर ली जायगी।'

कहने के बाद फिर बोला, 'रतन नारायण चौधरी हंसखली के जमींदार हैं समझते ही हैं। सोलह लाख की सम्पत्ति के मालिक। पहले और भी ज्यादा सम्पत्ति थी पर अब वह बात नहीं है। लेकिन नहीं-नहीं करके भी जो है वही बहुत अधिक है। उन्हीं की एक मात्र संतान है। अतएव देने-लेने के लिहाज से ऐसा सम्बन्ध नहीं मिलेगा। क्या पता से यह लोग एक भी पैसा नहीं चाहते। और आपकी लडकी भी सुख से रह पायेगी। लडका भी सच्चरित्र है।'

'और क्या ? वे लोग क्या नही देखेंगे ?'

'क्या देखी हुई है।'

'क्या कैसे देखी ? कब देखी ?'

घटक बोला, 'लड़की स्कूल जाती है न, उन लोगों ने दूर से देख ली है '

गौर पंडितजी जरा देर सोचते रहे। अवंती के विवाह की बात याद हो आयी। उस बार लड़के को ठीक से नहीं देख पाये। अवंती की बात का ख्याल आते ही उन्होंने पूछा लड़के ने पढ़ाई लिखाई कहाँ तक की है ?

जी बी० ए० पास है। लेकिन नौकरी तो करनी नहीं है। इसी से एम० ए० नहीं किया।'

'और स्वास्थ्य ?

स्वास्थ्य आप स्वयं ही देख लें। इस बारे में मैं अपने मुँह से और क्या कहूँ ? रतन बाबू की बड़ी इच्छा है कि इसी कन्या से सम्बन्ध हो। अच्छा तो आप कब चलेंगे यह बतलाइये ?'

गौर पंडितजी ने कहा मुझे रविवार के अतिरिक्त तो समय मिलता नहीं है

तो वही ठीक है। कहकर घटक ने श्रद्धापूर्वक नमस्कार करके विदा ली। जाते वक्त कहा तो मैं रविवार के रोज सुबह ही आपके घर आऊँगा। आकर आपको अपने साथ ले जाऊँगा।

रविवार की शाम को शिवानी घर पर राह देख रही थी। गौर पंडितजी घर नहीं थे, फटिक भी बाहर था। वीरगंज थिएटर क्लब में पूरे दम पर गाना बजाना चल रहा था।

सुशील ने चुपके से एक बार कहा क्यों रे घर नहीं जाना ?

फटिक हारमोनियम पर उंगलियां चला रहा था और गा रहा था ?

वीरगंज का यह क्लब काफी अरसे से मशहूर है। एक आध बार

घूमते घूमते फटिक सुशील को लिए यहाँ चला आया था। तभी से जान-पहचान हो गयी। बाद में एक रोज फटिक का गाना सुनकर क्लब के सेक्रेटरी ने कहा था, तेरा गला तो अच्छा सधा हुआ है लड़के, थियेटर में पार्ट करेगा?'

यही जैसे—पगले खाएगा, लेकिन कुल्ला नहा करू? वाली बात हो गयी।

फटिक बोला, 'लिलुआपुर में अपने बाबा का थियेटर देखा है मैंने '

उसके बाद सुशील को दिखलाकर बोला, मेरा यह दोस्त भी मेरे साथ थियेटर में काम करेगा '

सुशील का तो डर के मारे बुरा हाल था। वह बोला, 'नहीं भाई, मुझसे नहीं होगा '

फटिक बोला, 'तुझे डर किस बात का है। अरे मैं तो हूँ तुझे सिखला दूंगा।'

सुशील बोला, लेकिन अगर बाबा को पता चल गया तो?'

फटिक ने समझाया, 'पहचानेंगे कैसे? दाढ़ी मूछ लगाकर ड्रेस पहनना और मेक-अप करना पर किसी के बाप का बूता नहीं है कि पहचान ले। तू जरा भी फिकर न कर '

कुछ दिनों में ही रिहर्सल जमने लगा। फटिक और सुशील को पढ़ना नहीं जाना पड़ता था। इम्तहान नजदीक थे। उसकी भी चिन्ता थी। फटिक ने कहा 'अरे सप्ताह में दो-तीन दिन की ही तो बात है, किसे पता लगता है?'

स्कूल की छुट्टी होते ही दोनों बीरगंज के लिए निकल पड़ते। बाद में शाम तक क्लब में गाना-बजाना होता। तभी उसे सुशील को ख्याल आता।

वह कहता, 'चल भाई, अब घर चलें मास्टर साहब आयेंगे '

फटिक कहता, 'अरे छोड़ भी तेरे मास्टर साहब, तू तो पूरा नीरस

है, देखना नहीं गाना चल रहा है, इस तरह बीच मे उठकर जाया जाता है ?'

घर आने पर शिवानी पूछती 'क्यों रे इतनी देर कर दी तूने ? कहाँ गया था ?'

फटिक कहता पढने।

'पढने मान ? किससे पढता है ?

फटिक जवाब देता, एक मास्टर से।

शिवानी फिर पूछती 'कौन सा मास्टर ? पढाने की फीस नहीं लेता ?'

फटिक कहता, 'तुम हर बात मे कचकच क्यों करती हो ? सारे दिन घर मे बठी रहती हो तुम पढने लिखने के बारे मे क्या जानो ?

तेरे नाना को मालूम है ?'

फटिक कहता, नाना को क्या मालूम होने लगा ? तुम कहीं नाना से चुगली न कर बठना। तुम्हारी तो चुगली करने की आदत है हर बात मे। रिजल्ट दिखलाकर नाना को चौंकाकर छोड़ूगा

इसके बाद फिर शिवानी कुछ नहीं कहती। गौर पडितजी काफी रात गए वापस आने पर देखते फटिक दरी बिछाए बठा हिल हिलकर मन लगाकर सबक याद कर रहा है। देखकर गौर पडित खुश हो जाते।

कहते खूब मन लगाकर पढो बेटा। छात्रानाम अध्ययनम तप। समझा न ? विद्यार्थी जीवन मे पढना ही जप तप ध्यान सब कुछ है '

हा तो उस रोज भी वही हुआ। फटिक नाना के घर लौटने के समय का अदाज लगाकर ही पढने बठा था। लेकिन तब भी जमे नाटक के गीत की कड़ियां उसके कान मे गूज रही थी।

> 'तेरे सग मिलन इस बार
> यात्रा के फूलो तले।
> नैन जल की गुथी माला
> डालू तेरे गले।

तेरी पूजा में डूबा रहूँ,
डारूँ दन सब चरण तले।
तस्वीर तेरी रखू बनाकर
अपन मन के इस मदिर म।

क्लब के मास्टर न फटिक से डी शाप मे गाने के लिए कह दिया था। क्लब मे निकल कर सारे रास्त गाना गुनगुनाते हुए घर लौटा था। लेकिन अभी तक गीत की लाइनें माथ मे चक्कर काट रही थी। किताब के पन्ना पर मन लगाने की कोशिश करने पर भी मन ठीक से लग नही रहा था। गीत की कडियाँ जस गले से निकलन को मचल रही थी।

अचानक गौर पडितजी घर म घुस। देखा—फटिक पढ रहा है। उनका दिल खुश हो गया। लडको की फीस बढने की खबर पाकर जैस मायूस हो गए थे फटिक को पढते दखकर उनका जी फिर खुशी से भर गया।

बोले, खूब मन लगाकर पढो बेटा। छात्रानाम अध्ययनम तप—मालूम है न? विद्यार्थी जीवन म जप, तप, ध्यान सब अध्ययन ही है'

अदर के कमरे म शिवानी बैठी हुई धागा लिए चादर सी रही थी। पास ही रानी बैठी थी।

गौर पडितजी ने कहा 'इतनी रात तक रानी को रोक क्या रखा है? उसे पढना लिखना नही है?'

शिवानी ने कहा, मैंने उसे क्यो रोककर रखा है, वह खुद ही रुक गयी है। उसकी माँ बुलाने आयी थी, गयी नही।'

रानी बोली, वाह मैं क्या यो ही बैठी हूँ? काम नही कर रही? मे चली जाऊँगी तो तुम्हारा सुई म धागा कौन पिरोएगा, बोलो? नानी अम्माँ को क्या आँखो से दिखलायी देता है?'

गौर पडितजी बोले, ऐसा बात है तेरी नानीअम्माँ को आँखो से दिखलायी नही देता?'

रानी बोली, 'नही तो क्या, तुमने तो नानीअम्माँ के लिए एक चश्मा

है सुना है आपने ? उन लोगो का कहना है कि आप ही के मारे इतने दिनों से उन लोगो की तनखाह नही बढ पा रही थी ।'

गौर पडितजी कहते सो तो कहेगे ही । तनखाह बढने पर किसे खुशी नही होगी । लेकिन इसके लिए क्या मैंने कभी कुछ कहा ? जमाना खराब है । लडको के माँ-बाप कितनी मुसीबत म है तू ही कह न ! इन लोगो को कितनी खुशी हो रही है उन बेचारो को उतना ही कष्ट होगा । इस अकाल के जमाने मे लडको की फीस बिना बढाये काम नही चलता क्या तू ही बतला '

लेकिन य सब बातें उस दिन रविवार को नही हो पायी । गौर पडितजी तब हँसखली के जमींदार के यहाँ से लौट रहे थे । दोपहर हो आयी थी । हसखली के चौधरी वाकई मे एक जमाने म काफी बडे जमीदार रहे हैं । पुराने ढग की बनी बडी भारी कोठी थी । उन लोगो के किसी पुरखे के जमाने म हाथी घोडे सभी कुछ था । अदर हाथी घुसने लायक बडा भारी पीतल के कीले-जडा दरवाजा था । रतनबाबू ने घूम घूमकर पुरखो के जमाने का सारा ऐश्वय दिखलाया । लडका भी आया । अच्छा खासा हृष्ट-पुष्ट बच्चा । आकर गौर पडितजी के पाँव छूकर नमस्कार किया ।

पडितजी ने सब देखा । दो चार सवाल भी पूछे ।

रतनबाबू ने कहा यह मेरा एक ही लडका है । सतान के नाम पर एकमात्र यही है । मेरी इच्छा है कि नरेन बाबू की कन्या इस घर की वधू हो

गौर पडितजी न मुह से कुछ भी नहा कहा । मन लगाकर सब देखते रहे । लेकिन जबा नहो । आँख चौंधियानेवाले एश्वय की यह प्रदशनी उन्हे बडी कडवी सी लगी । इतने बडे मकान म जहाँ किसी भी असबाब या फर्निचर की कमी नही थी, एक भी किताब उन्हे नजर नही आया । किताबो से भरी एक आलमारी भी नही दिखलायी नही दी ।

लौटते वक्त रास्ते में ये ही बातें सोचते आ रहे थे पंडितजी। अपनी लड़की के विवाह के समय उन्होंने यह सब नहीं देखा, यही सोच सोचकर पण्डितजी को अफसोस हो रहा था। लेकिन अबकी बार वही भूल नहीं दोहरायेंगे। अचानक केदार दीख गया। केदार और उसके साथ और भी कई लोग थे। केदार के कंधे पर मछली पकड़ने का जाल था।

उसने कहा, 'पालागन पंडितजी! कहां आए थे?'

गौर पंडितजी ने कहा, हँसखली गया था। तुम कहाँ से?'

केदार बोला, 'बीरगंज से, एक तालाब में जाल डालने गया था।

पंडितजी ने पूछा मछली मिली कुछ?

केदार बोला, कोई खास नहीं पंडितजी करीब आधा मन पोना मछली आई। लेकिन आज सुबह आपके स्कूल के तालाब में जाल डाला उससे सारी कसर निकल आयी। करीब सात सौ रुपए की मछली मिल गयी।'

पंडितजी चौंक उठे, 'स्कूल के तालाब से? हमारे स्कूल के तालाब से?'

'जी हाँ! पंडितजी खूब बड़ी-बड़ी मछली थी। एक एक मछली दस-बारह सेर की रही होगी खूब नफा किया'

गौर पंडितजी ने कहा 'लेकिन तुमसे मछली पकड़ने को कहा किसने?'

क्यों साहबबाबू ने खुद बुलाकर मुझसे कहा।'

खैर कहा होगा। गौर पंडितजी थोड़ी देर जैसे कुछ सोचते रहे। फिर बोले 'कितने रुपए की बतलायी?

केदार बोला मैंने तो सब मछली सात सौ रुपए में ली। आते वक्त एक बारह सेरी साहबबाबू के घर दे आया'

गौर पंडितजी बोले, अच्छा किया'

मन ही मन बोले, सचमुच केदार ने अच्छा ही किया। जाते समय

मेनेजर ने कहा, 'स्कूल का तालाब है अच्छा पंडितजी। हर बार मछली खूब आती हैं। पिछली बार पाँच सौ की खरीदी थी, अब की सात सौ की। स्कूल के लड़के शोरगुल हो-हल्ला करते हैं इससे मछली की बाढ़ अच्छी होती है'

पंडितजी और नहीं रुके। सुबह उठते ही खा-पीकर हँसखली दौड़े थे और अब दिन ढल रहा था। बुरी तरह थक गए थे। घर लौटते ही शिवानी ने पूछा, लड़का कैसा लगा?

पंडितजी ने कहा, खास नहीं है मुझे पसंद नहीं आया'

क्यों?'

पंडितजी बोले, 'अरे वे लोग बहुत बड़े आदमी हैं।

शिवानी बोली लेकिन बड़े आदमी होना तो अच्छी बात है। रानी आराम से रहेगी। मेरी तरह सारे दिन पिसना नहीं पड़ेगा। नौकर चाकर और दाइयों पर हुकुम चलाएगी

पंडितजी बोले यह तो ठीक कहा तुमने। लेकिन रानी की तरह की लड़की वहाँ खुश हो पाएगी? घर में एक जमाने में हाथी था घोड़े थे गाड़ियाँ थी। रतनबाबू वही सब बातें बार बार करते रहे लेकिन जानती हो, बैठक में एक किताब तो क्या उसकी गंध भी नहीं थी। मैं समझ गया कि इस घर में पढ़ने लिखने का चलन नहीं है। रानी वहाँ कैसे रहेगी?

शिवानी बोली तुम्हारी बात भी निराली होती है। अरे पढ़ लिख कर क्या होना है? लड़की की जात को इतने पढ़ने लिखने की क्या जरूरत है? उसे क्या नौकरी करने जाना है?'

अगले रोज और पंडितजी खा-पीकर स्कूल चले गए। तब वासंती आयी। बोली काकीमा कल काकाबाबू हँसखली गए थे क्या देखा?'

शिवानी ने बतलाया उन्हें तो पसंद नहीं आया'

क्यों काकीमा? लड़का देखने में खराब है?

शिवानी बोली, नहीं बहू तब तो कोई बात भी होती। खूब बड़ा

घर है लड़के के बाप के पास पैसा पूरा-पूरा है। लाखों रुपये हैं। लेकिन ये कहते हैं—घर में पढ़ने लिखने का चलन नहीं है। बैठकखाने में किताबों की एक आल्मारी तक नहीं है'

बासंती बोली, 'अगर किताब नहीं है तो उसमें नुकसान क्या है?'

शिवानी बोली, 'अब इसम यह कौन कहे? अपने काकाबाबू को तो तुम जानती हो। वे क्या किसी की सुनते है? हमेशा जो मन में आता है वही करते आए हैं। किसी की सुननेवाले तो हैं नहीं'

'तो उनसे क्या कहूं जाकर?'

यही कह देना। कहना कि काकाबाबू को पसंद नहीं है।'

खबर सुनकर बासंती चली गयी। कहती गयी, देखूं जाकर फिर भी कह देती हूं।'

शिवानी ने कहा, इसके सिवा अभी जल्दी ही क्या है, लड़की अभी पढ़ ही तो रही है, पास नहीं हो जाती तब तक तो ब्याह करना नहीं है, चाहे जितना अच्छा लड़का मिले

सो तो है ही। और रानी तो तुम ही लोगों की लड़की है बाकी मां। मैंने पेट में ही तो रखा है। काकाबाबू जो ठीक समझेंगे वही होगा।'

उस दिन वही आदमी अचानक फिर आया। वही जिसके बिल का रुपया चुकाया था।

गौर पंडितजी उसे देखकर हैरान रह गए।

बोले 'अरे! तुम्हारे रुपये क्या अभी तक नहीं मिले?'

उस आदमी ने सिटपिटाते हुए कहा, 'नहीं।'

'नहीं क्यों?'

आदमी बोला 'हरिलालबाबू कुछ और दिन बाद आने को कहते हैं। अभी रुपया नहीं है।'

'यह क्या बात हुई? ढाई सौ रुपए नहीं हैं?'

गौर पंडितजी यह सुनकर फिर बैठ नहीं पाए। कामकाज जैसे था वैसे ही पड़ा रहा।

उठकर वे सीधे ऑफिस में गए। हरिलाल अपने काम में डूबा था। पंडितजी को देखते ही बीड़ी फेंककर उठ खड़ा हुआ।

'इसके रुपये अभी तक क्यों नहीं दिए गए हरिलाल?'

'कैसे रुपये?'

गौर पंडितजी को तब तक गुस्सा चढ़ चुका था। बोले 'ढाई सौ रुपए के एपरेटस आए थे अपनी लेबारेटरी के लिए! कब का पेमेंट हो जाना चाहिए था। अभी तक दिए क्यों नहीं? हर मामले में क्या मुझे ही सर खपाना पड़ेगा? मैं तो अब स्कूल में कोई भी नहीं हूं, फिर भी हर कोई मेरे ही पास क्यों चला आता है अपना रोना लिए?'

उस आदमी को देखकर हरिलाल की समझ में बात आयी। उसने कहा 'लेकिन मैंने तो इससे कुछ दिन बाद आने के लिए कह दिया है। फिर भी यह आपके पास क्यों गया? मैंने तो कह दिया था, कैश में अभी पैसा नहीं है।'

पंडितजी ने कहा, 'पैसा नहीं है माने? पैसा सब गया कहाँ?'

हरिलाल काफी पुराना आदमी था। सालों से अकेला ही हिसाब किताब सम्हाले है। हिसाब के मामले में उसका नाम था स्कूल में। और कोई अगर इस तरह बोलता तो वह आगबबूला हो जाता। लेकिन पंडितजी की बात अलग थी। वे इस स्कूल के जन्मदाता हैं। उनके आगे कड़ी बात नहीं बोली जा सकती।

उसने इतना ही कहा, 'जी हिसाब तो मैं ठीक ही रखता हूं। पैसा न होने पर मैं कहाँ से दूं?'

गौर पंडितजी ने कहा, 'लेकिन अभी पिछले ही रविवार को तालाब

की मछली बिकने के सात सौ रुपये जमा हुए हैं, वह रुपया इन्हीं कुछ रोज में खत्म हो गया ?'

'मछली बिकने का रुपया ?' बात सुनकर हरिलाल जैसे आसमान से गिरा। किसने मछली बेची और किसने रुपये दिए। रुपये लिए होते तो हरिलाल के खाते में जमा हुए होते।

'हेडमास्टर साहब का पता हो सकता है। उनसे पूछकर देखा जा सकता है।'

भवरंजन इस स्कूल का असली हेडमास्टर था। इतने सारे लड़कों को काबू में रखने का काम वह कुशलता से सँभालता आया है। भवरंजन ने कहा, 'यह सब तो साहबाबू देखते हैं'

पंडितजी बोले, 'मछली जो भी बेचे मछली तो प्रेसीडेण्ट की नहीं है, मछली तो स्कूल के तालाब की है ? खुद केदार ने मुझे बतलाया कि उसने मछली के सात सौ रुपये दिए हैं वह रकम तो स्कूल के खाते में जमा होनी चाहिए ?'

भवरंजन ने कहा, 'लेकिन पहले भी जब-जब मछली बेची गयी, स्कूल के खाते में कभी रकम जमा नहीं की गयी पण्डितजी।'

'जमा हुई नहीं माने ? मैंने तो जब भी मछली बेचीं, हमेशा खाते में रकम जमा की।'

भवरंजन ने कहा, 'लेकिन पिछले कुछ सालों से तो देख रहा हूँ रकम स्कूल के खाते में जमा नहीं की जाती'

पंडितजी उत्तेजित हो उठे। बोले, 'मैं भी तो यही कह रहा हूँ, जमा क्यों नहीं की जाती ?'

भवरंजन ने जरा आहिस्ते से कहा, मैं इसका क्या जवाब दूँगा पंडितजी। यह सेक्रेटरी और प्रेसीडेंट ही जानते हैं।'

गौर पंडितजी ने कहा, लेकिन तुम भी तो हेडमास्टर हो तुम अगर यह सब नहीं देखोगे तो कौन देखेगा ?

'रुपये की कमी की वजह से तुम लोग सायन्स के एपरेटस नहीं

खरीद पा रहे किसी के बाकी रुपये नहीं चुका पा रहे और इधर पूरे सात सौ रुपये न देवान् न फर्मान् हाथ से निकल गए और तुम्हारी कमिटी चुपचाप बैठी रही ? तुम, तुम्हारी कमिटी किस मतलब की है, और किस मतलब का है तुम्हारा स्कूल ही ? और तुम हेडमास्टर हो ? तुम भी तो कमिटी में एक मेम्बर हो ? तुम किस संकोच के मारे चुप रहते हो ? तुम्हें किस बात का डर है ? नौकरी जाने का ? पहले लड़कों के भले की बात सोचोगे न कि पहले अपनी नौकरी की सोचोगे ? नौकरी का डर ही तुम्हारे लिए सब कुछ हो गया ? मेरे पास इतने रोज पढ़कर तुम्हें यही शिक्षा मिली है ? धिक्कार है '

गुस्से से गौर पंडितजी आग हो उठे थे। झटपट कमरे से निकल गए। जाते समय कह गए ठीक है देखता हूँ मैं इसके लिए क्या उपाय कर सकता हूँ ?

शोरगुल सुनकर स्कूल के कुछ लड़के और मास्टर लोग हेडमास्टर के कमरे के पास ताक झाँक कर रहे थे। मामला जब आगे बढ़ा तो वे लोग भी काफी उत्तेजित हो गए थे।

टीचर्स कॉमन रूम में शशधरबाबू बैठे थे।

उन्होंने राय जाहिर की अरे पंडित और क्या कर सकता है—चीख-पुकार ही तो मचाएगा। कमिटी का करेगी उसके ऊपर कुछ करने का बूता किसमें है ?

बलाईबाबू बोले अरे यह बात नहीं है स्कूल की जमीन बगीचा सभी तो निमाईबाबू के बाबा दे गए हैं उन्होंने अपनी चीज बेची इसमें कोई क्या कह सकता है ?

लेकिन भवरंजनबाबू ने क्या कहा ?'

'कहेंगे क्या ? एक जमाने में पंडितजी से पढ़े हैं न ! कुछ भी नहीं कह पाए।

एक जन ने कहा 'तब तो जो करना होगा सेक्रेटरी करेंगे।

शशधरबाबू बोले, 'खाक करेंगे खाक सेक्रेटरी को क्या गरज़ी का

भाग मिलता नहीं है सोचते हैं ? तालाब की मछली खाते हैं, बगीचे के नारियल और आम खाते हैं हमेशा से ही तो खाते आए हैं। इसे कौन बदल सकता है ? पंडितजी की ताकत है इसे रोकने की ?'

बलाईबाबू बोले 'अरे अपने कोचिंग स्कूल को बंद करने के लिए पंडितजी ने कितना सर पटका, लेकिन कर पाए बंद ? स्कूल बंद हुआ ?'

हाँ तो उस रोज सुबह सुबह ही निमाईसाह के पास खबर पहुंच गयी। बलरामपुर वैरायटी स्टोर्स की दुकान अभी खुली ही थी। हर रोज सुबह सुबह ही दुकान खुलती।

विधु कयाल ने दौड़ते हुए आकर कहा, 'साहबाबू, स्कूल के बाग के आम, नारियल तोड़ जा रहे हैं'

निमाईसाह चौंक उठा, 'कौन तोड़ रहा है ? तुड़वा कौन रहा है ?'

'पंडितजी।'

पंडितजी ?'

निमाईसाह को जैसे यकीन नहीं आ रहा था। निमाईसाह दुकान से उठा।

लेकिन बलरामपुर हाई स्कूल के बाग से तब तक पंडितजी सारे पेड़ों से नारियल और आम तुड़वा चुके थे। तालाब के किनारे नारियलों का ढेर जमा हो गया था। उसके बाद ढोने वाले के लोग आम के पेड़ों पर चढ़े थे। आधे पेड़ों के आम तब तक उतर भी चुके थे। भाव-ताव करने के बाद ही काम शुरू हुआ था। रुपया भी पहले ही हाथ में ले लिया। नारियल और आम से अच्छी-खासी आमदनी हो

गयी।

उसी समय निमाई साह आ पहुँचा। जैसे गुस्से के मारे फूला जा रहा था। लेकिन गुस्सा जाहिर नहीं कर पा रहा था। निमाई साह आकर पास तो थोड़ी देर खड़ा रहा फिर बोला पण्डितजी, आप अचानक नारियल सुखा रहे हैं '

गौर पण्डितजी बोले हाँ आम और नारियल दाना हा बेच लिए। तीन सौ रुपए मिले। तुम लोग रुपया नहीं है रुपया नहीं है कर रहे थे। अब देखो तीन सौ रुपए की आमदनी हो गयी

यह कहकर हाथ की मुट्ठी खोलकर नोट दिखलाए।

निमाई साह ने कहा लेकिन कमिटी ने क्या आपको बेचने की परमीशन दी है ? आपने क्या कमिटी की राय ली है ?

गौर पण्डितजी अपने ही विद्यार्थी के मुँह की बात सुनकर जरा थमक गए। फिर बोले लेकिन कमिटी ने क्या तुम्हें मछली बेचने की परमीशन दी थी ?

'मछली ?

'हाँ इसी तालाब की मछलियों की बात कर रहा हूँ। मछली बेचकर जो सात सौ रुपया आया कमिटी क्या उस बारे में जानती है ?

निमाई साह खानदानी व्यवसायी था। पुरखों के बलरामपुर वरायटी स्टोस को चलाकर वह लखपती बना था। बाप का वारिस होने के बाद उसने बाप की सम्पत्ति को दस गुना बढ़ा लिया था।

अचानक उल्टी चाल चली। बोला, 'लेकिन इस तालाब की मछली भी क्या स्कूल की हैं ?

गौर पण्डितजी ने कहा स्कूल की नहीं हैं तो किसकी हैं ? यह जमीन, यह तालाब ये पेड़, बगीचा यह इमारत और इसके कमरे दरवाजे सब कुछ स्कूल का है तुम्हारा भी नहीं है मेरा भी नहीं है— सब स्कूल की सम्पत्ति है। तुम्हारे बाबा मथुरासाहजी यह सब स्कूल को दान कर गए हैं '

तब तक और भी कितने ही लोग स्कूल के कम्पाउण्ड में घुस आए थे।

निमाईसाह ने कहा 'ठीक है बाबा जमीन बगीचा, तालाब आदि स्थावर सम्पत्ति स्कूल के नाम कर गए यह माना लेकिन इस तालाब की मछली, इन पेड़ों के आम नारियल ये भी क्या स्कूल के नाम कर गए हैं ?'

गौर पंडितजी ने कहा 'मैं जब तक इस स्कूल का मालिक था, इन चीजों की मांग स्कूल ने ही की। अब राजा बदला है इसलिए क्या राज्य भी बदल जाएगा ?'

निमाईसाह बोला, 'पहले जो भी हुआ सो हुआ। अब कमिटी है अब कमिटी जो करेगा वही होगा।'

गौर पंडितजी ने कहा, देखो निमाई राजा बदलने से राज नहीं बदलता। राज्य वही रहता है। मछली के रुपये तुमने लिए यह बकायदा बात है। यह पैसा स्कूल का है। स्कूल के लिए वह खर्च होना चाहिए। उसी तरह नारियल और आम बेचकर आया रुपया भी स्कूल के फंड में जमा होगा।

निमाई साह बोला, 'लेकिन आपने यह काम क्या ठीक किया पंडितजी ? अगर कमिटी आपत्ति करे ?'

गौर पंडितजी ने कहा 'इसका जवाब अगर कमिटी मांगेगी तो मैं कमिटी के सामने जवाब दूंगा।'

'लेकिन मैं कमिटी का प्रेसीडेंट हूँ।'

गौर पंडितजी ने कहा, 'भाड़ में जाए प्रेसीडेंट। जब तक मैं न्याय के पथ पर हूं तुम मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। और मैं अगर स्वयं अपनी क्षति नहीं करता तो कौन मेरी क्षति करेगा, सुनूं जरा ?'

निमाईसाह शायद कोई जवाब ढूंढ़ रहा था।

लेकिन गौर पंडितजी ने उससे पहले ही कहा, जाओ निमाई काम में बस परेशान मत करो—कमिटी की मीटिंग बुलानी हो बुला लो, मुझे

बुलाया गया तो जाकर मैं कैफियत दूंगा।'

तब तक भवरजन आ गया। भवरजन रोज जस स्कूल लगने स पहले आता उसी तरह आया था। इतनी देर से वह सब देख रहा था। सब देख-सुनकर वह भी हैरान था।

निमाईसाह फिर वहाँ नहीं रुका। गटगट करता कम्पाउण्ड स बाहर चला गया।

भवरजन को देखकर गौर पडितजी बोले, यह लो, ये तीन सौ रुपय हरिलाल स खात म जमा करने को कह देना।

कहकर और नही रुक। जनादन इतनी देर से मिटमिनाया सा पास खडा था। उसस बोले जनार्दन ठीक समय पर गेट बद करना।

उसके बाद सबकी स्थिर नजरो के बीच से गौर पडितजी गेट पार कर सडक पर आ गए।

मथुरा साह ने जिस रोज अपनी जमीन बगीचा और तालाब स्कूल क नाम किया था उस रोज सोचा भी नही होगा कि इस सम्पत्ति को लकर इतना झगड होगा। वह सोच भी कसे सकते थे कि एक रोज जमाना बदल जाएगा। शिक्षा और मनुष्यत्व की तुलना मे रुपये की कीमत ज्यादा बढ जाएगी। और उस जमाने मे जीने वाला कौन इस बात की कल्पना कर सकता था। तब क्या कोई सोच पाया था कि वही स्कूल बाद म आज के इस बलरामपुर हाई स्कूल जैसा बडा स्कूल हो जाएगा। यहा भर्ती होने के लिए इतने लडके खुशामद करेंगे, सिफारिशें लायेंगे। फेल होने वाले लडकों के लिए कोचिंग स्कूल भी खोला जाएगा।

एक दिन पडितजी फटिक को पकडकर बठ गए।

बोले, क्यो रे, तू रहता कहा है यह बतला ? इतनी रात तक रोज

कहा रहा करता है ?'

शिवानी बोली 'तुम उस बेचारे को इतना डांटते क्या हो बोलो ता ? तुम न तो उसे पढ़ाओगे नोट की किताबें भी नहीं ले दोगे, तब बेचारा घर रहकर करे भी क्या ?'

गौर पंडितजी बोले 'क्या मैं इसे पढ़ाता नहीं हूँ ? सुबह रोज पढ़ने नहीं बठाता हूँ ? सुबह दर से उठेगा तो कसे पढ़ाऊँगा ?

फटिक बाला 'मैं कोचिंग स्कूल म पढ़गा

गौर पंडितजी ने कहा क्या ? कोचिंग स्कूल म क्या पढ़ेगा ?'

फटिक न कहा वहाँ क्वेश्चन बतला देते है ।

'अच्छा तो वो लोग क्वेश्चन बतला देंगे और तुम बैठकर उन्हे याद कर लोगे । मैं सब बेकार की बात मैं तुम्हे नही करने दूगा । अगर पढ़ने की मर्जी हो तो घर बठकर पढ़ो । सुबह जल्दी उठो, उठकर हाथ मुह धोकर किताब लेकर पढ़ने बठोगे । जो समझ म न आए मुझस पूछोगे

कहकर बाहर निकल गए ।

स्कूल स घर लौटकर अभी बठे ही थे अचानक बाहर साईकल की घंटी बज उठी । सुशील न बाहर स पुकारा, फटिक ।

फटिक लपककर बाहर जा रहा था । गौर पंडितजी न पकड लिया, 'कहाँ जा रहा है ? कौन बुला रहा है तुझे ?

शिवानी बोली 'जाने भी दो न सारे दिन घर म ही बैठा रहेगा क्या ? वह क्या तुम्हारी तरह बूढ़ा हो गया है ?'

लकिन है कौन ? कौन साईकल की घंटी बजा रहा है ?'

शिवानी न कहा, अरे सुशील है रानी का भाई ।'

फटिक बोला, 'मैं कितने दिन से कह रहा हू एक साईकल खरीद दने को, उसका तो नाम नही । मैं जा रहा हूँ

गौर पंडितजी को गुस्सा आ गया, 'मुँह पर जवाब देता है !' कहकर जोर से फटिक का कान मल दिया । कान मरोडकर एक तमाचा

लगा दिया ।

शिवानी ने आकर कान छुड़ाया । फिर बोली 'इसलिए क्या तुम लड़के को इस तरह मारोगे ?'

गौर पंडितजी ने कहा तुम्ही ने तो लाड कर-करके इसे सर पर चढ़ा लिया है । तुम्हारी ही वजह से उसकी इतनी हिम्मत हो गयी है । नही तो मेरे मुह पर इस तरह जवाब देने की हिम्मत कर सकता है ?'

शिवानी बोली 'हिम्मत नही करेगा ' तुम कभी अपनी गल्ती तो देखते नहा, खाली दूसरे की गलती को ढूढते फिरते हो । कभी तुमने मेरे बारे मे सोचा है जो आज फटिक को डपट रहे हो ? मेरी लड़की को तो तुमने जानबूझकर मार ही डाला अब मेरे इस नाती को भी मारने पर तुले हो ?

कहते कहते शायद शिवानी की आखो म आसू आ गए थे जिन्हें छिपाने वह रसोई की ओर चली गयी ।

गौर पडितजी उस रोज बहुत कुछ कहना चाह रहे थे लेकिन बोले नही । किस कहे ? कौन सुनेगा उनकी ? उन्हे लगा जसे उनका कोई भी नही है । एक दिन बडी आशा लेकर यहाँ के लोग आदमियो से कह-सुन कर, भीख मागकर यह स्कूल बनाया था । तब अपने बारे म नही सोचा, अपने घर के बारे मे नही सोचा । पत्नी सतान अथ और भविष्य किसी भी चीज की परवाह नही की । पर अन्त करण स सिर्फ एक ही प्रार्थना की थी कि उनका यह स्कूल स्वावलम्बी हो । स्वावलम्बी होकर सर उठाए खडा हो जाए । और कोई कामना कभी नहा की उन्होने । उनके घर की छत से पानी टपकता उस ओर भी कभी ध्यान नही दिया । लेकिन लडको के सर पर पानी न टपके इसलिए स्कूल की छतें ठीक वक्त पर मरम्मत करा लेते । इससे उनका क्या फायदा हुआ ? लडको का भला हुआ खुद उनका क्या हुआ ?

उस रोज घर से निकलकर चलते चलते गज होते हुए ठेठ चौरगज तक जा पहुचे गौर पडितजी ।

अपने गाव मुबारकपुर की याद भी आयी उन्हें। उस रोज बडे गव से वावाश्राद् से कह आए थे—बलरामपुर म आदमी है।

यही क्या वो आदमी हैं ? यही है उन आदमियो का मन ?

अचानक एक दुकान क आगे उनकी निगाह अटक गयी। देखा दुकान के बाहर लाइन की लाइन साईकलें सजी थी। साईकल की ही दुकान थी। गौर पडितजी खुद कभी भी साईकल पर नही चढे थे। साईकल चलाना ही नही सीखा। दूसरे साईकल चलते वे उन्ह देखकर सडक पर एक ओर हो जाते।

'आइए आइए पडितजी !'

पडितजी को सभी जानते हैं। हर किसी का कोई न कोई उनके पास पता है। चौबीस परगने म दूर दूर तक उनका नाम मशहूर हो गया है।

पडितजी साईकल खरीदेंगे क्या ?'

गौर पडितजी ने पूछा, इन साईकलो का क्या दाम है ?'

दुकान पर लडके न कहा 'आइए न अदर आइए। अदर आकर बठिए। भीतर और भी तरह-तरह की साईकलें हैं। दाम भी अलग अलग हैं।

गौर पडितजी सकुचाते-सकुचाते अदर घुसे। सिफ साईकलें ही नही, और भी तरह-तरह की चीजें थी।

यह क्या है ? यह पीतलवाली ?'

'जी, यह स्टोव है—'

स्टोव ? स्टोव माने ? इससे क्या होता है ?'

जी इसम आग जलती है। किरासिन तेल से जलाना पडता है। लकडी वाले चूल्हे म धुआँ होता है। धुएँ म औरतो को खाना बनाने म बडी तकलीफ होती है। इसी से यह चीज निकली है। यह तो आजकल हर घर मे खरीदी जा रही है। घर के लिए ले जाइए न एक। और भी कितनी ही चीजें हैं। यह देखिए क्या तरह का टाच निकली है। बटरी से चलती है। अधेरे रास्ते म साप बिच्छुओ का डर नही रहता। एक ले

कामना का उद्वेग न हो—समझा ? संस्कृत बिना पढ़े

अचानक शिवानी आकर बिगड़ उठी। फिर उसे संस्कृत उपदेश दे रहे हो ? एक साईकिल तो खरीद नहीं सकते, ऊपर से चलो, खाकर मुझे छुट्टी दो उठो

ये सब बातें बहुत पहले की हैं। उसके बाद गंज की इच्छामती नदी के घाट से काफी पानी बह गया। लेकिन कितना कुछ भुगतकर कितनी ही बार ठग जाकर भी गौर पंडितजी अपने को बदल नहीं पाए।

नरेन चक्रवर्ती के घर जाकर निमाई साह ने कहा पंडितजी के मारे तो मुसीबत हो गयी है भाई। इसका कोई न कोई रास्ता निकालना ही पड़ेगा। पंडितजी के नाम एक मुकदमा ठोक दूं ?

नरेन ने कहा तुम क्या पागल हुए हो निमाई ? मुकदमा होने पर कमिटी की ही बदनामी होगी। पंडितजी जब इस बारे में कुछ और नहीं कह रहे हैं तो बेकार बात बढ़ाने से क्या फायदा ?

निमाई साह बोला आज ठीक है कुछ नहीं बोले, आज मछली की बात उठायी नारियल-आम तुड़वा लिए लेकिन इसके बाद अगर आगे बढ़े ? अगर वह कहें कि स्कूल का सारा हिसाब देखूंगा ? तब ? तब क्या करोगे ?

नरेन चक्रवर्ती ने कहा तब की बात तब देखी जाएगी फिलहाल तो एक तरह से बात दब गयी है तो तुम भी चुप लगा जाओ न !

निमाई साह ने कहा यही कर-करके तो पंडितजी इतना आगे बढ़ आए हैं। जरा रुककर फिर कहा ठीक है तुम कहते हो तो मैं चुप रहता हूं, लेकिन यह भी कह देता हूं कि इस सब का नतीजा ठीक नहीं होगा

अचानक तभी पंडितजी आ पहुंचे।

पंडितजी को ऐसे बेवक्त आया देख नरेन चक्रवर्ती और निमाई साहू दोनों ही चौंक उठे।

लेकिन नरेन चक्रवर्ती ने तब तक अपने को सम्हाल लिया। फिर कहा, 'आइए पंडितजी आइए'

पंडितजी बोले नहीं मैं बैठूंगा नहीं, इधर से जा रहा था, देखा तुम्हारे कमरे में रोशनी है तो अंदर चला आया'

फिर निमाई साहू की ओर देखकर बोले 'निमाई तुम भी यहां हो चलो अच्छा ही हुआ। देखो मैं बहुत दिनों से एक बात सोच रहा हूं। शशधर, अपना गणित का मास्टर शशधर है न, उसने यहां अपना कोचिंग स्कूल खोल रखा है वह तो जानते ही होगे। अपने स्कूल के सारे लड़के वहां भर्ती हुए हैं। मेरा नाती भी अपने बाप की वजह से एकदम आवारा हो गया है। वह भी कहता है—कोचिंग स्कूल में पढ़ूंगा? लेकिन तुम्हें मालूम है वहां क्या होता है? वहां प्रश्न पत्र बतला देते हैं।'

'प्रश्नपत्र बतला दिए जाते हैं?' नरेन चक्रवर्ती ने जैसे अचानक कोई बुरी खबर सुनी।

पंडितजी ने कहा 'हां मैंने पता लगाया। अफवाह झूठी नहीं है। सायंस टीचर शिवेंदु ने भी यही कहा है।'

नरेन चक्रवर्ती ने कहा, लेकिन उन लोगों को प्रश्नपत्रों के बारे में पता कैसे चलता है?'

पंडितजी ने बतलाया पता लगाना खूब आसान है। मैंने सोचकर देखा है। मास्टर लोग प्रश्नपत्र तैयार करके सेक्रेटरी के पास जमा करते हैं। जमा करने से पहले दूसरे मास्टरों को दिखाते हैं और तभी पता लग जाता है। मैंने सोचा है यह तरीका खराब है। इससे दुर्नीति को बढ़ावा मिलता है।'

'तब प्रश्नपत्र कौन बनाएगा?'

क्यों, प्रश्नपत्र बनाने के लिए एक कमिटी रहेगी। उस कमिटी में तुम मैं और भवरजन रहे। हर मास्टर को उसके विषय के दो सौ प्रश्न तयार करने को कहा जाएगा। हमारी कमिटी उनमें से दस प्रश्न छाट कर लेगी। उसके बाद मैं कलकत्ता जाकर उन्हें छपाऊगा।

जरा देर सोचकर नरेन चक्रवर्ती ने कहा 'लेकिन पंडितजी आप इस उम्र में इतनी मेहनत कर पायेंगे?'

पडितजी बोले तुम कहते क्या हो? तुमने मेरी उम्र ही देखी प्राण नहीं देखते? तुमने भी नहीं देखा और यह जो निमाई बैठा है इसने भी नही देखा। आज भी लडकों के लिए मैं प्राण दे सकता हूँ जानते हो?'

निमाई साहू ने इतनी देर तक कुछ नहीं कहा। अब उसने कहा 'लेकिन इतना कहे रखता हू कि मेरे प्रेस से सवाल बाहर नहीं निकलने '

गौर पडितजी ने कहा नहीं निकलते यह तो अच्छी बात है। लेकिन एक बार बाहर से छपाकर देखा जाए न। तुम क्या बेकार में बदनामी मोल लेते हो? तुम क्यो इस झमेले में पड़ते हो?

निमाई साहू ने कहा, लेकिन ऐसा करने के लिए कमिटी की राय लेनी पडेगी।

गौर पडितजी ने कहा कमिटी के आगे बात रखना चाहते हो तो रखो लेकिन काम यह तभी होगा जब तुम लोग चाहोगे नहीं तो स्कूल से आदमी नहीं निकलेंगे, भेड-बकरियाँ निकलेंगी—अच्छा, अब मैं चलता हू '

कहकर और नहीं रुके। आखिर आखिर बाहर सडक पर निकल गए।

नरेन चक्रवर्ती ने कहा पण्डितजी के मन में एक बार बात जम गयी है तो वे उसे किसी भी तरह पूरी करके ही छोडेंगे उनको रिझाया नहीं जा सकता।

निमाई साहू ने कहा लेकिन टीचर? टीचर्स क्या राजी होंगे?

टीचर्स के आत्मसम्मान को क्या चोट नहीं लगेगी ? उनके लिए तो रोटी का सवाल है। बलरामपुर में तीन-तीन कोचिंग स्कूल आल्रेडी खुल चुके हैं।'

लेकिन तुम्हारे प्रेस का काम तो हाथ से निकल गया !'

निमाई साह बोला, 'मेरे प्रेस को कौन नुकसान पहुँचा सकता है ? किसमें इतनी हिम्मत है ? स्कूल का सारा काम क्या कलकत्ते ले जाकर कराना मुमकिन होगा ? और अगर वही हुआ तो मैं भी छपाई का रेट बढ़ा दूँगा। इसके अलावा कई मेरे आदमी हैं, देखता हूँ पंडितजी कहाँ तक बढ़ते हैं '

गौर पंडितजी ने घर लौटते ही पूछा 'आज फटिक नहीं दिखलाई दे रहा ? फटिक कहाँ गया है ?'

लेकिन फटिक ने उस वक्त थियेटर क्लब में हारमोनियम की थाप में गीत शुरू किया था—

'हृदय-सागर के नीर में तब
शतदल जैसे खिल उठे
मेरे मन में धीरे धीरे '

फटिक उर्वशी का पार्ट कर रहा था। उधर रात हो चुकी थी इसका फटिक को ख्याल ही नहीं था। मिश्र खमाज के स्वर ताल और लय में जैसे वह सचमुच उर्वशी हो गया था।

सुशील ने उसे ठेलकर कहा, ओ फटिक घर चल देर हो गयी है रे—तेरे नाना भी अब तक घर आ गए होंगे '

हट 'फटिक झुंझला उठा। फिर बोला तू तो अच्छा नीरस आदमी है !'

फिर बोला, पता नहीं है आजकल मेरे नाना बहुत देरी से घर लौटते हैं

सुशील बोला, 'ठीक है तो मैं चलता हूँ, घर पर शशधरबाबू आए बैठे होंगे, दीदी ने बाबा से कह दिया तो आफत हो जाएगी।'

कहकर सुशील उठ खड़ा हुआ।

लेकिन पंडितजी के यहाँ फटिक की ढुढ़ाई थी।

पंडितजी ने हाथ पैर धो लेने के बाद फिर फटिक के बारे म पूछा। फिर बोले 'फटिक कहाँ गया है अभी तक नहीं लौटा ?'

शिवानी ने कहा, 'कहा न कि सुशील के यहाँ गया है पढ़ने।'

सुशील के यहाँ पढ़ने गया है ? क्यों ? उसके यहाँ पढ़ने क्या गया है ?

शिवानी बोली, 'तो क्या करे बेचारा ? तुम तो अपने स्कूल म ही लगे रहते हो, कोचिंग मे भी भर्ती नहीं कराते। तब वह करे क्या ? इम्तहान सर पर है, वह आखिर क्या करे ? इस-उसके पीछे पड़कर समझ लेता है। सुशील के बाप ने सुशील के लिए तीन मास्टर रखे हैं— तुमने फटिक के लिए कितने मास्टर रखे है, सुनू जरा ?'

अचानक वासती आ पहुँची। साथ म रानी भी थी।

वासती ने पूछा, 'काकीमाँ फटिक घर आया ?

साथ ही साथ शिवानी की बोलती बंद हो गयी।

पंडितजी साथ ही साथ पूछ उठे बहू फटिक तुम्हारे घर नहीं गया ?

वासती बोली, 'वह हमारे यहाँ क्यों जाने लगा ? वह तो दिन ढले सुशील के साथ निकला था। दोनों साईकल पर ही तो गए हैं '

'लेकिन तुम्हारी काकीमाँ ने तो बतलाया कि वह तुम्हारे यहाँ पढ़ने गया है ?

शिवानी की आवाज तेज हो गयी, 'मुझे क्या मालूम वह कहाँ गया है ? मुझे क्या घर का काम नहीं है ? मैं क्या तुम्हारे नाती के पीछे

पीछे पहरा देती फिरूँगी ? बड़ी दस-दस नौकरानियाँ रख दी हैं न मेरे लिए ?'

गौर पंडितजी ने कहा, यह देखो मैंने क्या कहा और तुमने क्या समझा !'

शिवानी बोली, 'मैं समझती हूँ, सब समझती हूँ पढ़ी लिखी नहीं हूँ तो क्या तुम सोचते हो कुछ समझती ही नहीं। यह बहू खड़ी है, यही कहे न, वह तो कानी नहीं है, उसके भी आँखें हैं—यही कहे कि मैंने गलत कही या तुमने गलत बात कही है ?'

रानी बोल उठी तुम चुप भी रहो न नानीअम्माँ तुम क्या हमेशा नाना से लड़ती ही रहोगी ?'

अचानक पाडू की माँ आकर बोली, माँ, छोटे बाबू आ गए '

'घर आ गया ?'

वासती को जस सहारा मिला। बोली, 'चल रानी, चल !' कहकर बाहर निकल गयी। लेकिन रानी पंडितजी के पास आकर बोली, नानी अम्मा जो भी कहे तुम चुप रहो नाना

गौर पंडितजी हँस पड़े। फिर बोले, तू जा री, तेरी माँ चली गयी, फिक्र करेगी '

रानी बोली, 'पहले तुम वायदा करो कि नानीअम्माँ से झगड़ा नहीं करोगे।

गौर पंडितजी बोले, 'हाँ री मैं तो जैसे खाली तेरी नानी अम्माँ के साथ झगड़ा ही किया करता हूँ !'

रानी बोली 'वह सब नहीं सुनूँगी, पहले तुम कहो कि झगड़ा नहीं करूँगा।

एक बात और, यह भी कहो कि फटिक के आने पर उसे तुम मारोगे नहीं !'

गौर पंडितजी ने कहा, लेकिन बेटी, वह मेरी बात क्यों नहीं सुनता ? मैं तो उसके भले के लिए ही कहता हूँ। वह पढ़ता क्यों नहीं है।

स्कूल से वह घर क्यो नही आता ? मैं क्या उससे कोई खराब बात कहता हूँ ? मैं क्या उस का बुरा चाहता हूँ ? उससे अच्छा बनने के लिए कहकर मैं कौन सा दोष करता हूँ बोल ?'

रानी बोली दोष तो नाना तुम्हारा ही है ।'

मेरा दोष है ?'

'तुम्हारा दोष नही है ? तुम सबको मारते जो हो ? इतना मारने से क्या कोई अच्छा होता है ?'

गौर पडितजी जसे सोच म पड गए । जसे मन ही मन कुछ समाधान करने लगे ।

फिर बोले लेकिन बेटी तू ? मैं क्या तुझे भी मारता हू ?'

रानी बोली मेरी बात अलग है मुझे तो तुम प्यार करते हो नाना । तुम मेरी तरह सबको प्यार नहा करते ।

क्या मालूम पडितजी ने क्या सोचा । लेकिन बात मन से निकाल नही पाए । रानी कब की घर चली गयी थी । रात भी तब काफी हो गयी थी । फटिक भी आ गया था । इतना बडा झूठ भी उन्होने रानी की बात पर हजम कर लिया । सचमुच हो सकता है गल्ती उन्ही की हो । नही तो रानी ने उनसे यह बात क्यो कही ? उन्होने क्या किसी को भी प्यार नही किया ? किसी का भला नही चाहा ? या भला चाहना और प्यार करना एक चीज नही है ? श्रीमदभागवत की कथा फिर याद आ गयी । फटिक को उस दिन सुनायी थी । यदि दास्यसि मे प्रह्लाद की वह प्राथना—हे वरग्नतागणो मे श्रेष्ठ यदि मेरा अभीष्ट कोइ वर दें तो यही वर दें कि मरे मन म कभी भी कामना का उद्गग न हो ।

लेकिन गौर पंडितजी के देवता शायद उन्हें इतनी आसानी से कामना और वासना से रहित करना नहीं चाहते थे। शायद उनकी और भी परीक्षा लेना चाहते थे। शायद दु ख, कष्ट, और यतणा से उनका शुद्धिकरण करने के बाद उन्हें परित्राण देना चाहते थे।

उस रोज विनोद ने फिर एक पत्र लिखा। कब का वह विनोद। छोटा सा वह लडका। काफी दु ख कष्ट सहन के बाद उसकी मा एक रोज उसे उनके पास ले आयी थी। विनोद को फीस नहीं देनी पडती थी। दूसरों से मांग जाचकर उसकी माँ ने उसे पाला था।

विनोद की मा कहती यह तो आपही का लडका है पडितजी। मैंने तो खाली पेट म रखा है।'

ठीक जस रानी। बहूरानी भी तो कहती हैं, यह तो आप ही की लडकी है बाबाबाबू आप जो भी ठीक समझें करें

विनोद की चिट्ठी को बार बार पढने के बाद पडितजी ने तहाकर जब म रख लिया।

पूरे स्कूल म जसे तूफान आ गया था। टीचर्स कामन रूम म तो पहले ही से असतोष भरा था। अब जसे वह बम की तरह फटनेवाला था। विनोद पिछली बार जब आया तब बोला था आजकल स्कूल पहले की तरह का नहीं रहा पडितजी, आप इसे खुद ही सम्हालिए फिर से '

गौर पडितजी ने कहा था, 'अब तो स्कूल को चलाने के लिए कमिटी है विनोद।'

विनोद ने कहा तब कमिटी म ही रहिए।

गौर पडितजी ने कहा अब मेरी उमर हो गयी है। मैं और कितने दिन देखूगा। अब ये लोग हैं, देखें—यही निमाई साह, नरेन चक्रवर्ती '

'इन लोगो ने आपसे कमिटी म रहने को कहा था ?'

गौर पडितजी ने कहा 'नही।'

विनोद ने कहा था, मुझे बडा दु ख होता है पडितजी, इन लोगो ने

बोलो, जवाब दो ?'

इसके बाद अनिमेष बाबू की ओर देखकर पूछा, 'आपने इस किताब से नकल करते देखा है ?

अनिमेष बाबू ने जो देखा था सो कह दिया। फिर और कुछ न कह कर अचानक फटिक की शर्ट को ऊपर की ओर ■ पकड़ा। पकड़ते ही देखा गया कि फटिक की छाती और पीठ सब जगह किताब कापियां चिपकी है। इसके बाद जब मे हाथ डालते ही कागज के ढेर सारे टुकड़े निकले।

गुस्से से भवरजन बाबू पागल हो उठे पर फिर भी उन्होंने किसी तरह अपने को सम्हाला।

फिर बोले तुम्हें इस तरह इम्तहान देने आते शर्म नही आती ? जानते हो तुम्हें अभी इसी वक्त कान पकड़कर स्कूल से निकाला जा सकता है ? '

फटिक रुआसा हो गया था।

बोला फिर कभी नही करूगा सर !'

गुस्से के मारे भवरजन बाबू ने टेबल पर जोर का मुक्का मारा।

फिर बोले, 'अनिमेष बाबू इसकी सारी किताबें निकाल लीजिए तो

अनिमेष बाबू ने एक एक कर सारी किताबो को निकालकर हेडमास्टर की टेबुल पर रखा।

भवरजन बाबू चीखे कान पकड़ो कान पकड़ो

फटिक ने कान पकड़े।

भवरजन बाबू फिर चीखे तुम्हें रोते हुए शर्म नही आता ! रोते हो ! तुम्हें पता नही है तुम किसके नाती हो ! तुम्हारी बदनामी होने से तुम्हारे नानाजी को कितनी चोट पहुँचेगी यह सोचा है कभी ? तुम्हें इतना भी डर नही है तुम अपने नानाजी तक का नाम डुबाना चाहते हो ?'

इसके बाद बात को ज्यादा बढाना ठीक नही समझा। उधर वक्त भी निकल रहा था।

बोले, 'जाओ जाओ यहा से—जाकर लिखो।'

तब तक शोरगुल सुनकर स्कूल भर मे खबर फैल गयी थी। दरवान, बेयरा सबके कानो म बात पहुच चुकी थी। खबर टीचर्स रूम म भी जा पहुची थी। जनार्दन ने भी सुनी।

भवरजन बाबू फिर से काम म लग गए। अचानक हाफ्ने-हाँफ्ते गौर पडितजी आ पहुचे।

आते ही बोले, 'भवरजन सुना है फटिक किताब मे से नकल कर रहा था। बात सच है ?'

भवरजन पडितजी की सूरत देखकर डर गए। उन्होने जवाब दिया, जी हा, मैंने उसे धमका दिया है

'धमका दिया है के माने ?'

भवरजन ने कहा मेरे आगे कान पकड। कहा, फिर कभी ऐसा नही करेगा।'

'नही करेगा माने ? तुमने क्या उसे फिर से इम्तहान मे बठने की परमीशन दे दी है ?

भवरजन ने कहा जी, बच्चा ही तो है। मैंने काफी धमका दिया है। य किताबें देख रह हैं न, ये उसके पास थी, मैंने उससे छीन ली हैं। वह इस वक्त फिर से इम्तहान दे रहा है।'

लेकिन तुमने उसे फिर से इम्तहान म बैठने की परमीशन क्यो दी ? उसकी गदन पकडकर बाहर क्या नही निकाल दिया ? इसलिए कि मेरा नाती है ? और किसी का नाती होने पर भी क्या तुम यही करते ? सिफ मेरा नाती है इसीलिए उसे माफ कर दिया ?

उसे बुलाओ। उसे यहा बुलाओ, इसी वक्त उसे यहा बुलाओ।'

बेयरे को भेजकर फिर से फटिक बुलवाया गया। नाना को देखकर फटिक मारे डर के सिहर उठा।

'तू इन सब किताबों में से नकल कर रहा था ? ये किताबें तेरी कमीज़ के भीतर थीं ? बोल '

फटिक वहीं खड़ा थर थर काँपने लगा ।

'बोल, इन किताबों में से नकल कर रहा था या नहीं ?'

पूरी इमारत जैसे गौर पण्डितजी की आवाज़ से सहम उठी ।

'जवाब दे ?'

फिर भी फटिक की जबान पर जैसे कोई जवाब नहीं था । उसकी बोलने की ताकत जैसे खत्म हो गयी थी ।

गौर पंडितजी ने और देर नहीं की । भवरजन की अलमारी पास ही थी । उसे खोलकर अंदर से बेंत निकाली । फिर उसे हिलाते हिलाते फटिक के आगे आकर बेंत को ऊँचा उठाकर खड़े हो गए ।

बोले 'जवाब नहीं देगा तू ?'

कहकर और देर नहीं की । तड़ातड़ फटिक के सर मुँह पीठ और हाथ पैरों पर जोर से मारने लगे । मारते मारते पंडितजी के कन्धे की चादर खिसक कर जमीन पर गिर गयी । फिर भी जैसे उन्हें ध्यान नहीं था । उसी हालत में मारते मारते फटिक को जमीन पर गिरा दिया । फटिक फर्श पर गिर पड़ा था । फिर भी पंडितजी का मारना जारी था ।

भवरजन अपने को और नहीं रोक पाए । जल्दी से चेयर छोड़ उठ कर पंडितजी का हाथ जा पकड़ा ।

फिर कहा 'करते क्या हैं पंडितजी ! मर जाएगा !'

'तुम छोड़ो ।'

कहकर फिर मारने लगे । फटिक फर्श पर निश्चल पड़ा था । कमरे के दरवाजे पर भीड़ जमा हो गयी थी । गौर पंडितजी का यह रूप किसी ने इससे पहले नहीं देखा था । यह जैसे अमानुषिक अनुशासन था । ऐसा अनुशासन भी किसी ने पहले कभी नहीं देखा ।

अचानक लगा जैसे फटिक हिल-डुल नहीं रहा है । वह जैसे स्थिर

हो गया था। उसमे जैसे स्पदन नही था। गौर पडितजी के पावों के पास निश्चल पडा था।

रात को सारा घर सहमा हुआ था।

पास वाले कमरे म डाक्टर आकर फटिक को देख रहा था। फिर भी गौर पडितजी एक बार के लिए भी नही उठे। स्कूल स रोज के वक्त पर घर आए थे। बासती आयी थी, नरेन आया था। रानी भी आयी थी। सब लोग आकर फटिक को देख गए थे, उसके पास खडे रहे थे।

खबर सुनकर नरेन ही न डाक्टर भिजवा दिया था।

डाक्टर बीरगज का था। उसने अच्छी तरह से फटिक की छाती पीठ और नाडी की जाच की।

नरेन न पूछा, 'कैसा लग रहा है ?'

डाक्टर स्टेथेस्कोप लगाए काफी देर तक जाँच करता रहा। फिर बोला 'बुखार है और बढेगा

डाक्टरबाबू ने कुछ दवा लिख दी। नरेन खुद जाकर दुकान से वह सब ले आया। डाक्टर को भी भला कहना पडेगा। और कोई मरीज होता तो वह इतनी अच्छी तरह कभी नही देखता। गौर पडितजी का नाती है। स्कूल के इतन बडे पडितजी के घर की बात है। बलरामपुर के घर घर मे यह खबर फैल गयी। इसको कुछ हो गया तो डाक्टर का नाम भी साथ लगा दिया जाएगा।

नरेन न पूछा कल भी इसका इम्तहान है, कल स्कूल जा पाएगा ?'

डाक्टर बोला, किडनी बच गयी, यही भरोसे की बात है।'

लेकिन बुखार ?

'बुखार के लिए तो दवा दे ही दी है '

इतना कह अच्छी तरह चेक करके डाक्टर उठा। फटिक अभी तक बिस्तरे पर बेहोशी की हालत में बेखबर पड़ा था। बीच बीच में आँखें खोलकर एक आध बार देख जरूर लेता। लेकिन जैसे किसी को भी पहचान नहीं पा रहा था।

डाक्टर ने कहा रात को एक बार फिर आऊँगा '

वासती रानी वगैरह भी खड़ी खड़ी चुपचाप देख रही थीं। शिवानी ने फटिक के पास बैठकर सर पर हाथ फेरना शुरू किया तो अभी तक उसी तरह चल रहा था। बर्फ आने पर उसे लेकर माथे पर रखा।

घर में न एक आईस-बैग ही था न बुखार देखने का थर्मामीटर ही था। पंडितजी के घर में किसी भी चीज का इन्तजाम नहीं था। नरेन सब कुछ अपने ही घर से लाया।

नरेन ने कहा, काकीमाँ, आप उठिए अब '

वासती ने कहा हाँ काकीमाँ मैं तो हूँ ही तुम अब उठो काका बाबू के लिए खाना परासो '

लेकिन वह जो इतनी छोटी रानी थी उसके मुँह की सारी बातें भी जैसे खत्म हो गयी थीं। वह सिर्फ देख रही थी सब कुछ। ये नानी ये नानीअम्माँ यह स्नेह, यह अनुशासन यह सब कुछ देख जैसे वह विह्वल हो गई थी।

काफी देर बाद नरेन वासती रानी सभी चले गए।

रात काफी गहरी हो चुकी थी। फटिक अकेला बेजान पड़ा था और पास ही बैठी थी शिवानी।

अचानक डाक्टर एक बार फिर आया। आकर देखा, रोगी का हाल कैसा है।

फिर एक बार स्टेथेस्कोप लेकर चेक-अप किया। अच्छी तरह से देखा। नहीं रोगी की हालत पहले से काफी सुधरी है।

जाते वक्त बगल वाले कमरे में देखा—पंडितजी अपने बिस्तरे पर

चुपचाप बैठे हैं। डाक्टर को देखकर नजर उठाई।

पूछा, 'हाल कसा है ?'

डाक्टर ने कहा, 'अच्छा है पहले से काफी अच्छा है। काफी कड़ी डोज दी थी। लगता है उसी से काम हो रहा है '

जरा रुककर फिर कहा, 'इस तरह से क्यों पीटने लगे पंडितजी ! यह तो नसीब अच्छा था जो किडनी बच गयी। बेंत जरा और हटकर पड़ा होता तो भगवान ही मालिक था '

पंडितजी ने कहा, कल फिर इम्तहान है, कल इम्तहान दे पाएगा न ?'

डाक्टर बोला, देखिए !'

कहकर डाक्टर बाहर चला गया।

एक रात। एक रात के बीच काफी कुछ भला-बुरा हो सकता है। और पंडितजी के लिए जसे यह आत्म-परी ा की रात थी। पास वाले कमरे म फटिक सोया है। उसके सिरहाने बठी शिवानी उसकी देखभाल कर रही है। हो सकता है देखभाल करते करते उसकी आंखों से पानी भी गिर रहा हो। और पंडितजी वहीं बिस्तर पर बठे-बैठे अपने जीवन के प्रारम्भ से लेकर अब तक सारे जीवन की परिक्रमा करने लगे। सोचते रहे—कहां से वे कितनी दूर आ गए हैं। कहां आ पहुंचे हैं। श्रीमदभागवत का वह श्लोक याद हो आया। यदि दास्यमि म तब क्या आदमी का भला करने के पीछे उनम कोई स्वार्थ चिंता छुपी है।

एक बार आहिस्ते-आहिस्ते कमरे स निकले। बगल वाले '

दरवाजा खुला था। खुले दरवाजे से अंदर बिस्तरे पर नजर डाली। लालटेन टिमटिमाती जल रही थी। फटिक चित पड़ा गहरी नींद में सोया था। हो सकता है बुखार की खुमारी में हो। उसी के पास बैठी बैठी शिवानी पता नहीं कब औंघाती सो गयी, इसका खुद उन्हें भी ख्याल नहीं था।

और पंडितजी ने जरा देर खड़े रहकर देखा। बाद में फिर अपने कमरे में चले आए। चारों ओर घना अंधकार छाया था। पोखर के किनारे वाले इमली के पेड़ का सिरा जंगले से दिखलायी दे रहा था। उस ओर देखते देखते लगा जैसे सब कुछ गड़बड़ा रहा है। हर चीज का हिसाब जैसे बेहिसाब हुआ जा रहा है।

बाद में पता नहीं कब सो गए। अचानक शिवानी के रोने की आवाज सुनकर उन्हें होश आया। हड़बड़ाते पंडितजी उठ बैठे। बाहर जैसे कुछ लोगों की आवाज आ रही थी।

जल्दी से बाहर आए। आकर देखा कई लोग आंगन में मौजूद हैं। नरेन को उन्होंने पहचाना। उन्हें देखकर नरेन आगे बढ़ आया।

नरेन से ही पहले पहल खबर सुनी। बोले फटिक नहीं है? कहाँ मुझे तो कुछ पता नहीं है? कहां गया है वह?"

बगल वाले कमरे में झांककर देखा। बिस्तर खाली था। वहां गृहिणी चुपचाप आंचल में मुंह छुपाए सुबक-सुबककर रो रही थी। वासंती, रानी के अलावा और भी दो एक पास-पड़ोस की औरतें वहां थीं।

"लेकिन वह गया कब? मैंने तो आधी रात को उठकर देखा, सोया था। इसी बीच कहाँ निकल गया? वह तो नींद में बमबर सोया था। उठा ही कैसे? और उसे आखिर ले ही कौन गया? तुम लोगों ने पोखर में देखा? कहीं पोखर में तो नहीं डूब गया?

उसके बाद उस रोज उसके बाद के रोज बाद में और कई रोज ढुंढाई हुई। बलरामपुर थाने में खबर पहुंची। आसपास के गांवों में

खबर भेजी गई। आसपास के गाँवों के लोगों ने भी आकर घर के आगे भीड़ की। फटिक वहाँ भी न था। फटिक इस तरह मिनट भर के नोटिस में कहाँ गायब हो गया, कोई भी नहीं बतला पाया। उसके बाद भी आसमान में सूरज उठा, उसके बाद भी आसमान में सूरज डूबा। दुनिया ने और भी कई बार सूरज की परिक्रमा की, फिर भी फटिक वापस नहीं आया। लड़की की जो आखिरी निशानी घर में मद्धी मद्धी-सी टिमटिमा रही थी वह भी जैसे हमेशा हमेशा के लिए बुझने लगी।

फटिक फिर और नहीं आया।

स्कूल के लड़कों ने सोचा था जिसके घर पर इतनी बड़ी विपत्ति आई है वे शायद अगले रोज स्कूल नहीं आयेंगे। कम-से-कम एक दिन—एक रोज उनकी लाल सूनी आँखों के पहरे से वे लोग बच जायेंगे। लेकिन नहीं। रोज की तरह ही वे कन्धे पर चादर डाले—रोज की तरह उस दिन भी अपने कमरे के आगे खड़े हैं। अपनी जेब घड़ी की ओर देखकर बोले 'जनादन, गेट बन्द करो—'

जनादन को भी पहले तो जरा अजीब लगा।

उसने भी सुबह ही खबर सुनी थी। खबर सुनते ही वह भी दौड़ा पंडितजी के घर गया था। वहाँ उस वक्त बहुत से लोग जमा थे। सेक्रेटरीबाबू भी थे। सबके सब पत्थर के बुत की तरह चुप खड़े थे। कौन किसको दिलासा दे? किसी में क्या रोकने की ताकत थी?

लेकिन नियम के मुताबिक पंडितजी स्कूल आयेंगे, यह क्या कोई कभी मान पाया था?

'जनादन गेट बन्द करो।'

शशधरबाबू ने घर पर ही खबर सुनी। जरा देरी करके आ रहे थे।

जगादन से बोले, गेट पोलो वाबा, आज भी क्या तेरे पन्तिजी महाराज स्कूल आए हैं ? घय हैं—तेरे पडितजी ।'

लेकिन वगर आए क्या काम चलता है ? अपना नही है, इतने सारे लडके तो हैं उनके । ये सब भी तो उनके नाती हैं । ये लोग भी तो उनके नाती ही जसे हैं। उनका भला-बुरा भी तो उन्हीको देखना पडेगा । और कौन है इनका भला चाहने वाला ?

अब की बार सारे क्वेश्चन पेपर नये सिरे से तयार हुए थे । इस बार के क्वेश्चन पेपर निमाई प्रेस म नही छपे हैं। अबकी बार किसी को पहले से क्वेश्चन पता नही लगे । इस बार कोचिंग स्कूल के मास्टर बडी मुश्किल म पडे हैं । लेकिन पन्तिजी के आगे कौन कुछ कहता ।

नरेन चक्रवर्ती उस रोज हेडमास्टर के कमरे म आए । उसने पूछा टीचस का रवैया क्सा है ?

भवरजन ने कहा रवया ठीक नही है

ठीक नही है के मान ?

भवरजन न बतलाया, सुना है टीचस की मीटिंग हुई है, एक्जामिशन बायकाट करने वाले हैं—वे लोग बुरी तरह नाराज हो गए है उनका कहना है हम लोगो पर जब कमिटी का विश्वास नही है तो हम लोग भी एक्जामिनेशन के वक्त इनविजीलेशन नही करगे ।'

खबर सुनकर पहले निमाई साहू ने कहा था, बहुत अच्छा अगर ऐसा है तो बडी अच्छी बात है। मैं चाहता हूँ इसका कोई रास्ता निकल आए। सच ही तो पन्तिजी इस स्कूल के कौन हैं ? उनकी बात हा मानी जाएगी और कमिटी कुछ नही है ? कुछ भी नही ?'

बाद मे मामला काफी उलझता जा रहा था । हर ओर से खबर आई इम्तहान वाले राज सब लोग मिलकर इम्तहान का बायकाट करेंगे ।

नरेन चक्रवर्ती बुरी तरह डर गए थे । इतने दिन का पुराना स्कूल, इतने सारे लडको का भविष्य । एक रोज पहले सीधे स्कूल आकर

शशधरबाबू को बुलाया। पूछा, 'सुना है आप लोगों ने एग्जामिनेशन बॉयकाट करने का निश्चय किया है?'

शशधरबाबू ने जवाब दिया, 'जी हाँ'

नरेन चक्रवर्ती ने कहा, 'लेकिन आप लोग इनोसेंट लड़कों के भविष्य से खेलेंगे? आप लोगों के लिए अपना स्वार्थ ही ज्यादा महत्वपूर्ण है?'

शशधर ने कहा, 'लेकिन कमिटी ने जब हमारी बात नहीं सुनी तो हम लोग ही क्यों कमिटी की बात सुनें?'

'आप लोगों की बात नहीं सुनी मान? आप लोगों का प स्केल नहीं बनाया गया? उसकी बाबत हर महीने स्कूल का साढ़े बारह हजार रुपये का एक्सपेंडीचर बढ़ गया है, यह बात मालूम है?'

शशधरबाबू हँसने लगे। असल में तनखाह के लिए तो शशधरबाबू वगैरह नौकरी कर नहीं रहे। इस महँगाई के जमाने में खाली तनखाह से कौन खुश रह सकता है। हजार रुपये तनखाह होने पर भी पेट नहीं भरता। ऊपरी चाहिए। ऊपरी का जैसे मजा ही दूसरा है। कोचिंग स्कूल से जो ऊपरी मिलता उसका स्वाद ही अलग है। सौ, डेढ़ सौ जो भी मिले जैसे पड़ा हुआ पैसा मिल गया। उस रास्ता चलते मिले रुपये के लिए ही तो शशधरबाबू वगैरह को इतना लालच है। स्कूल से मिली तनखाह तो जैसे माँग का सिंदूर है उससे माँग भरकर तुम चाहे जिसके साथ रात काटो। उससे जात भी बची रहेगी, जायका भी बदलता रहेगा'

'हम लोगों पर कमिटी का भरोसा नहीं है। इसीलिए तो हमसे क्वेश्चन सेट नहीं कराए गए।'

नरेन्द्र चक्रवर्ती ने कहा, 'लेकिन हमेशा से आप लोगों पर भरोसा था, और इसी साल अचानक भरोसा नहीं रहा इसका कारण भी तो जानने की कोशिश करो। आप लोगों के खिलाफ पंडितजी की शिकायत है कि आप लोग लड़कों को क्वेश्चन बतला देते हैं।

शशधरबाबू बोले, 'तब आप लोग हमें डिसचार्ज कर दें। जहां आप लोगों को हमारे ऊपर संदेह है वहां हम लोग काम करें भी तो कैसे? लड़के ही क्या हमारे प्रति श्रद्धा दिखलाने लगे?'

नरेन चक्रवर्ती अब जरा नरम हुए। कहने लगे देखिए, पंडितजी बूढ़े आदमी हैं। उन्होंने इस स्कूल की नींव डाली उनका भी तो एक सम्मान है। उनकी बात की कोई कीमत ही नहीं है आप लोगों के पास?'

शशधरबाबू जैसे इस बात को नकार नहीं पा रहे थे। उन्होंने कहा, 'ठीक है देखता हूं, पंडितजी कहां तक बढ़ सकते हैं।

लेकिन इम्तहान के पहले रोज जो घटना हो गयी उसके बाद बाय काट का सवाल उठने पर भी उसे लेकर हुज्जत करने की किसी की इच्छा नहीं हुई। और ठीक उसके दूसरे रोज पटिक के लापता हो जाने की कहानी भी जब सबने सुनी तो शशधरबाबू ने भी कहा हम लोगों को कुछ भी नहीं करना पड़ा भगवान ने खुद ही बूढ़े को सजा दे दी।

रानी उस रोज से बाग से बार-बार आती।

बासंती कहती जा अपनी नानीअम्मां के पास हो आ, आकर थोड़ी देर बात'

रानी हमेशा से ही इस घर में आती रहती थी। लेकिन उस रोज पटिक के चले जाने के बाद से सुबह शाम जब-तब आने लगी।

रानी अपनी चोटी के सामान का डिब्बा लाकर कहती लो नानी अम्मां मेरी चोटी कर दो'

शिवानी भी जैसे बात करने के लिए किसी को देखकर थोड़ी देर के लिए रिहाई पाती।

कहती, 'तेरे आ जाने से फिर भी थोड़ी देर के लिए बात करने वाला कोई मिल जाता है।

रानी पूछती, 'पटिक की कोई खबर मिली या नहीं अम्मां?'

शिवानी कहती, वह क्या अब आएगा बिटिया? कितनी जगह

खबर भिजवायी है। विनोद तक हर कहीं खत लिख लिखकर पता लगाने की कोशिश करते-करते हैरान हो गया है—नरे बाबा नरेन बेचारे ने ही क्या कम कोशिश की है !'

सचमुच काफी कोशिश की गयी। कोई भी उसके बारे में कुछ नहीं बतला पाया। लड़का आखिर गया कहाँ। वहाँ क्या खा रहा है, कौन उसको देख भाल करता होगा, किसी बात का ठीक नहीं है। उसका ध्यान आते ही शिवानी चुपचाप बैठी आँसू बहाती।

अचानक बाहर से किसी ने आवाज दी 'नानीअम्माँ '

आवाज अनजानी सी लगी। शिवानी पहचान नहीं पायी। रानी से बोली तू जरा बैठ मैं देखूँ कौन है '

कहकर दरवाजे के पीछे जाकर पूछा 'कौन ?'

'मैं विनोद हूँ नानीअम्माँ '

और दरवाजा खुलते ही सूट बूट पहने विनोद अंदर दाखिल हुआ। अन्दर घुसते ही नानीअम्माँ के पाँव छुए।

रानी ने भी देखा। बरसों पहले उसने इस विनोद को देखा था। लेकिन यह जैसे वह नहीं था। शक्ल बिलकुल बदल गई थी। रानी ने अपनी साड़ी ठीक कर ली।

विनोद के पीछे एक अर्दली के हाथ में थैली थी। विनोद ने उसे बरांडे में रखकर जाने को कहा। वह आदमी साहब को सलाम करके चला गया।

विनोद ने बरांडे में आकर कहा, ये फल रख लो नानीअम्माँ, नाना के लिए ले आया हूँ।

यह सब लाने की क्या जरूरत थी ? तू तो जानता है अपने नाना को '

विनोद हँसने लगा। बोला 'नाना को मैं नहीं जानता ? अच्छी तरह जानता हूँ उन्हें। पास होने के बाद माँ एक दफा नाना को दक्षिणा देने आई थी बाप रे ! तब कैसी वापस कर डाली थी ! अब भी क्या नाना

वसे ही है ?'

नानीअम्मा भी हसन लगी। थली रखन अदर जाते-जाते बोली वह सब पागलपन ता अब और भी बढ गया है।

विनाद बोला अबकी बार अगर वसा कुछ किया तो मैं भी फिर कभी इस घर म नही आने का। नाना से तुम यही कह देना नानीअम्मा—मेरी बदली बाजितपुर हो गई है रास्ते म बलरामपुर उतर पडा, सोचा जाऊँ नाना और नानीअम्मा के पावो की धूल लेकर थोडा पुण्य कमा लू—लेकिन नाना है कहा ? अभी भी क्या स्कूल म हैं ?

शिवानी न कहा उन्हें और काम भी क्या है ?

विनोद ने कहा सुना है स्कूल म काफी गडबड चल रही है ? मास्टरो न हडताल करन की धमकी दी था ?

शिवानी ने कहा, 'क्या जानू बाबा कब गडबड नही थी मुझे तो याद नही पडता '

विनोद ने कहा क्यो ! हम लोगो के वक्त म तो एसा नही था !

शिवानी न बात बदली लेकिन तू सारी जिन्दगी क्या इसी तरह बदली होते होते खत्म कर डालेगा ? कही थोडे दिन स्थिर होकर नही बठने देंग तुझे ?

विनोद हसन लगा। फिर बोला नही, इस नौकरी का यही नियम है नानीअम्मा। खाली वन-जगल और देहातो म ही हमारी जिन्दगी कट जाएगी

लेकिन अपन बलरामपुर म ? यहाँ भी तो आ सकता है ?

विनाद न कहा 'हाँ बलरामपुर म नही बीरगज आना पड सकता है। लेकिन वह मेरे हाथ म नही है मालिक की मर्जी। उसका हुक्म होते ही तामील होगी '

अचानक वासती आ पहुची। आते ही बोली इतनी देर लगती है तेरी चोटी होन म

कहते-कहते पूरी बात नही कह पायी। सामन सूट-बूट पहन एक

जन को देखकर चेहरे पर लम्बा घूघट खीच लिया। घूघट खीचकर जरा सकपका गयी।

शिवानी ने कहा, 'अरे इसे देख कर कभी शर्म कर रही हो बहू ? यह तो मेरा विनू है—विनाद। उनका पुराना विद्यार्थी। बडा हाकिम हो गया है आजकल। बदली होकर वाजिदपुर जा रहा था, रास्ते म नानी को देखने के लिए यहाँ आया है

यह सुनकर वासती थोडी सहज हो गयी। लेकिन मुह स एक बात भी नही निकली। विनाद की ओर देखकर शिवानी बोली, तू इन्हे नही पहचान पाएगा, य रानी की माँ हैं। नरेन, अरे अपने नरेन चक्रवर्ती की बहू।

सुनकर विनाद ने जल्दी स बरांडे मे आकर वासती के पाँव छुए।

'अरे बस बस, जीते रहो भया।

तब तक रानी की चोटी हो गयी थी। वह एक ओर सिमटी खडी थी।

वासती ने कहा 'तो चलते हैं काकीमाँ, चल रानी

विनोद बहुत दिनों बाद आया था। गोर पडितमा को अपने इस विद्यार्थी से बडी उम्मीद थी। वह उनके कितने ही स्वप्नो का फल था। शिवानी जानती थी कि य इस समय घर होत तो काफी खुश होत।

विनोद ने कहा मालूम है नानीअम्मा मैं जहा कही भी जाता हू हर जगह पडितजी की बात करता हूं। सबसे कहता हूँ कि पडितजी के स्नेह के बिना मैं जिदगी म इतना बडा बन सकता था। मैं आज जो कुछ भी हूँ पडितजी की दया से। मैं हर किसी से यही बात करता हूँ

इसक बाद विनाद एक एक कर उन्ही सब बीत दिना की बातें करने लगा। वही सब बचपन की बातें। पडितजी न कब क्या कहा था, कब डाँटा था, कब पीटा था उसे सब याद था।

शिवानी बोली 'लेकिन इससे उनका खुद का क्या हुआ विनोद ?, अब तो यहाँ की कमिटी के लोग भी उन्हें नही चाहते। अब तो उनकी

बात भी कोई नहीं सुनता।

विनोद ने कहा, 'लेकिन सरकार की ओर से भी तो उनके लिए कुछ नहीं किया जा रहा।'

शिवानी बोली, 'क्या जानूं भैया, मैं यह सब नहीं समझती। इस बारे में मैं कोई बात भी नहीं कहती।'

विनोद ने कहा, 'अब की बार जाकर मैं ऊपर वालों से इस बारे में बात चलाऊँगा।'

उसे तभी एक अचानक याद आया। उसने पूछा, 'हाँ, आपके पण्डित जी की फिर कोई खबर मिली या नहीं मामीअम्मा?'

शिवानी बोली, 'नहीं भैया, कितना कुछ किया, कोई खबर नहीं मिली, वह शायद अब नहीं रहा।'

विनोद ने कहा, 'मैंने भी बहुतेरी खोज की बंगाल के हर जिले में टेलीग्राम करवाए। बाद में बिहार, उड़ीसा, हर जगह से उत्तर यही आया, उसका कोई पता नहीं लग रहा।'

शिवानी बोली, 'तुमने अपना फर्ज किया, तुम और क्या कर सकते हो!'

थोड़ी देर बाद विनोद उठा। शिवानी के पैर छुए। फिर बोला, 'लगता है, पण्डितजी अभी तक स्कूल ही में हैं, उनके चरणों के दर्शन कर लूं।'

'फिर आना जरा।'

'जरूर आऊंगा मामीअम्मा। पण्डितजी का ऋण मैं जिन्दगी भर नहीं चुका पाऊंगा।' कहकर विनोद चला गया।

रात को जब पण्डितजी ने घर में कदम रखा, तो मुन्नी बोली, 'अरी, विनोद आया था। तुमसे भी तो मिलना चाहता था।' फिर... 'मैं एक बात सोच रही हूं, जानती हो? अपनी गंगा से अगर विनोद का ब्याह हो जाए तो क्या हर्ज?'

शिवानी के दिमाग में यह बात पहले नहीं आती थी। उसने कहा

'तुमने बात चलायी है क्या ?'

चलायी थी। लेकिन विनोद तो चुप ही रहा, कुछ भी नहीं बोला। लेकिन उसका ब्याह तो हमी लोगो को ठीक करना होगा। उसका तो और कोई भी नहीं है। नौ सो रुपए महीना मिलता है। बुरा क्या है ? पढा लिखा शिक्षित लडका। अपनी रानी के साथ जोडी अच्छी नहीं रहेगी ?

शिवानी बोली, 'अच्छी क्यो नहीं लगेगी। लेकिन उसके तो मा बाप हैं। पहले वे लोग तो राजी होते हैं या नहीं यह देखना है '

राजी क्यो नहीं होगे ? ऐसा हीरे सा जमाई उन्हे कहाँ मिलेगा ?

'फिर भी आखिर लडकी तो उन्हीं की है।'

गौर पडितजी ने कहा हो उनकी लडकी। लेकिन हँसखाली के उस रतन चौधरी के लडके से तो अपना विनोद हजार गुना अच्छा है। इसके अतिरिक्त अगर उन लोगो की लडकी है तो रानी मेरी नातिनी भी तो है '

कहकर उतारा हुआ कुर्ता फिर से पहन लिया।

फिर बोले, 'मैं अभी आ रहा हू '

शिवानी ने कहा 'इसी समय जाने की क्या जरूरत है, कल जाने से भी तो काम चल सकता है '

गौर पडितजी के दिमाग म ज्य जो बात घुसती है वह उसी वक्त होनी चाहिए। बोले, नहीं-नहीं शुभ सवाद शीघ्र ही देना उचित है, शुभस्य शीघ्रम्, अशुभस्य कालहरणम मैं बहूरानी को सवाद देकर अभी आता हूँ—अधिक देर नहीं लगेगी '

स्कूल को लेकर उसी दिन से गडबड शुरू हो गयी थी। उसी रोज जिस दिन कलकत्ते के प्रेम से क्वेश्चन पेपर छपकर आया था। इन सब मामलों में गौर पंडितजी को न शान्ति थी न वे थकान ही महसूस करते थे। एक जमाना था जब वे खुद ही यह सब करते थे। तब लड़के कम थे और स्कूल भी छोटा था। लेकिन स्कूल के मामले में जो उत्साह होना चाहिए उसमें वे कभी भी कंजूसी नहीं करते।

लेकिन यह बात किसी को अच्छी नहीं लगी। स्कूल के जितने भी टीचर थे अन्दर ही अन्दर कोई गडबड करने का ध्यान बना रहे थे। बात लडकों को भी अच्छी नहीं लगी। क्योंकि उस बार की परीक्षा में जो भी सवाल पूछे गए वे उन लोगों के लिए अनजाने थे।

लडके चुपचाप आकर पूछते सर, मुझे कितने नम्बर मिले हैं?

मास्टर लोग लडकों को भड़का रहे थे। कहते हम क्या मालूम? जाकर गौर पंडितजी से पूछो।'

असली मुसीबत संस्कृत को लेकर थी। अब तक कोचिंग स्कूल में सवाल नोट करा दिए जाते। उन लोगों को पूरी किताब भी नहीं पढ़नी पड़ती थी। इस बीच जो सवाल बतलाए जाते उन्हीं में से इम्तहान में सवाल पूछे जाते।

लेकिन अबकी बार वैसा नहीं था। अबकी बार सारे सटन-सटन सवाल आए थे। इस बार के प्रश्न कहां से सेट किए गए कोई भी नहीं बतला पाया।

कामन रूम में शशधरबाबू का गुट अपनी खिचडी पका रहा था। बलाईबाबू बोले अरे गल्ती तो हमीं लोगों की है हम लोगों में यूनिटी जैसी कोई चीज नहीं है इसीलिए तो बंगालियों की आज यह दुर्दशा है '

कालीधन बाबू बोले यूनिटी की बात रहने दो बलाई नौकरी करने आए हैं जो कहा जाएगा मुंह बंद किए सहना पड़ेगा—नौकरी चले जाने पर क्या तुम खिलाओगे मुझे बैठाकर ?'

शशधरबाबू बोले, 'क्या ? नौकरी क्या ऐसे ही चली जाएगी ? इस जमाने मे कोई किसी की नौकरी खाकर तो दिखाए जरा।

कालीधन बाबू बोले, नौकरी जाने पर आप रोकेंगे कैसे जरा सुनू ?'

शशधरबाबू ने कहा, 'अरे साहब, आप लोग कायर हैं इसीलिए ऐसा कह रहे हैं। मालूम है कम से कम तीन सौ लडके मेरे साथ हैं इन लोगो को अगर पीछे लगा दू तो आपका यह पंडित कहाँ जाएगा बतलाइए ? पंडित फिर रह पाएगा इस बलरामपुर म ? इस स्कूल की टेबुल-कुर्सियों मे आग लगा कर तब छोडेंगे। अभी पंडित मुझे जानता नही है—नही तो

बलाईबाबू ने कहा आप और ज्यादा न बोलिए शशधरबाबू, आपकी करामात देख ली। नही तो शुरू म जब नवचन्द्र सेठ वरनवाली कमिटी बनायी गयी आप क्या राजी हुए ? अब अगर कही सारे लडके फेल हो गए तो कहाँ जाएगा अपना कोचिंग स्कूल ?'

अचानक बातें शुरू होते ही घटा बज उठता और सारी बात वही रह जाती। बात बद हो जाती लेकिन क्षोभ नही बद होता।

वह क्षोभ विक्षोभ बनकर धुएँ की तरह अदर ही अदर घुमडता। मास्टरो के बीच असन्तोष की जहरीली हवा भर उठी।

बात निमाई साहू के कान तक भी पहुची। नरेन चक्रवर्ती के पास वह बार-बार आता।

कहता, नरेन तुम तो कुछ भी नहीं देखते, उधर मास्टर लडको को भडका रहे हैं।'

नरेन ठीक स नही समझ पाता। पूछता लडको को भडका रहे है के मानं ?'

माने कोचिंग स्कूल के सब लडके दल बना रहे हैं—किसी दिन स्कूल म आग न लगा दें।

'स्कूल म आग लगा देंगे माने ? तब तो पुलिस म खबर दे दू। बात

म डायरी कर रखी जाए। आलतू फाल्तू बकने से हो गया ?'

निमाई साह ने कहा सब पडितजी पर निभर करता है। उह हटाए बगर काम नहीं चलेगा भाई।'

नरेन हैरान हो गया, पडितजी को हटाएगे मान ? अभी भी तो उनकी सात साल की नौकरी बाकी है। और इसके अलावा स्कूल से हटा देने पर वे करेंगे क्या ? मर ही जायेंगे।

निमाई साह ने कहा यह सब सोचने से क्या काम-काज चलता है ? एक आदमी का हित ज्यादा है या हजारो लडको का हित ज्यादा है ? तुम इसम से कौन-सा चाहते हो बोलो ?

स्कूल के साथ पडितजी का बहुत दिनो का सम्पक था। नरेन चक्रवर्ती को जसे यह बात सुनकर बहुत बुरा लगा। यही पडितजी एक दिन बलरामपुर के लोगो ने उनकी कितनी श्रद्धा की। रास्ते म या और कही जो भी मिल जाता उसी का वे कुशल सवाद लेते। अपना सब कुछ खोकर इसान का भला करना चाहा। स्कूल की एक एक इट पडितजी के सीने की पसलिया की थी। दीवाल म अगर पीपल का पौधा निकला तो देखा और खुद नसेनी पर चढकर उन्होंने उस उखाडा है। अपने हाथो बगीचे के पडो मे पानी देते। बगीचे म जान कितने पौधे उन्होने लगाए हैं। उनके स्कूल से चले जाने की बात जैसे नरेन चक्रवर्ती स्वप्न म भी नही सोच सकते। दिन भर यही एक बात उनके दिमाग म घूमती रही।

दोपहर को टहलते-टहलते नरन चक्रवर्ती स्कूल आ पहुचे।

भवरजन अपने कमर म बठे थे। नरेन ने पूछा सब क्या बातें सुन रहा हूँ भव ?

भवरजन काफी चिन्तित थ। कहा आबहवा ठीक नही है। शशधर बाबू वगरह लडका को बहका रहे हैं—सब रिजल्ट निकलने की राह देख रह हैं ?

अबकी रिजल्ट कसा होगा ?'

'अनिमपबाबू का तो कहना है, खूब खराब रिजल्ट होगा। आजकल में कापियाँ आ जायेंगी।'

'और संस्कृत?'

भवरंजन ने कहा, 'थर्ड क्लास की संस्कृत की सारी कापियाँ तो पंडितजी खुद देख रहे हैं।'

'इतनी कापियाँ पंडितजी अकेले देख पायेंगे?'

भवरंजन ने कहा, 'मैंने भी तो यही कहा था, लेकिन उन्होंने तो मेरी बात सुनी ही नहीं। कहने लगे—नहीं, अब की बार मैं अकेले ही कापियाँ जाँचूँगा। उन्हें तो जैसे झक चढ़ गयी है।'

नरेन ने पूछा, 'क्या? सब खबर उनके कानों में जा पहुँची है क्या?'

भवरंजन ने कहा, 'नहीं, मेरे ख्याल से अभी उनके कान में खबर नहीं गयी है। क्योंकि पंडितजी तो आजकल रात दिन कापियाँ जाँचने में लगे हैं। जनार्दन कह रहा था—आज सुबह से अपने कमरे में आकर बैठे कापियाँ जाँच रहे हैं। जनार्दन से उन्होंने कह दिया है कि किसी को कमरे में आने नहीं देना।'

नरेन चक्रवर्ती ने कहा, 'रिजल्ट कब निकल रहा है?'

भवरंजन ने कहा, 'अगर बुधवार तक सब लोग कापियाँ लौटा दें तो सोमवार तक रिजल्ट आउट करने का इरादा है।'

नरेन चक्रवर्ती ने और कुछ नहीं कहा। स्कूल से निकल कर वापस अपने घर आ गए। हजारों लड़कों के भविष्य का सवाल था। एक दिन एक छोटी सी पाठशाला से यह हाई स्कूल बना है। इस स्कूल के साथ दिनोंदिन उनका भी एक रिश्ता जुड़ता जा रहा था। सामने सुशील मार्केट लेकर निकल रहा था।

नरेन ने आवाज दी, 'कहाँ जा रहे हो?'

सुशील ने कहा, 'मेला।'

नरेन ने कहा, 'इस बार तुम्हारे इम्तहान कैसे हुए?'

सुशील ने कहा 'ठीक ही हुए '

नरेन ने पूछा—इस बार भी फर्स्ट हो पाओगे न ?'

सुशील ने कहा जी हां

सुशील अपने रिजल्ट के बारे में हमेशा से ही निश्चिन्त रहता आया है। हमेशा वह क्लास में फर्स्ट रहा। लड़के के लिए नरेन ने घर पर तीन ट्यूटर लगा दिए थे क्योंकि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन गोविन्द चक्रवर्ती के नाती का क्लास में फर्स्ट हुए बगैर अच्छा नहीं लगता।

शाम के वक्त घर के आगे एक गाड़ी आकर रुकी।

नरेन ने जंगले से देखा—निमाई गाड़ी से उतरा। स्कूल का प्रेसीडेंट निमाई साह। साथ में एक और भी कोई है। उम्र काफी हो गयी है सुन्दर खानदानी चेहरा। सिल्क किया कुर्ता धोती। पांवों में हरिण के चमड़े की चप्पल।

नरेन स्वागत करने बाहर आया।

अरे नरेन देखो मैं इन्हें तुम्हारे पास ले आया हूं।

नरेन ने उस आदमी की ओर देखकर हाथ जोड़े। निमाई ने कहा चलो चलो अन्दर कमरे में चलो इनसे तुम्हारा परिचय करा दूं

कमरे में अन्दर आकर कुर्सी पर बैठने के बाद निमाई साह ने कहा 'ये हैं कुछ साल पहले के यहां के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन गोविन्द चक्रवर्ती के लड़के नरेन्द्रनाथ चक्रवर्ती। ये भी यहां के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन हैं और साथ बलरामपुर नायब हाई स्कूल के सेक्रेटरी हैं।

इसके बाद उस आदमी की ओर निर्देश करके नरेन से कहा और आप हैं हुसनाबाद के विख्यात जमींदार श्री रतन नारायण चौधरी।

नरेन ने रतन बाबू की ओर विनीत भाव से देखते हुए कहा 'मेरे अहोभाग्य !

छुट्टी का दिन देखकर ही गौर पंडितजी वाजितपुर गए थे।

यह वाजितपुर वह पुराना वाजितपुर नहीं है। नदिया जिले का वाजितपुर। विनोद यहाँ बदली होकर आया है सुनकर एक पुराना दोस्त एक दिन की छुट्टी में आया था। असल में शायद आदमी बिना संग साथ के जिन्दा नहीं रह सकता। अपने दोस्तों में से बहुत-से अपनी नौकरी में आगे बढ़ गए थे। उन लोगों के साथ भले ही मुलाकात न हो पाती, लेकिन कई एक के बीच पत्र व्यवहार था। उन्हीं में से एक था विश्वनाथ। वह भी सरकारी हाकिम था।

विश्वनाथ का लौट जाने का वक्त हो आया था।

'विनोद ने कहा, मेरे मास्टर साहब की बात तुझे याद रहेगी न भाई!'

विश्वनाथ ने कहा, 'जरूर

विनोद ने कहा, जिन्दगी में बहुत से मास्टरों को देखा लेकिन ऐसा एक भी आदमी नहीं देखा भाई। न एक नोटस की किताब लिखेंगे, न एक भी प्राइवेट ट्यूशन करेंगे। घर में सम्पन्नता हो सो भी नहीं। पूछने पर कहेंगे, विद्या बेचनी नहीं चाहिए। इस जमाने में इस तरह के आदमी हो सकते हैं यह बिना आँखों से देखे यकीन नहीं होता।

जरा रुककर फिर कहा, देख, मेरी इच्छा है कि अपने मास्टर साहब के लिए कुछ करूँ। मेरी दी कोई सहायता वे होश रहते नहीं स्वीकार करेंगे। यह भी समझ में नहीं आता कि क्या करने से उनका उपकार हो सकता है—आजकल तो भारत सरकार ने शिक्षा के लिए कितने ही पुरस्कारों की व्यवस्था की है। आजकल का जमाना तो टिप्स का जमाना है। कितने फालतू लोग टिप्स भिड़ाकर यह सब पा भी जाते हैं। लेकिन गौर मास्टर साहब जैसे आदमी के लिए कौन टिप्स लगाएगा! उनकी ओर से हम लोग कुछ नहीं कर सकते?

विश्वनाथ ने कहा, 'मैं कोशिश करके देखूँगा, कुछ हो सकता है या नहीं।'

'कोशिश नहीं तुम्हें कुछ करना ही पड़ेगा।'

विश्वनाथ ने कहा, ये लोग स्कूल कमिटी से रिकमण्ड क्यों नहीं करते ?

विनोद ने कहा ये लोग क्यों करने लगे ! इसमें लोगों का क्या स्वार्थ है ! बिना स्वार्थ के क्या आज कोई किसी के लिए कुछ करता है !'

गौर पंडितजी का नाम पता नोट करने के बाद विश्वनाथ चला गया। उसे ठीक वक्त पर ट्रेन पकड़नी थी।

घर में आदमी के नाम पर अकेला विनोद था। और होता भी कौन ! माँ की बड़ी तमन्ना थी कि एक दिन लड़का बड़ा होगा, खूब बड़ी सी नौकरी करके माँ का मुख उज्ज्वल करेगा। लेकिन यह तो हुआ नहीं। इतना बड़ा होने पर भी इसीलिए विनोद को लगता था, जैसे उसका कुछ भी नहीं हुआ।

अचानक बाहर से जैसे किसी ने पुकारा विनोद अरे विनोद

विनोद ने दौड़कर खुद ही दरवाजा खोला। यह आवाज तो उसकी पहचानी आवाज थी। यह तो पंडितजी की आवाज थी।

पंडितजी आप !'

कहकर जल्दी से गौर पंडितजी के पाँवों को छूकर माथे से हाथ लगाया।

गौर पंडितजी ने कहा 'मैं तुम्हारे पास आया था विनोद वाह! घर तो तुम्हारा बहुत बढ़िया है !

कहकर कमरे में चारों ओर देखने लगे। विनोद का घर इतना बढ़िया है। उनका ख्याल भी यही था कि विनोद का घर बढ़िया ही होगा। लेकिन इतना अच्छा होगा यह वह नहीं सोच पाए थे।

उन्होंने कहा, तुम्हारा नाम लेते ही सभी ने तुम्हारा मकान बतला दिया। तुम्हारा चपरासी तो मुझे घुसने ही नहीं दे रहा था। बाद में अपना परिचय दिया। अपने सम्बन्ध के बारे में बतलाया। लेकिन

तुम्हारा तो वडा नाम है यहा। जानते हो विनाद, तुम्हारा यहाँ वडा नाम है '

विनोद न कहा, आप वठिए पडितजी वठकर वात करिए '

गौर पडितजी वठे। फिर वोले विनोद, मैं वैठने नही आया हूँ, वैठन के लिए मैं नही आया हूँ। तुमसे एक काम की वात करके ही चला जाऊँगा उधर स्कूल म सारा काम पडा है। लडका की परीक्षा हो चुकी है कल उनका परीक्षाफल निकलना है वहुत काम है '

विनोद ने कहा वह सब करन के लिए तो काफी लोग हैं पडितजी हडमास्टर हैं, सेक्रेटरी हैं, प्रेसीडेंट है

'अरे तुम भी कैसी वात करते हो। स्कूल देखन के नाम कोई नही है। कोई कुछ नही देखता है। आजकल सबन हाथ खीच लिया है। जिस ओर मैं नही देखू वही गडबड हो जाती है। तुम लोग जव पढते थे तव भी अकेले मैंन ही सव समाला, आज जव इतन लोग हैं तव भी मुझे छोडकर जिम्मेदारी लेने वाला और कोई नही है। आज भी जूता सिलाई से लेकर चण्डी पाठ तक सब कुछ अकेले मुझे ही करना पडता है '

विनोद ने कहा 'अब आप की उम्र हो गयी। आप विश्राम तो ले सकते हैं '

गौर पडितजी ने कहा, अरे विश्राम तो मैं लेना ही चाहता हूँ लेकिन काम कौन करेगा तुम्हीं कहो ? सब तो खाली रुपया रुपया करके पागल हैं। स्कूल का भला किसम होगा वह तो कोई एक बार भी नही सोचता।'

विनोद ने कहा, अभी थोडी देर पहले अपने एक मित्र से आपके वारे म वात कर रहा था यह इडिया गवनमट म वडा ऑफीसर है '

यह सब वातें अभी छोडो विनोद, मरे पास अभी उन सब वातो को सुनने की फुरसत नही है। मैं एक काम की वात करन आया था।'

विनोद ने कहा 'पहले मैं आपके खाने पीने का इतजाम

कर दूँ। आज यहीं रुक जाइए न आप।'

गौर पण्डितजी ने कहा, 'अरे नहीं, तुमसे कहा था न कि वहाँ सारा काम पड़ा है मेरे लिए। तुम्हारे यहाँ बैठकर खाने-पीने में क्या मेरा काम चल जाएगा? मैं खा-पीकर ही घर से निकला हूँ, इसके अतिरिक्त हाथ का काम छोड़कर चला आया हूँ न—पर जो कहने आया हूँ कहता हूँ। मैंने तुम्हारा विवाह पक्का कर लिया है।'

विवाह!' विनोद जैसे आसमान से गिरा।

हाँ विवाह। विवाह तो तुम्हें करना ही है।'

'लेकिन'

यह सब किन्तु परन्तु छोड़ो। मैंने अपनी खुद की लड़की का विवाह ठीक से नहीं किया विनोद। उसका मुझे आज भी दुःख है। तुम्हारी माँ नहीं है, मैं तुम्हारा विवाह ऐसी-वैसी जगह नहीं कर दूँगा। मेरी नातिनी को तो तुमने देखा ही है, वही अपने नरेन की लड़की'

विनोद कुछ नहीं बोला। चुपचाप बैठा वह पण्डितजी की बातें सुनने लगा।

गौर पण्डितजी ने उठते-उठते कहा, ठीक है यही बात तय रही—मैं चलता हूँ। तिथि निश्चित करके तुम्हें खबर दूँगा।

विनोद ने कहा 'आप बैठिए तो सही पण्डितजी, यहीं खा-पीकर दोपहर बाद जाइएगा।

गौर पण्डितजी ने कहा, तुम्हारे यहाँ इस समय रुक जाने से मेरा स्कूल चलेगा? एक घंटे के लिए भी अगर वहाँ न रहूँ तो वे लोग सब गड़बड़ कर डालेंगे

इसके बाद बाहर निकलकर बोले तो यह बात तय रही न विनोद?'

विनोद ने कहा 'आपकी बात पर मैं और क्या कह सकता हूँ पण्डितजी, आप जो भी करेंगे वही होगा।'

गौर पण्डितजी इसके बाद और नहीं रुके। सीधे बाहर सड़क पर आ

गए। चलो जो भी हो, कम से कम एक बात के बारे में निश्चित हो गए। इस बार वे भूल नहीं करेंगे। एक बार यह भूल हो गयी थी। उसका नतीजा उन्हें अभी तक भुगतना पड़ रहा है।

बाजितपुर स्टेशन पर टिकट खरीदकर पंडितजी ट्रेन पर चढ़े। इंसान इससे ज्यादा और क्या चाहता है अपने हाथों पढ़ा विद्यार्थी आज इतना बड़ा आदमी हो गया है यह देखकर आनन्द होता है। जीवन में उन्होंने इससे अधिक क्या चाहा था? एक दिन अपने गाँव की मिट्टी छोड़कर इस बलरामपुर में आए थे तो इसी के लिए। इसी के लिए तो अपना सब कुछ तजकर उन्होंने बलरामपुर का स्कूल बनाया।

पालागन पंडितजी।

ट्रेन में भी जाने किसने उन्हें पहचान लिया।

'कहाँ गए थे पंडितजी?'

गौर पंडितजी ने कहा, यहीं बाजितपुर गया था। बाजितपुर में मेरा विद्यार्थी विनोद हाकिम होकर आया है, तुम्हें मालूम है? मेरे ही स्कूल में पढ़ा है न! बचपन से एक तरह से मेरे पास ही बड़ा हुआ है। बड़ा मेधावी विद्यार्थी था। मैं तभी से कहता था विनोद काफी बड़ा होगा।'

फिर अचानक जैसे याद आया, पूछने लगे 'लेकिन भाई तुम कौन हो मैं तो तुम्हें ठीक से पहचान नहीं पा रहा'

उस आदमी ने कहा, 'जी, मैं किताबें लगवाने आपके स्कूल गया था। 'सरल उपक्रमणिका' किताब आपने कोर्स में लगवा दी थी न। इस साल एक बार फिर आऊँगा। पब की बार किताब का नया एडीशन निकला है। अबकी और भी अच्छे कागज पर छपाई हुई है'

पब्लिशर का आदमी था। उस आदमी की ओर अच्छी तरह से देखकर गौर पंडितजी ने कहा 'तुम लोग भाई किताबों के दाम थोड़े कम करवाओ हमारे गाँव के लड़के बेचारे बड़े गरीब हैं, उन्हें खरीदने में बड़ी मुश्किल होती है—'

फिर कहने लगे, 'यहाँ जो मेरा विद्यार्थी विनोद है, जानते हो

इसकी विधवा माँ बेचारी कितनी गरीब थी ? स्कूल के लिए एक किताब तक खरीदने का पैसा नहीं था उसके पास । दूसरों से माँगकर पढ़कर बेचारे ने पास किया है । हर क्लास में फर्स्ट होता था—'

ज्यादा बात करने का वक्त नहीं था । उसी का विवाह पक्का करने गया था । विवाह मेरी नातिनी के साथ ही हो रहा है ।'

बात कहते गौर पण्डितजी का सीना जैसे दस हाथ चौड़ा हो उठा । ट्रेन से उतरने के बाद भी यही एक बात दिमाग में चक्कर काट रही थी ।

'अरे पण्डितजी हैं, क्या कहीं गए थे ?'

बलरामपुर के स्टेशन मास्टर ने उनके पास आकर नमस्कार किया ।

गौर पण्डितजी ने कहा, 'क्या खबर है भाई ! यहीं जरा बाजिनपुर गया था । तुम्हें तो मालूम होगा न, मेरा विद्यार्थी विनोद, वह आजकल वहाँ का हाकिम हो गया है—उसका विवाह पक्का कर आया—'

'विवाह ? किसके साथ ?'

गौर पण्डितजी ने कहा, 'अपनी नातिनी के साथ—'

'आपकी नातिनी ? आपकी नातिनी कौन है ? आपका तो एक नाती था, वही फटिक—'

'अरे नहीं-नहीं, फटिक तो लापता है । यह तो मेरी नातिनी है, नरेन की लड़की । अरे नरेन चक्रवर्ती, अपने स्कूल का सेक्रेटरी ।'

रास्ते भर न जाने कितने लोगों को इसी तरह कैफियत देते आए उसका ठीक नहीं है । कैफियत देना उन्हें अच्छा भी लग रहा था । यह भी क्या कम खुशी की बात है । यह बात तो सुनने में भी अच्छी है, सुनाने में भी अच्छी है । गौर पण्डितजी जल्दी-जल्दी पाँव चलाने लगे ।

नरेन का घर पार करने के बाद बायीं ओर मुड़ते ही उनका घर था । पहले नरेन का मकान पड़ता है । गौर पण्डितजी ने पहले नरेन के घर की ओर पाँव बढ़ाए ।

लेकिन घर के सामने पहुँचते ही न जाने कैसा खटका-सा लगा ।

यहाँ गाडी किसकी खडी है ? कोई आया है क्या ? निमाई साहू की गाडी भी एक ओर खडी है। गौर पडितजी को जरा अजीब-सा लगा। अन्दर भी जैसे और दिनों से ज्यादा रोशनी हो रही है। सारी वत्तियाँ जला दी गयी हैं। अन्दर जाने का रास्ता भी रोशनी से जगमगा रहा है। नौकर चाकर घूम रहे हैं। जैसे आबहवा ही कुछ और हो।

'अरे पडितजी, आप आ गए ? आइए, आइए सब लोग अन्दर ही हैं।'

नरेन के पिता के जमाने के नौकर वृदावन ने आगे बढकर कहा। वृदावन की साज-पोशाक भी जैसे आज खासी थी। गौर पडितजी की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। आखिर यह सब आयोजन किस बात के लिए है ?'

उन्होंने पूछा, आज तुम्हारे यहाँ किस बात का आयोजन हो रहा है वृदावन ?'

वृदावन ने कहा, 'जी आज रानी बीबीजी की सगाई है न '

'सगाई ? रानी की सगाई ?'

'जी हाँ हँसखाली का जमींदार बाडी के लोग बीबीजी की गोद भरने आए हैं बृहस्पतिवार को ब्याह है।'

गौर पडितजी खडे के खडे रह गए। उनके सर पर जैसे बिजली गिरी। कसे उन्हें तो आज सुबह तक भी कुछ मालूम नहीं था।

वृदावन ने कहा जी आज ही अचानक सब ठीक हो गया। कल उनके यहाँ टीका होना है '

उस ओर से अचानक वासती की आवाज सुनायी दी, 'वृदावन '

वृदावन ने जाते-जाते कहा आया माँ जी !'

गौर पण्डितजी लौटने के लिए पाँव बढा रहे थे। लेकिन तब तक वासती आ पहुची। काका बाबू को देखकर बोली, आप जा कहाँ रहे हैं काकाबाबू अन्दर आइए न '

गौर पडितजी तब जैसे एकदम गूगे हो गए थे।

वासती ने कहा 'अचानक सब ठीक हो गया बाबाबाबू, साहजी ने ही ठीक करा दिया। जल्दी-जल्दी म सब इतजाम करना पड़ा। आप घर नही थे मैं खुद जाकर कावीमों म कह आयी हूँ।

गौर पण्डितजी ने कहा 'मैं जरा वाजिनपुर गया था '

वहकर शायद पसोपेश म पड़ थे। लेकिन तभी अन्दर स नरेन पडितजी की आवाज सुनकर बाहर आ गया।

'पडितजी!'

नरेन को देखकर जसे पडितजी अपने आपको सम्हालने की कोशिश करने लगे। उन्होने कहा मुझ पता नही था नरेन मैं मैं बाजिन-पुर

नरेन ने कहा आइए आइए पडितजी आप रानी को आशीवाद करिए '

गौर पडितजी को लग रहा था कोई जसे उन्हें चाबुक से मार रहा है। लेकिन वह वे अन्दर कमरे म चले आए उन्ह इस बात का भी ख्याल नही था। कमरा लोगों से ठसा था। सामने ही बठे निमाई साह के चेहरे पर उनकी नजर गयी। लगा जसे वह उनका मखौल उड़ा रहा था। कहो कसी रही! यह ब्याह रोक पाए तुम पडित! वह घटक भी एक ओर बठा था। और व हँसखाली के जमादार रतन नारायण चौधरी। बड़ी-बड़ी मूछें लिए शाति स बठे थे। उनके पास और भी कई गणमान्य लोग बठे थ।

इधर आइए पडितजी पहले आप रानी को आशीर्वाद दीजिए '

रानी उस वक्त बनारसी साड़ी म अपने-आपको छुपाए कमरे के बीचोबीच सर झुकाए बठी थी। उसने जसे अब अपना सर और भी नीचे झुकाकर अपनी नजरें और भी नीची कर ली थी।

गौर पडितजी ने हाथ म दूब आदि लेकर माथे से लगायी। मन ही मन आशीर्वाद किया—खुशी होओ बिटिया, मैं तुम्हारे सुख की कामना करता हू। जिसस भी तुम्हारा विवाह हो तुम सतीलक्ष्मी की

तरह उमका घर उजागर करती रहो। मैं आशीर्वाद करता हूँ तुम राजरानी होओ—मैंने अपनी भवती को खो दिया तुम्हारे द्वारा मेरी सारी कामना पूर्ण हो '

अचानक पैरों पर एक गम पानी की बूद गिरते ही और पंडितजी चौंक उठे। उन्होंने देखा—रानी तब उनके पाँवों म सर टिकाए प्रणाम कर रही थी।

उस दिन की रात भी कटी। दुख की रात भी तो कटना है बस ही कट गयी। नही तो जिस दिन भवती मरी थी वही रात कसे कटी? पटिक के जान के बाद भी तो दिन रात कटे। कोई क्या किसी के लिए बैठा रहता है! अरसे पहले एक रोज पंडितजी शिवानी को इस तरह रामपुर म लाए थे। उसके बाद कितने दुख के कितने आन द के और कितने भले-बुरे दिन कट गए जब कि इन दिनों क कटने की कोई बात नहीं थी। बात तो न कटने की ही थी। लेकिन फिर भी दिन कटे हैं।

इन कुछ रोज के अन्दर ही जैसे इस घर के साथ उस घर का सारा सम्पर्क खतम हो गया।

पण्डितजी के स्कूल जाने के बाद शिवानी चुपचाप बैठी बठी योंही देर तक आसमान की ओर ताकने के बाद फिर नजरें झुका लेती। आसमान स पश्चिम की ओर रानी के मकान की छत दिखलायी देती थी। उस ओर नजर जाते ही शिवानी जबरदस्ती अपनी नजर हटा लेती। शम्भू की मा कामकाज करके चली जाती।

शभू की माँ बोलती बहन है, जानती हो माँ रानी का ब्याह कितने बडे आदमी के घर हो रहा है सुना है लडके क घर हाथी था।

शिवानी इन सब बातों पर कान नहीं देती थी। वह अपने काम मे लगी रहती। लेकिन शभू की माँ की बातों का जसे अन्त ही नहीं था। वही सुबह शाम आकर तरह-तरह की खबरें दे जाती।

सगाई वाले रोज स ही इन खबरों का सिलसिला शुरू हुआ था। लडके वालों ने कितने बड़े हीरों का नैकलेस लडकी को दिया है। क्या

क्या खिलाया है राजभोग कितने बड़े बड़े थे—हाथ के भाव से वह भी बतला दिया। रानी के ब्याह की बात छोड़कर जैसे उसकी जबान पर और दूसरी कोई बात ही नहीं थी। एक एक रोज एक एक खबर लाकर चौंका देने की कोशिश करती।

लेकिन इसके लिए वासंती को भी दोष नहीं दिया जा सकता।

सगाई वाले रोज की दोपहर को वह आयी थी।

आते ही बोली 'अचानक बात पक्की हो गयी भाभी। समझ में नहीं आ रहा क्या होगा। तुम्हें आकर सब सम्भालना पड़ेगा। मुझे तो अकेले बड़ा डर लग रहा है—आओगी न?'

फिर पूछा, 'काकाबाबू? काकाबाबू कहाँ हैं? लगता है स्कूल चले गए हैं?'

शिवानी ने कहा 'नहीं, वे तो बाजितपुर गए हैं।'

तब वासंती के पास बात करने के लिए ज्यादा वक्त नहीं था। जाते वक्त कह गयी 'रानी ने बार बार तुम्हें आने के लिए कहा भाभी, तुम नहीं आयी तो वह खूब गुस्से होगी।'

गुस्सा! गुस्से की बात सुनकर शिवानी को हँसी आ गयी। वासंती के चले जाने के बाद से ही बात मन में चक्कर काट रही थी। गुस्सा करके भी जैसे कोई किसी का बड़ा भारी नुकसान कर सकता है। दुनिया में आज तक किसने गुस्से की परवाह की है। सभी तो पीछे छोड़कर चले जाते हैं। गुस्सा करके क्या कोई किसी को पकड़ कर रख पाता है या पकड़ कर रखना ठीक है? अवनी को ही क्या कोई रोक पाया? फटिक को ही क्या कोई रख पाया है?

बात में जब बर्दाश्त से बाहर होने लगती तो शिवानी कहती 'अब बंद भी करो शंभु की मा, हर समय एक ही बात सुनना अच्छा नहीं लगता।'

शंभु की माँ सब समय रहती ही नहीं थी तो सब समय बात क्या करती। वह अपने काम पर चली जाती। तब शिवानी को और भी

खराब लगता। तब लगता जैसे शंभु की मां और भी कुछ देर बात करती तो अच्छा रहता।

उस रोज दोपहर के वक्त अचानक दरवाजे की कुंडी खटकने लगी।

शिवानी हड़बड़ाकर उठी। दरवाजे के अंदर से पूछा 'कौन? रानी है क्या?'

जरूर रानी ही चुपचाप चली आयी होगी। सगाई के बाद फिर और बाहर निकलने का रिवाज नहीं है। बेकार में क्यों इस तरह चली आयी!

लगता है बहुत गुस्से हो गयी है। आते ही उलाहना देगी—तुम आयी क्या नहीं नानीअम्मां!

लेकिन नहीं रानी नहीं सुशील था। बाहर से सुशील की आवाज आयी 'नानीअम्मां, मैं सुशील हूं'

शिवानी ने जल्दी से दरवाजा खोला।

'क्या बात है रे? तू?'

सुशील ने कहा, 'तुम हमारे घर नहीं गयीं नानीअम्मा? दीदी की सगाई हो गयी बृहस्पतिवार को शादी है।'

'रानी ठीक तो है न?'

सुशील ने कहा 'दीदी तुमसे बहुत गुस्से हैं, मालूम है नानीअम्मा। दीदी तो आ रही थी लेकिन मां ने नहीं आने दिया, कहती हैं इन दिनों घर से निकलना नहीं चाहिए।'

शिवानी ने कहा, 'हां इन दिनों बाहर न निकलना ही ठीक है—लेकिन तू क्या यही कहने आया है?'

सुशील ने कहा 'नहीं फटिक का एक खत आया है।'

फटिक! शिवानी का दिल धुक कर उठा। फटिक ने खत लिखा है। वह जिंदा है!

सुशील ने हाथ बढ़ाकर खत दिखलाया।

शिवानी अगर पढ़ पाती तो फिर क्या बात थी! उसने कहा 'क्या,

लिया है रे ?

सुशील ने रान की ओर नजर रखकर पढ़ना शुरू किया लिखा है आजकल वह जोरहट म है जोरहट से वह यात्रा की मडली के साथ शिवसागर जाएगा । उस तीन सौ रुपये महीने मिलते हैं वह बडे मजे म है । उसके लिए फिकर करने को मना किया है

वह यहाँ कब आएगा ?

सुशील ने बतलाया लिखा है कि वह अब वापस नहीं आएगा । लिखा है कि नाना मुफ्त खाली मारते थे अब उनके घर कभी नहीं आऊगा

वापस नहीं आएगा ?

इस बात का जवाब दिए बगर सुशील वापस जाने लगा चलता हूँ नानीअम्मा मा ब त डाटगी मुझ

शिवानी ने कहा क्यो ? डाँटेगी क्या ? नानीअम्मा के घर आया है इसलिए ?

सुशील ने कहा नहीं यह बात नहीं है मैं सस्कृत म फेल तो हो गया हू । नाना ने दो नम्बर के लिए मुझ फेल कर दिया है हमार स्कूल क सब लडके इस बार फेल हुए हैं—स्कूल म इसी बात पर काफी धमाका हो रहा है ।

कहकर सुशील चला गया । शिवानी थोडी देर तक दरवाजे क दोनो पल्ले पकड चुपचाप खडी रही । बाद मे रानी के घर की ओर नजर पडते ही किवाड बन्द कर फिर स अदर चली आयी ।

स्कूल म तब सचमुच ही गडबड शुरू हो गयी थी । सुबह से ही गार्जियनो की भीड जमा थी । वे लोग टिप्पस भिडाने आए थे । हेडमास्टर क पास जाकर सब एक ही बात कह रहे थ क्या हुआ मास्टर साहब मेरा लडका फेल कैसे हो गया ? मेरे लडके का रिजल्ट तो हमेशा अच्छा

रहा है ?'

भवरजन कहता देखिए आप लोग अगर कापी देखना चाहते हो तो कापियाँ देख लें, जिस लड़के ने अच्छा लिखा है हम उसे तो फेल नहीं कर पाए।

स्कूल की चहारदीवारी म यह एक अस्वाभाविक घटना थी। शशधर-बाबू टीचस कामन रूम के अन्दर चीख रहे थे इस अराजकता का हम सामना करना ही पड़ेगा। मालिका को अगर हम लोगों पर विश्वास नहीं है तो हम अपनी सारी ताकत से उसका विरोध करेंगे। अपना सकल्प पूरा करने के लिए हम एक होना पड़ेगा। आइए, हम सब मिल कर इसका मुकाबला करें,

हाथ पाव फेंकते शशधरबाबू गुस्से स पागल हुए जा रहे थे।

बलाईबाबू ने कहा पडितजी हम लोगों को जब्द करना चाहते हैं हम देखते हैं वे हमे कसे जब्द करते हैं—हम भी देख लेंगे,

करीब करीब हर एक टीचर उत्तेजित था। और दिन घटा बजते ही सब अपनी-अपनी क्लास म जाने के लिए तयार होने लगते। लेकिन उस रोज जसे इस बार किसी का ख्याल ही नहीं था। सब अपनी अपनी कहने म लग थे। सबके गले का स्वर पचम पर चढा था।

कालीधन बाबू ने कहा मालूम है, सेक्रेटरी तक के लड़के को पडितजी ने दो नम्बर के लिए फेल कर दिया,

आवाजें भवरजन तक भी पहुँची। उसने बयर से पूछा यह शोर-गुल की आवाज कहा से आ रही है रे ?'

बयरे ने बतलाया, 'मास्टरसाहब लोगों के कामन रूम से,

क्या ? मास्टर लोग किसलिए शोर कर रहे हैं ?'

क्लास का घटा बजने पर भी किसी टीचर का पता नहीं था लड़का ने भी चिल्लाना शुरू कर दिया था। कोई सीटी बजा रहा था कोई बाहर निकल आया था। कोई बेंचों के ऊपर चढा नाच रहा था जो अभिभावक आए थे वे भी हैरान थे।

वे लोग काफी देर से हरिलाल के कमरे के आग खड़े थे। कह रहे थ, हरिलालबाबू फीस लीजिए '

हरिलाल कहता पहले अपने लड़के की मार्कशीट ले आइए, तब तो फीस लूगा। बिना मार्कशीट दिखलाए फीस लेने का आडर नहीं है

'मार्कशीट कहाँ मिलेगी ?

जाकर हेडमास्टर साहब से पूछिए। मुझे कुछ नहीं मालूम।

जनार्दन ने जाकर पंडितजी को बुलाया। कहा, पण्डितजी, आपको हेडमास्टर बुला रहे हैं।

गौर पंडितजी को जस तब जाकर ख्याल आया। हर ओर से शोर की आवाज कानो मे आ रही थी। उन्होने पूछा 'यह हल्ला कैसा हो रहा है जनार्दन ?'

जनार्दन ने कहा 'मास्टरसाहब लोग बिगडकर हल्ला कर रहे हैं।'

'क्यो ?

कोई क्लास मे नहीं जा रहे। कहते है हडताल करेंगे।

क्यो ? आखिर हुआ क्या है ?

जनार्दन ने कहा 'अबकी बहुत लडके फेल जो हुए हैं। कोचिंग स्कूल की बदनामी हो गई है '

यह बात है !

गौर पंडितजी इसके बाद और नहीं रुक पाए। सबरजन के कमरे की ओर जाने के रास्ते म कामन रूम के पास से गुजरते वक्त अन्दर घुस गए।

शान्त !'

गौर पंडितजी दहाड उठे।

साथ ही साथ जस बिजली गिरी, शान्त नहीं होंगे। आप पहले हमारी बात का जवाब दीजिए। हम लोगो पर आपको विश्वास है या नहीं पहले इस बात का जवाब दीजिए।'

शोरगुल की वजह से किसी की भी बात साफ साफ सुनाई नहीं देती

थी । सब लोग एक साथ गला फाड़कर अपनी बात कहना चाह रहे थे ।

सबने एक साथ आकर पंडितजी को घेर लिया ।

शिवेंदु एक कोने में बैठा अभी तक कोई किताब पढ़ रहा था । इस वक्त उसकी क्लास नहीं थी । उसने आगे बढ़कर कहा, करते क्या हैं शशधरबाबू ?'

शशधरबाबू उठकर खड़े हो गए । उन्होंने कहा 'आप रुकिए साहब आपसे उस्तादी करने को किसने कहा है ?

शिवेंदु ने कहा, 'जो कहना है भले आदमी की तरह कहिए, इतना चीख क्यों रहे हैं ।'

'खूब चीखेंगे । आपकी चीखने की इच्छा न हो तो जाकर चुपचाप बैठकर किताब पढ़िए ।

कालीधन बाबू भी शिवेंदु की ओर बढ़ आए ।

उन्होंने कहा आप किसलिए इतनी भलमनसाहत दिखला रहे हैं ? आप अभी तक चुपचाप बैठे थे चुपचाप बैठे रहिए न '

शिवेन्दु फिर भी कहता रहा 'देखिए आप लोग किससे क्या कह रहे हैं, आप लोग समझ नहीं रहे हैं पंडितजी हमारे लिए पिता-तुल्य हैं '

चुप भी रहिए साहब, इतनी भक्ति ठीक नहीं है '

तभी एक और ने जोड़ दिया, 'अति भक्ति चोर का लक्षण होता है भाई '

तब तक भवरंजन आ गया था ।

'क्या हो रहा है यहाँ पर ? आप सब शांत हो जाइए शांत हो जाइए सब '

'शांत क्यों हो जायें ? अन्याय के सामने चुप रहना कायरता है । हम अन्याय का सामना करेंगे ।'

गौर पंडितजी ने कहा, मैंने अन्याय किया है ? आप लोग मुझ से कह रहे हैं ? मैंने जीवन में कभी भी अन्याय नहीं किया है, अन्याय सहन

भी नही किया। अन्याय को कभी मैंने बर्दाश्त नही किया। मेरे अपने नाती ने अन्याय किया था मैंने उसे भी क्षमा नही किया। अन्याय की बात आप किस मुंह से कहते है ? इस स्कूल की नीव किसने डाली है ?''

'यह स्कूल हमारा है। आप कौन हैं।

भवरजन ने पंडितजी से कहा आइए पण्डितजी आप यहाँ न ठहरिए ये लोग इस वक्त आपका अपमान करने पर तुले हैं। चले आइए, आप मेरे कमरे में चले आइए

क्या चला आऊं ? अन्याय के आगे झुक जाऊं ?

शिवेन्दु इसके बाद और पण्डितजी के सामने आकर हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। उसने कहा आप यहाँ से चले जाइए पंडितजी ये लोग आपका सम्मान नही रखेंगे और आपका अपमान सारे शिक्षा जगत का अपमान होगा—आप इस वक्त यहा पर न रुके आइए '

अचानक निमाई साह आ पहुँचा।

निमाई साह को देखकर सब हो हो करने लगे।

इतना शोर किस बात का हो रहा है ? यह स्कूल है या बाजार ? आप लोग क्या स्कूल को बाजार बना देना चाहते हैं ? रुकिए चुप हो जाइए

लेकिन कहाँ की शाति ! शशधरबाबू ने गले की आवाज को और भी चढ़ा दिया—

रुकें क्या ? चुप क्या हो जायें ? स्कूल को क्या अपनी खानदानी जमीदारी समझ रखा है आपने ?

इसके बाद भवरजन और शिवेन्दु दोनो ठेलते हुए पण्डितजी को बाहर ले गए। भवरजन ने कहा इस वक्त उत्तेजना की वजह से इन लोगो का दिमाग ठिकाने नही है। ये लोग गुस्से से पागल हो रहे हैं। गुस्सा बिल्कुल चण्डाल होता है। आप मेरे कमरे मे चलिए

लेकिन मेरी क्लास जो है भव '

भवरजन ने कहा 'क्लास मे आज कोई लड़का नही है वह देखिए

ये लोग सबके सब क्लास छोड़कर बाहर खड़े तमाशा देख रहे हैं, चिल्ला रहे हैं'

गौर पण्डितजी की जैसे समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर यह हो क्या गया! इतनी उम्मीदों से गढ़ा उनका स्कूल, उनकी अपनी हाथों गढ़ी संस्था! अपनी नजरों के आगे जैसे वे खुद अपना सर्वनाश देखने लगे। यह तो उन्होंने नहीं सोचा था, इस बात की तो उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी।

भवरंजन ने तब उन्हें अपने कमरे में लाकर दरवाजा बंद कर लिया था जिससे कोई भी वहां घुसने न पाए।

गौर पण्डितजी अभी तक कुर्सी पर बैठे हांफ रहे थे। खाली नजरों से चारों ओर सब कुछ देखने की कोशिश कर रहे थे। लेकिन वे जैसे और कुछ भी देख नहीं पा रहे थे। उनके कान में जैसे और कोई भी आवाज नहीं आ रही थी।

सब कुछ जैसे उनके लिए शान्त, स्थिर और निर्जीव हो गया था।

अचानक भवरंजन ने कहा, 'आपने सिर्फ दो मास्टर के लिए सेक्रेटरी के लड़के को फेल कर दिया!'

गौर पण्डितजी आंखें फाड़े भवरंजन की ओर देखते रहे।

'साहजी ने सबको ग्रेस देने के लिए कहा है। आप अगर राजी हों तो ये लोग ठंडे हो सकते हैं। प्रेसीडेंट ने आज ही सुबह आकर मुझसे कहा है। मैंने कह दिया—पण्डितजी से पूछूंगा। इसीलिए आपको बुलवाया था।

तब भी गौर पण्डितजी की जबान पर कोई जवाब नहीं था।

इसके अलावा स्कूल की इनकम की ओर भी तो हम लोगों को देखना पड़ेगा। सुना है इसी गांव में एक और स्कूल खुल रहा है—सारे लड़के अगर ट्रांसफर लेकर चले जायें! उस ओर भी सोचना जरूरी है।'

जरा देर रुककर भवरजन फिर कहने लगा, 'कोचिंग स्कूलो को रोकना मुश्किल है मैंने काफी सोचकर देखा है मास्टरो को नाराज करके कोई भी काम नही किया जा सकता। आपका जमाना और था अब जमाना भी तो बदल गया है। अब चीज वस्तुओ की कीमतें भी तो पहले जसी नही रही हैं।'

गौर पडितजी की आखो के सामने जसे लाल और नीले तरह-तरह क रगबिरग गुब्बारे तरने लगे। लग रहा था जसे सब कुछ तरह-तरह के रगो से रगीन हो उठा है। चारा ओर

यह देखिए न सुशील चक्रवर्ती हर बार फस्ट होता है। इस बार ही कसे उसका रिजल्ट खराब हो गया ? किसी को क्वेश्चन का पता नही लग पाया इसीलिए। इसके ऊपर आपने सस्कृत की कापिया काफी स्ट्रिक्ट होकर जाची हैं। सिफ दो नम्बर बढा देने से ऐसा कौन सा नुकसान हो जाएगा ? स्कूल की परीक्षा ही क्या सब कुछ होती है ? इसके बाद जिन्दगी भर ही तो परीक्षा देते रहना पडेगा। तब तो आप रहेंगे नही। सभी तो आप जस नही हैं।

अचानक गौर पडितजी को लगा जसे वे कुर्सी पर बठे-बठे ही चाका खा जायेंगे।

वे चीख उठे भव एक गिलास पानी मगा सकते हो—'

कहा से क्या सब हो गया। इस एक ही रोज म बलरामपुर का इतिहास जस पूरी तरह बदल गया गौर पडितजी को देखने के लिए कौन-कौन आया था उन्हें इसका भी ख्याल नही है। पहला दिन तो उनका बेहोशी म ही कट गया। बीररज से देखने के लिए डाक्टर आया।

उसने कहा, 'इन्हें आराम की जरूरत है। इससे कुछ रोज आराम करने के लिए कहिएगा।'

शिवानी घूंघट निकाले रोगी के पास बैठी थी। चुपचाप सब सुनती रही। चुपचाप सुनने के अलावा चारा भी और क्या था। जीवन में उन्होंने किसी की भी बात सुनी नहीं, वे क्या आज अपनी पत्नी की बात सुनेंगे! अगर ऐसा ही होता तो शायद शिवानी के जीवन का इतिहास कुछ और ही होता।

जिन लोगों को पता लगा उनमें से बहुत से घर आकर खबर पूछ गए। नरेन लड़की की शादी का निमंत्रण करने आया था। उसने कहा 'काकीमां जरूर आइएगा।'

शिवानी ने कहा, जाने को तो जी कितना करता है लेकिन बेटा तुम ही कहो, इन्हें इस हालत में छोड़कर कैसे आऊं

'लेकिन यह तो आप जानती ही हैं कि आप नहीं जाएंगी तो रास्ता दिल छोटा करेंगे

उसके बाद जाते-जाते कहा, 'अगर किसी तरह की जरूरत पड़े तो मुझे खबर दीजिएगा। कहीं लज्जा न करने लगिएगा। मैं वक्त मिलते ही बीच-बीच में आकर देख जाऊंगा। डाक्टर बाबू ने जो जो कहा है वैसे ही करती रहिए'

सचमुच उन दिनों नरेन चक्रवर्ती के पास वक्त की बड़ी कमी थी। खानदानी आदमी थे। सम्बन्धी भी खानदानी रईस थे। लेन-देन भी उसी तरह करना था। हर चीज कलकत्ता से खरीदकर आती थी। नरेन चक्रवर्ती की इकलौती लड़की है। काफी लोगों को बुलाना पड़ा है। एक तो गांव के डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन, उस पर कोर्ट में एडवोकेट। इसके अलावा इतने बड़े स्कूल के सेक्रेटरी। करीब हजार लोगों के लिए इन्तजाम करना पड़ा है। शादी वाले रोज पूरा मोहल्ला रोशनी से जगमगाने लगा था। गौर पण्डितजी का घर भी उस रोशनी से रोशन हो रहा था। और सुबह से ही नौबत बजनी शुरू हुई थी।

काफी रात गए एक बार गौर पंडितजी की नींद टूट गई।

शिवानी जागी ही थी। उसने पूछा, 'कुछ खाओगे ? पानी पिओगे ? प्यास लगी है ?'

गौर पंडितजी ने टूटी हुई धीमी आवाज में पूछा 'यह नौबत कैसी बज रही है ?'

शिवानी ने कहा 'वह कुछ भी नहीं है तुम सो रहो चुपचाप।'

गौर पंडितजी ने फिर पूछा 'लगता है रानी का विवाह हो रहा है।'

शिवानी के गले में जैसे बात अटक गई। फिर भी काफी मुश्किल से उसने सिर्फ इतना कहा 'हाँ।'

गौर पण्डितजी ने और कुछ भी नहीं कहा। आँखें बन्द किए सिर्फ करवट बदलकर सो रहे। ब्याह वाले घर में तब भी धीमी लय में आसमान और हवा में लहराती नौबत दूर दिगंत छूती बज रही थी। दरबारी कान्हड़ा के स्वर जैसे आज बड़े तीखे होकर तीर की नोक की तरह आकर सीने में बिंध रहे थे। वह जैसे महाभारत के वनपर्व में युधिष्ठिर की तरह कह रही थी

नाहम् कर्मफलान्वेषी राजपुत्री चराम्युत।

ददामि देयमित्येव यजे यष्टव्यमित्युत—

कह रही थी 'हे राजपुत्री, मैं कर्मफलान्वेषी होकर कोई कर्म नहीं करता दान करना चाहिए इसलिए दान करता हूँ, यज्ञ करना चाहिए इसीलिए यज्ञ करता हूँ, धर्माचरण के विनिमय में जो फल की आकांक्षा करता है वह धर्म वणिक है धर्म उसके लिए पण्यवस्तु है। वह हीन है निन्दा का पात्र है'

गौर पंडितजी जैसे नींद में मन ही मन श्लोक का जाप करने लगे। और उनके पास बैठ शिवानी एकटक दृष्टि से ताकती सारी रात जागती रही।

अगले दिन अचानक पाचू की मा आयी । उसने कहा, काकीमाँ, आपकी माँ ने जरा देर के लिए बुलाया है । लड़की जा रही है आप अगर एक मिनट के लिए आकर आशीर्वाद कर जाती '

शिवानी ने कहा, इन्हें इस हालत म छोड़कर कसे आऊँ '

'शभू की माँ को थोडी देर के लिए बठाकर अगर हो आती । रानी बीबीजी सुबह से बहुत रो रही हैं । आप कल भी नही गयी । थोडी देर के लिए जाकर चली आइएगा ।

आखिर म वही हुआ । शभू की माँ को बैठाकर शिवानी बाहर निकली । वह कितने रोज से बाहर नही निकली थी । इतनी पास मकान है फिर भी एक रोज के लिए जाना नही हो पाया ।

अरे काकीमा आयी हैं !'

वासनी खीचते खीचते काकीमाँ को सीधे रानी के पास ले गयी । वहाँ बहुत सी औरतो की भीड़ थी । तिल रखने को जगह नही थी लेकिन शिवानी की किसी ओर नजर नही गयी ।

रानी ने सर उठाकर नानीअम्मा की ओर ताका । बडी-बडी दो आँखों की उस दृष्टि म विस्मय, मान आवेग-आनन्द हर्ष विषाद सब कुछ एकाकार होकर जसे धुंधला हो गया था । उसके पास ही बठा था दूल्हा । उसने भी नजर उठाकर देखा ।

शिवानी ने आँचल की गाँठ खोलकर दो रुपये निकालकर माथे स हाथ लगाकर दोनो को आशीर्वाद दिया । उसके बाद जिस ओर स आयी थी ठीक उसी ओर स बाहर चली आयी ।

आते वक्त सिर्फ जसे कानो म किसी की आवाज सुनायी दी, 'पडितजी अब कसे हैं चाची ?'

किसने यह बात पूछी, कैसी उसकी शक्ल थी यह भी शिवानी ने नही देखा । सिर्फ इतना ही कहा अच्छे हैं '

कहकर झटपट किसी तरह रास्ता पार कर अपने घर म जसे स्वस्ति की लम्बी निश्वास लेकर छुटकारा मिला । '

उनके बाद सब रानी मधुमयी न भी पड़ी । सब बेकार किया हो गयी—शिवानी को किस बात का असर नहीं है । मधु की माँ को फिर बराबर करने का मौका नहीं मिला । वह भी किसी तरह साथ न दिन भर का काम करके आ । पर चली गयीं ।

गौर पंडितजी अब जरा ठीक हो गए थे । बिस्तर से उठकर कुछ शाम बरांडे में आकर बैठा करते थे ।

'कहो, एक बार जरा स्कूल हो आऊँ बड़ी बहू ?'

शिवानी कहती, 'यह शरीर लेकर तुम स्कूल जाओगे ?'

गौर पण्डितजी कहते, 'नहीं जाऊँ जरा देख आऊँ जाकर ।'

बहू अन्दर से पंडित जान की हिम्मत रहा करती थी । कहती 'इतनी कमजोरी क्या लग रही है तुम्हें ?

कमजोरी नहीं लगेगी ? इतनी मेहनत इस उमर में तुम सह सकते हो ?'

गौर पंडितजी मन ही मन हँसते । बड़ी बहू ने सिर्फ शरीर ही देखा है मन नहीं देखा । देखती तो शायद पता लगता उस दिन वहाँ अब कुछ और नहीं बचा है । उन्होंने जो भी चाहा था वह सभी नष्ट हो गया । जिन जिन को फेल किया था, उन सबको नम्बर बढ़ाकर फिर से पास कर दिया गया है । उनके कान में सभी बातें आयी हैं । तालाब से फिर मछली पकड़ी गयी है । उसका सारा पैसा भी प्रसीडेण्ट की जेब में चला गया है । साइंस के जो ऐपरेटस आने थे उनमें से एक भी खरीदा नहीं गया है । शशधरबाबू की कोचिंग क्लास फिर पूरे जोर पर चल रही है । तब किसलिए उन्होंने इस स्कूल के लिए इतनी मेहनत की, इतनी चिंता की ।

उस रोज अचानक भवरजन के हाथ मे चिट्ठी आयी। पहले तो वह समझ ही नही पाया। पडितजी आखिर उसे ही क्यो लिखने लगे। लेकिन चिट्ठी खोलने के बाद उसे बडी तकलीफ हुई। शाम को कमिटी की मीटिंग थी। उसी मीटिंग म उसने चिट्ठी पढकर सबको सुनायी।

पूरी कमिटी थोडी देर के लिए स्तब्ध हो गयी पडितजी के त्याग पत्र की बात सुनकर।

निमाई साह न ही पहले बात उठाई। उसन कहा पडितजी जब अस्वस्थ हैं तो हम लोगो क पास कहने को कुछ भी नही है। मरे विचार म तो अब उन्हे पद भार से मुक्त करना ही उचित होगा '

नरेन चक्रवर्ती चुप बठा था। कमिटी क मेम्बरा की ओर देखकर निमाई साह न कहा 'क्या सुगातबाबू, आप कुछ नही कह रहे ?

सुगातबाबू हमेशा चुप ही रहते थे। उन्होने कहा 'आप लोग जब एकमत हैं तो मेरा मत भी वही है उन्हें पद भार स मुक्त करना ही उचित है।

नरेन चक्रवर्ती विरोध करना चाह रहा था। लेकिन सभी के चेहरे की ओर देखकर उसकी कुछ बोलने की हिम्मत नहीं हुई।

पडितजी बहुत दिनो बाद स्कूल के अपने कमरे म आकर बठे थे। आखिरी बार के लिए अपना काम-काज कागज-पत्र देख रहे थे। यह स्कूल उनके सारे जीवन का कार्यक्षेत्र रहा है। इसी कमरे म बैठकर व इतने दिनो से काम-काज चलाते आए हैं। कल से इस कमरे मे काई और आकर बठेगा। और काई यहा बठकर और ही किसी आदर्श को लेकर स्कूल चलाएगा। चलाए। उससे यदि सचमुच स्कूल चलता रहे तो चल। उनका समय हो गया है, इसीलिए व जा रहे हैं। वसे भी चल ता एक रोज जाना ही था। हमेशा ता वे इस स्कूल को चला नही सकते।

जनार्दन कई बार आया, वह कुछ कहना चाहता था। गौर पडित जी ने उससे चले जाने को कह दिया। वह बेचारा रोता हुआ चला गया

कमरे से निकल कर उन्होंने दरवाजों में ताला लगाया। अचानक सामने शिवेन्दु आ खड़ा हुआ।

शिवेन्दु के मुंह से आवाज नहीं निकल रही थी।

गौर पंडितजी ने कहा चलता हूँ शिवेन्दु।

शिवेन्दु ने पाँव छूकर प्रणाम किया। गौर पंडितजी ने उसके सर पर हाथ रखकर आशीर्वाद दिया। फिर बोले चलता हूँ शिवेन्दु।'

शिवेन्दु ने कहा आपने रेजिगनेशन लेटर क्यों दे दिया पंडितजी!'

गौर पण्डितजी ने कहा नहीं शिवेन्दु मैंने सोचकर देखा मेरे लिए इस स्कूल को अब और जकड़े बैठ रहना ठीक नहीं होगा। मेरे आदर्श के साथ तुम लोगों के आदर्शों का मेल नहीं बैठता। हो सकता है गलती मेरी ही हो तुम लोगों का रास्ता ही ठीक हो। मैं तुम लोगों का अपने रास्ते से विमुख नहीं करना चाहता। तुम्हारा विधान ही हो सकता है ठीक हो हमारी आध्यात्मिकता का आदर्श शायद इस युग में अचल हो गया है—मैं भी इसीलिए यहाँ अचल हो गया हूँ—मैं चलता हूँ—तुम सिर्फ यह चाबी कल जनार्दन को दे देना।

शिवेन्दु गौर पंडितजी के साथ चलने लगा। घर के पास आते ही अचानक गौर पण्डितजी ने कहा, तुम बेकार में मेरे साथ क्यों आ रहे हो शिवेन्दु तुम अब जाओ—

शिवेन्दु और एक बार पंडितजी के पाँव छूकर प्रणाम करने के बाद सर नीचा किए चला गया। गौर पंडितजी अपने घर में घुस रहे थे। लेकिन अचानक उस अन्दर से रानी की आवाज सुनाई दी।

वे फिर और अंदर नहीं घुसे। इमली के पेड़ के नीचे आकर खड़े हो गए।

शिवानी शायद रानी को देखकर हैरान हो गयी थी।

उसने कहा अरे तू? ससुराल से कब आई?'

रानी ने कहा, बस चली ही आ रही हूँ नानीअम्माँ, इसी वक्त वापस जाना है। सुना है नाना ने स्कूल छोड़ दिया है?

क्या है ?

पडोस के मकान के सामने जाकर आवाज दी, अविनाश बाबू अविनाश बाबू !'

अविनाश बाबू हमेशा के अपने आदमी हैं। बिस्तरे पर पडे रहते हैं। उनका बडा लडका बाहर आया।

नरेन ने पूछा, पडितजी के मकान पर ताला क्यो झूल रहा है ? कहाँ गए हैं पडितजी ?'

अविनाश बाबू के लडके ने कहा पडितजी तो चले गए हैं '

कहाँ चले गए हैं ?'

आज सुबह पाँच बजे की ट्रेन से अपने गाँव चले गए। हमारा मकान खाली कर दिया है '

ट्रेन उस वक्त तक शिमूराली स्टेशन पार कर चुकी थी। सुबह पाच बजे की टेन म बठे है पडितजी। बाद मे सियाल्दह आकर ट्रेन बदली। उसके बाद एक एक कर स्टेशन निकलता जा रहा है। लेकिन उन्हें उस किसी बात का ख्याल ही नहीं था। ट्रेन म एक खिडकी के पास बठे वे आसमान की ओर ताक रहे थे। पास ही शिवानी बठी है। आज फिर वे वापस अपने गाँव जा रहे है। उसी मुबारकपुर। कीर्ति का यालुकार की जन्मभूमि मुबारकपुर। एक रोज वही उम्मीद लेकर वे वल्लरामपुर आए थे—सोचा था यहा आकर लडको को शास्त्रो का ज्ञान करायेंगे उन्हें आदमी बनायेंगे। लेकिन नहीं शायद यह सोचना ही उनकी भूल थी। महाभारत के वन पर्व म युधिष्ठिर को वही बात याद हो आई—नाहम कर्मफलान्वेषी राजपुत्री चराम्युत—राजपुत्री मैं कर्मफलान्वेषी होकर कोई कर्म नहीं करता, दान करना चाहिए इसीलिय

दान करता हूँ, यज्ञ करना चाहिए इसीलिए यज्ञ करता हूँ, धर्माचरण से विनिमय में जो फल चाहता है वह धर्मवणिक है धर्म उसके लिए पण्य वस्तु है।

उस रोज शिवेन्दु से जो बात कहकर आए थे, वह भी याद आ रही थी—आज मेरे और तुम्हारे आदर्शों में संघर्ष छिड़ गया है शिवेन्दु! हो सकता है कि तुम्हारे ही आदर्श ठीक हों मेरे आदर्श गलत हों। तुम्हारा विज्ञान ही हो सकता है मनुष्य को ठीक पथ पर ले जा रहा हो मेरी आध्यात्मिकता का आदर्श हो सकता है इस युग के लिए अचल हो। और इसके अलावा मेरे ही आदर्श के अनुसार स्कूल को चलना होगा ऐसी भी तो कोई बात नहीं है। बस आगे बढ़ते रहने से ही मुझे प्रसन्नता होगी। इसीलिए आज मैं तुम्हारे पथ में सारी बाधाओं को दूर कर चला आया हूँ—आज मेरे हृदय में और कोई भी दुःख नहीं है, आज कामना वासना रहित हो गया हूँ। मुझे किसी के प्रति किसी भी प्रकार का क्षोभ नहीं है। प्रह्लाद ने नरसिंह भगवान से यही कहा था। कहा था, 'यदि दास्यसि मे—' जो मनुष्य आपके आगे सांसारिक लाभ की कामना करता है वह वणिक है। मैं आपका निष्काम भक्त हूँ। हे वरदाताओं में श्रेष्ठ अगर आप मेरा इच्छित वर देना चाहते हैं तो यही वर दें कि मेरे हृदय में कभी किसी भी प्रकार की कामना का उद्वेग न हो—

मुरारकपुर की गाड़ी तब धड़धड़ाती आगे बढ़ रही थी।